BAHN301CCT

आधुनिक हिंदी कविता

बी. ए. तृतीय सेमेस्टर

स्वयं अध्ययन सामग्री

दूरस्थ शिक्षा निदेशलाय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू युनिवर्सिटी, हैदराबाद

इकाई 1 : आधुनिक हिंदी गद्य का विकास

रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 मूल पाठ : आधुनिक हिंदी गद्य का विकास
1.3.1 गद्य की पृष्ठभूमि
1.3.1.1 ब्रजभाषा गद्य
1.3.1.2 खड़ी बोली गद्य
1.3.2 आधुनिक हिंदी गद्य का उद्भव और विकास
1.3.3 भारतेंदु युग के प्रमुख गद्य-लेखक
1.3.4 द्विवेदी युग के प्रमुख गद्य-लेखक
1.3.5 छायावाद युग के प्रमुख गद्य-लेखक
1.3.6 छायावादोत्तर युग के प्रमुख गद्य-लेखक
1.3.7 स्वातंत्र्योत्तर युग के प्रमुख गद्य-लेखक
1.4 पाठ सार
1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
1.6 शब्द संपदा
1.7 परीक्षार्थ प्रश्न
1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

आधुनिक काल को गद्य काल भी कहा जाता है। वस्तुतः रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को गद्य काल कहा क्योंकि इस काल में गद्य का विकास हुआ। आधुनिक काल में अर्थात उन्नीसवीं शताब्दी में पद्य के स्थान पर गद्य को बढ़ावा मिला। उस समय के रचनाकारों ने समाज सुधार एवं जन जागरण के लिए गद्य का सहारा लिया। आधुनिक काल से पूर्व भी कुछ गद्य रचनाएँ प्राप्त हुई हैं लेकिन उनका विशेष महत्व नहीं है। गद्य का वास्तविक विकास आधुनिक काल से ही माना जाता है। छात्रो! इस इकाई में आधुनिक हिंदी गद्य के विकास की स्थिति पर चर्चा करेंगे।

1.2 उद्देश्य

छात्रो! आप इस पाठ्यक्रम के प्रथम इकाई में आधुनिक हिंदी गद्य के विकास के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- आधुनिक हिंदी गद्य के उद्भव और विकास के बारे में जान सकेंगे।
- हिंदी गद्य की पृष्ठभूमि से परिचित हो सकेंगे।
- ब्रज भाषा तथा खड़ी बोली गद्य के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

- गद्य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका पर प्रकाश डाल सेकेंगे।
- विभिन्न युगों के प्रमुख गद्यकारों के योगदान को रेखांकित कर सकेंगे।

1.3 मूल पाठ : आधुनिक हिंदी गद्य का विकास

छात्रो! वस्तुतः लोक से प्राप्त अनुभव और स्वभाव ही साहित्य का कच्चा माल है। इसे साहित्यकार अपनी कल्पना के माध्यम से एक नए रूप में प्रस्तुत करता है। लेकिन हर अभिव्यक्ति को साहित्य नहीं कहा जा सकता। आधुनिक काल से पहले काव्य का प्रचलन था। आधुनिक काल के आगमन के साथ ही गद्य का विकास होने लगा। आइए, गद्य के इस विकास पर चर्चा करेंगे।

1.3.1 गद्य की पृष्ठभूमि

उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व हिंदी साहित्य में गद्य की रचनाएँ अधिक नहीं थीं। उस समय साहित्य की भाषा ब्रज थी। भावों की अभिव्यक्ति काव्य-भाषा में होती थी लेकिन बोलचाल की भाषा तो गद्य ही थी। हिंदी गद्य के विकास की दृष्टि से ब्रज भाषा एवं खड़ी बोली गद्य में रचित रचनाओं के बारे में भी चर्चा करेंगे।

1.3.1.1 ब्रज भाषा गद्य

आधुनिक काल से पूर्व साहित्य की भाषा ब्रज भाषा ही रही। अतः आधुनिक काल से पूर्व जो गद्य रचनाएँ प्राप्त होती हैं उनकी भाषा ब्रज भाषा ही है। ब्रज भाषा में जब काव्य सृजन हो रहा था उसी समय जन साधारण में ब्रज भाषा का गद्य रूप विकसित होने लगा। साहित्यिक भाषा और बोलचाल की भाषा में अंतर होता है। संत, महात्मा, कवि आदि अपने-अपने मत या संप्रदाय के संदेश को जनता तक पहुँचाने के लिए ब्रज की बोलचाल की भाषा को अपानाने लगे। 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह स्पष्ट किया है कि हिंदी पुस्तकों की खोज में हठयोग और ब्रह्मज्ञान से संबंध रखने वाले कई गोरखपंथी ग्रंथ प्राप्त हुए हैं जिनका रचना काल 1300 ई. के आसपास है। अतः इसमें संदेह नहीं कि हिंदी गद्य का प्रारंभिक रूप गोरखपंथी साधुओं की रचनाओं में मिलता है। यह राजस्थानी और ब्रज भाषा का मिश्रित भाषा रूप है।

ध्यान देने की बात है कि भक्तिकाल में कृष्णभक्ति शाखा के भीतर गद्य ग्रंथ मिलते हैं। गोसाईं विट्ठलनाथ ने 'शृंगार रस मंडन' नामक ग्रंथ में ब्रज भाषा गद्य का प्रयोग किया है। इसके गद्य रूप को रामचंद्र शुक्ल अपरिमार्जित और अव्यवस्थित मानते हैं। उदाहरण के लिए भाषा का स्वरूप देखें -

> "प्रथम की सखी कहतु है। जो गोपीजन के चरण विषै सेवक की दासी करि जो इनको प्रेमामृत में डूबि कै इनके मंद हास्य ने जीते हैं। अमरूत समूह ता करि निकुंज विषै शृंगाररस श्रेष्ठ रसना कीनौ सो पूर्ण होत भई।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, पृ.277)

इसके बाद दो और ग्रंथ लिखे गए - 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवों' की वार्ता। इनका रचनाकाल विक्रम की 17वीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है। इनमें वैष्णव भक्तों और आचार्यों की महिमा प्रकट करने वाली कथाएँ अंकित हैं। इन कथाओं की भाषा बोलचाल की ब्रज भाषा है। एक उदाहरण देखें -

> "सो श्री नंदगाम में राहतो हतो। सो खंडन ब्राह्मण शास्त्र पढ्यो हतो। सो जीतने पृथ्वी पर मत हैं सबको खंडन करतो; ऐसो वाको नेम हतो।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, पृ.277)

संवत 1660 के आस-पास नाभादास ने ब्रज भाषा में 'अष्टयाम' नामक पुस्तक की रचना की थी। इसमें भगवान राम की दिनचर्या का वर्णन है। संवत 1680 के आस-पास वैकुंठमणि शुक्ल ने ब्रज भाषा गद्य में 'अगहन माहात्म्य' और 'वैशाख माहात्म्य' नामक दो छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ लिखीं। संवत 1767 में संस्कृत से कथा लेकर सुरति मिश्र ने 'बैताल पच्चीसी' लिखी।

उस युग में ब्रजभाषा में गद्य की रचनाएँ कम लिखी जाती थीं। इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि ब्रजभाषा में गद्य की क्षमता का विकास न हो पाना। ब्रजभाषा का क्षेत्र भी सीमित था। वह ब्रज क्षेत्र के बाहर संपर्क भाषा के रूप में स्थापित नहीं हो पाई। अतः गद्य का विकास उस तरह से नहीं हो पाया जिस तरह से होना चाहिए था। इसलिए खड़ी बोली ही गद्य की भाषा के रूप में विकसित हुई।

बोध प्रश्न

- हिंदी गद्य का प्रारंभिक रूप किनकी रचनाओं में मिलता है?
- वैष्णव भक्तों और आचार्यों की महिमा प्रकट करने वाली कथाएँ किन ग्रंथों में अंकित हैं?
- 'शृंगार रस मंडन' की भाषा के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का क्या कथन है?
- 'बैताल पच्चीसी' के रचनाकार कौन हैं?

1.3.1.2 खड़ी बोली गद्य

ब्रज भाषा गद्य की परंपरा कई कारणों से आगे नहीं बढ़ पाई। ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली गद्य का विकास होने लगा। क्योंकि खड़ी बोली जन साधारण की बोलचाल की भाषा थी। धीरे-धीरे खड़ी बोली पद्य और गद्य की भाषा बनने लगी। ब्रज भाषा के बाद खड़ी बोली में साहित्य सृजन होने लगा। इसका क्षेत्र भी विस्तृत था। तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों ने भी खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

14 वीं शती में दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों में खड़ी बोली बोली जाने लगी थी। मुगल काल में संपर्क भाषा के रूप में खड़ी बोली का प्रयोग प्रारंभ हुआ। उनकी मातृभाषा फारसी थी। फारसी मिश्रित खड़ी बोली की एक नई शैली का जन्म हुआ जिसे हिंदुई, हिंदवी आदि नामों से जाना जाने लगा। अमीर खुसरो ने चौदहवी शताब्दी में खड़ीबोली में पहेलियाँ और मुकरियाँ लिखीं।

अमीर खुसरो के बाद खड़ी बोली का विकास दक्षिणी राज्यों के रचनाकारों ने किया। दक्खिनी हिंदी के रूप में अनेक ग्रंथों की रचनाएँ हुईं। 1635 ई. में मुल्ला वजही ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सबरस' की रचना की। अकबर के समय गंग कवि ने 'चंद छंद बरनन की महिमा' नामक एक पुस्तक खड़ी बोली में लिखी थी।

वस्तुतः खड़ी बोली हिंदी का गढ़ मेरठ है। हिंदी साहित्य के इतिहास में जो स्थान अठारह सौ सत्तावन की क्रांति का है वही स्थान इस जनपद की साहित्यिक चेतना का है। हापुड़ क्षेत्र के बाबूगढ़ छावनी के समीप स्थित गाँव रसूलपुर में संत गंगादास का जन्म 1823 ई. में बसंत पंचमी के दिन हुआ था। ये आधुनिक काल में 'खड़ीबोली के प्रथम कवि' हैं। इन्हें 'खड़ी बोली के पितामह' भी कहा जाता है।

अठारहवीं शताब्दी में रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योगवाशिष्ठ' नाम का गद्य ग्रंथ खड़ी बोली में लिखा था। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'भाषा योगवाशिष्ठ' परिमार्जित गद्य की प्रथम पुस्तक है और रामप्रसाद निरंजनी प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक।

बोध प्रश्न

- खड़ी बोली के पितामह कौन हैं?
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार परिमार्जित गद्य की प्रथम पुस्तक कौन सी है?
- मुगल काल में किस भाषा शैली का विकास हुआ?

1.3.2 आधुनिक हिंदी गद्य का उद्भव और विकास

आधुनिक हिंदी खड़ी बोली गद्य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज (1800) की भूमिका को नहीं भुलाया जा सकता। भारत में अंग्रेजों ने अपना राज्य स्थापित किया। उस समय उन्हें भारत की भाषा सीखने की आवश्यकता हुई। इस हेतु उन्हें उर्दू और हिंदी दोनों प्रकार की पुस्तकों की आवश्यकता हुई। इसलिए फोर्ट विलियम कॉलेज की ओर से जॉन गिल क्राइस्ट के निर्देश में उर्दू और हिंदी गद्य पुस्तकें लिखने की व्यवस्था की गई। लेकिन उसके पहले भी हिंदी खड़ी बोली में गद्य की कई पुस्तकें लिखी जा चुकी थीं। मुंशी सदासुखलाल की 'ज्ञानोपदेशावली' और इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' लिखी जा चुकी थीं।

छात्रो! भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के कारण कई परिवर्तन सामने आने लगे। उनका प्रभाव भारतीय जनजीवन पर पड़ने लगा। इनमें से कुछ परिवर्तनों का संबंध हिंदी गद्य के विकास के साथ है। इनमें कुछ कारण इस प्रकार हैं -

अ. धर्म : भारत धर्मनिरपेक्ष देश है। यहाँ सभी धर्मों के लोग समान रूप से मिलकर इस देश के विकास में योगदान देते हैं। भारत में ईसाई मिशनरियों की संख्या बढ़ने लगी और उनकी गतिविधियाँ बढ़ने लगीं। इन गतिविधियों ने हिंदी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन धर्म प्रचारकों ने प्रचार के लिए हिंदी गद्य में छोटी-छोटी पुस्तकें तैयार की।

बाइबल का हिंदी गद्यानुवाद किया गया। इसने भी हिंदी गद्य के विकास में महती भूमिका निभाई।

आ. पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन : अंग्रेज अपनी सुविधा हेतु मुद्रण, यातायाता और दूरसंचार के साधनों का प्रयोग करने लगे। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। परिणामस्वरूप हिंदी गद्य लेखन तेजी से विकसित होने लगा। 1826 ई. में पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने हिंदी के प्रथम साप्ताहिक पत्र 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन प्रारंभ किया। लेकिन 1827 ई. में यह बंद हो गया। 1829 ई. में 'बंगदूत' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। 1845 ई. में 'प्रजामित्र', 'बनारस अखबार' तथा 1846 ई. में 'मार्तंड' का प्रकाशन हुआ। इन पत्र-पत्रिकाओं ने हिंदी गद्य को खूब विकसित और परिमार्जित किया।

इ. शिक्षा का प्रसार : मैकाले ने भारत में 1835 ई. में शिक्षा प्रसार के लिए अंग्रेजी शिक्षा पद्धति की नींव रखी। इससे पूर्व भारत में फारसी और संस्कृत के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। 1823 ई. में आगरा कॉलेज की स्थापना हुई। इसमें हिंदी शिक्षण का विशेष प्रबंध हुआ। 1824 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज में हिंदी पढ़ाने का विशेष प्रबंध किया गया। 1825 ई. से लेकर 1862 ई. के बीच शिक्षा संबंधी अनेक पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित हुईं। उनमें से प्रमुख हैं पं. वंशीधर की पुष्पवाटिका, भारत वर्षीय इतिहास और जीविका परिपाटी।

ई. समाज सुधार आंदोलन : आधुनिक काल समाज सुधार का काल था। इसी काल में भारतीय समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों को दूर करने के लिए अनेक आंदोलन हुए। जनता तक अपनी बात को पहुँचाने के लिए समाज सुधारकों के लिए जनभाषा की आवश्यकता पड़ी। हिंदी गद्य के विकास में दयानंद सरस्वती (आर्य समाज), राजा राममोहन राय (ब्रह्म समाज), केशवचंद्र सेन (प्रार्थना समाज), विवेकानंद आदि समाज सुधारकों का योगदान उल्लेखनीय है।

बोध प्रश्न

- हिंदी गद्य के विकास के कुछ प्रमुख कारण बताइए।
- हिंदी गद्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की क्या भूमिका रही?
- हिंदी के प्रथम साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन कब प्रारंभ हुआ? उस पत्र का नाम बताइए।

छात्रो! आपने गद्य के विकास के कुछ प्रमुख कारण जान ही हुके हैं। आइए, अब हम प्रारंभिक गद्य लेखन की चर्चा करेंगे।

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद जॉन गिल क्राइस्ट ने हिंदी और उर्दू में पुस्तकें लिखवाने के लिए अनेक विद्वानों की नियुक्ति की। सदासुखलाल 'नियाज' फारसी के अच्छे कवि और लेखक थे। इन्होंने 'विष्णु पुराण' के उपदेशात्मक प्रसंग लेकर एक पुस्तक लिखी थी। इसके बाद उन्होंने श्रीमद्भगवत कथा के आधार पर 'सुख सागर' की रचना की। इसकी गद्य व्यवस्थित थी। इंशा अल्ला खाँ ने 'उदयभान चरित' या 'रानी केतकी की कहानी' लिखी। लल्लू लाल ने

‘प्रेम सागर’, ‘बैताल पच्चीसी’, ‘सिंहासन बत्तीसी’ आदि ग्रंथ लिखे। सदल मिश्र ने ‘नासिकेत्पाख्यान’ लिखी। इसमें संदेह नहीं कि भारतेंदु के पूर्व खड़ी बोली गद्य को आगे बढ़ाने में सदासुखलाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लू लाल और सदल मिश्र प्रमुख हैं।

इसी प्रकार आधुनिक हिंदी गद्य के विकास में भारतेंदु से पहले दो राजाओं, राजा शिवप्रसाद ‘सितारे हिंद’ और राजा लक्ष्मण सिंह का योगदान उल्लेखनीय है। राजा शिवप्रसाद ‘सितारे हिंद’ ‘आम फहम और खास पसंद’ भाषा के प्रबल पक्षधर थे। आम फहम से उनका अभिप्राय है जनता की भाषा और ‘खास पसंद’ का अर्थ है उस जमाने का अरबी-फारसी पढ़ा शिक्षित समाज। वे ऐसी हिंदी चाहते थे जिसमें अरबी-फारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग हो। इनकी कृतियों में राजा भोज का सपना, आलसियों का कोडा, वीरसिंह का वृत्तांत, अंग्रेजी अक्षरों को सीखने का उपाय, हिंदुस्तान के पुराने राजाओं का हाल आदि उल्लेखनीय हैं। राजा लक्ष्मण सिंह हिंदी और उर्दू को दो अलग-अलग भाषाएँ मानते थे। उन्होंने 1841 में आगरा से ‘प्रजा हितैषी’ नामक पत्र निकाला। उन्होंने सरल, सुबोध और सरस हिंदी का आदर्श उपस्थित किया।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु के पूर्व खड़ी बोली गद्य को आगे बढ़ाने वालों का नाम बताइए।
- किस रचनाकार ने सरल, सुबोध और सरस हिंदी का आदर्श उपस्थित किया?

1.3.3 भारतेंदु युग के प्रमुख गद्य-लेखक

19वीं सदी के उत्तरार्ध तक हिंदी गद्य का व्यापक प्रसार हुआ। साहित्य रचना के पर्याप्त अवसर भी प्राप्त हुए। इसी समय भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850 ई.-1885 ई.) ने साहित्य के क्षेत्र में कदम रखा। इन्होंने हिंदी गद्य को एक नई दिशा दी। रामचंद्र तिवारी के अनुसार भारतेंदु हरिश्चंद्र ‘आधुनिक हिंदी साहित्य के जन्मदाता और भारतीय नवोत्थान के प्रतीक’ हैं तो रामविलास शर्मा अनुसार ‘हिंदी की जातीय परंपरा के संस्थापक’। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने खड़ी बोली गद्य को साहित्यिक रूप प्रदान किया। और इसी साहित्य के माध्यम से उन्होंने जन जन तक अपनी बात पहुँचाई। कवि वचन सुधा (1867), हरिश्चंद्र मैगजीन और हरीश्चंद्र चंद्रिका के माध्यम से उन्होंने हिंदी साहित्य को नया आयाम प्रदान किया। उन्होंने गद्य के विविध विधाओं जैसे नाटक, निबंध, समालोचना आदि में नई परंपरा का सूत्रपात किया। वे भाषा के विकास के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा शान के, मिटत न हिय को शूल।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने समय के अनेक गद्य लेखकों को प्रेरित किया। उनके संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है कि “साहित्य के एक नवीन युग के आदि में प्रवर्तक के रूप में खड़े होकर उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया कि नए या बाहरी भावों को पचाकर इस प्रकार मिलाना चाहिए कि अपने ही साहित्य के विकसित अंग से लगें। प्राचीन नवीन के इस संधिकाल

में जैसी शीतल कला का संचार अपेक्षित था वैसी ही शीतल कला के साथ भारतेंदु का उदय हुआ, इसमें संदेह नहीं।” (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.315)

भारतेंदु के कुछ मौलिक नाटक हैं वैदेही हिंसा हिंसा न भवति, प्रेम योगिनी, भारत दुर्दशा, नील देवी, अंधेर नगरी आदि। उन्होंने अनेक नाटकों का अनुवाद भी किया है। उनकी रचनाओं में प्रबल रूप से समाज सुधार और देशभक्ति की भावना को देखा जा सकता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन काल में ही लेखकों का एक मंडल तैयार हो गया। उन्हें भारतेंदु मंडल के नाम से जाना जाता है। भारतेंदु युग के प्रमुख गद्य लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन, प्रताप नारायण मिश्र, श्रीनिवास दास, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथ दास रत्नाकर, बालमुकुंद गुप्त आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। इन सभी लेखकों ने गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बालकृष्ण भट्ट ने ‘हिंदी प्रदीप’ के माध्यम से गद्य का विकास किया। वे अपने युग के सशक्त प्रगतिशील लेखक थे। उनके निबंध विचारात्मक होते हैं। मनोवैज्ञानिक विषयों पर गंभीर चिंतन का कार्य प्रारंभ करने का श्रेय भट्ट जी को जाता है। शुक्ल जी का कथन है कि “वे स्थान-स्थान पर कहावतों का प्रयोग करते थे, पर उनका झुकाव मुहावरों की ओर अधिक रहा है। व्यंग्य और वक्रता उनके लेखों में भी भरी रहती हैं और वाक्य भी कुछ बड़े होते हैं। ठीक खड़ी बोली के आदर्श का निर्वाह भट्ट जी ने भी नहीं किया है। पूरबी प्रयोग बराबर मिलते हैं।” (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.318)। वे आँख, नाक आदि विषयों पर ललित निबंध भी लिखे। उनके उपन्यासों में सौ अजान एक सुजान तथा नूतन ब्रह्मचारी उल्लेखनीय हैं तो नाटकों में चंद्रसेन, शिशुपाल वध और पद्मावती।

प्रतापनारायण मिश्र ने ‘ब्राह्मण’ पत्रिका के माध्यम से हिंदी गद्य को आगे बढ़ाया। उनकी भाषा में व्यंग्यपूर्ण वक्रता को देखा जा सकता है। बालमुकुंद गुप्त ने हिंदी निबंध को समृद्ध किया। प्रेमघन ने आनंद कादंबिनी, नागरी नीरद जैसे साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी में सम्यक आलोचना का सूत्रपात किया। ‘परीक्षा गुरु’ के लेखक श्रीनिवास दास ने कथा साहित्य के लिए बोलचाल की भाषा के प्रयोग का मार्ग प्रशस्त किया। इन लेखकों के साहित्य में राष्ट्रभक्ति को भलीभाँति देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- आधुनिक हिंदी के जन्मदाता कौन हैं?
- भारतेंदु मंडल के साहित्यकार की प्रमुख प्रवृत्ति क्या है?
- भारतेंदु हरिश्चंद्र के संबंध में रामचंद्र शुक्ल का क्या विचार है?
- मनोवैज्ञानिक विषयों पर गंभीर चिंतन का कार्य किसने प्रारंभ किया?
- प्रेमघन ने किन साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी में आलोचना का सूत्रपात किया?

1.3.4 द्विवेदी युग के प्रमुख गद्य-लेखक

इसमें संदेह नहीं कि भारतेंदु युग के लेखकों ने गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खड़ी बोली को गद्य की भाषा के रूप में स्थापित किया। अनेक मौलिक एवं अनूदित ग्रंथ तैयार किए। फिर भी इनकी गद्य की भाषा में कई त्रुटियाँ थीं। इन त्रुटियों को दूर करने का श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को जाता है। इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से भाषा को परिमार्जित किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी और सरस्वती एक दूसरे के पर्याय बन चुके थे।

1900 में सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। 1903 से लेकर 1920 तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादकत्व में इस पत्रिका ने प्रतिष्ठा प्राप्त की। उस समय राष्ट्रीय स्वर को दिशा देने में सरस्वती पत्रिका का हाथ है। इतना ही नहीं विज्ञान के क्षेत्र में भी प्रवेश करके यह सिद्ध किया कि हिंदी में भी कठिन से कठिन विषय को प्रस्तुत करने की क्षमता है। हिंदी गद्य विधाओं को संपन्न बनाने में इस पत्रिका ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भाषा में व्याप्त अनगढ़पन और अराजकता को दूर करके उसे सुगढ़ बनाने में इस पत्रिका का योगदान उल्लेखनीय है। महावीर प्रसाद द्विवेदी की इच्छा थी कि खड़ी बोली हिंदी अपना मानक रूप ग्रहण करे क्योंकि इसके अभाव में महान साहित्य की रचना संभव नहीं है। इसीलिए वे सरस्वती में प्रकाशन के लिए आने वाली रचनाओं की भाषा को सुधार करके उन्हें शुद्ध रूप प्रदान करते थे।

द्विवेदी जी ने अपने समय की राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण की भावना को आत्मसात किया। इसीलिए वे मध्य युगीन आदर्शों का विरोध करते थे और रीतिकालीन कलारूपों को अस्वीकार। उन्होंने अपने युग के साहित्यकारों से साहित्य को समाज से जोड़ने के लिए कहा। उनका मानना है कि देश की उन्नति के बारे में जानना हो तो उस देश के साहित्य का अवलोकन करना चाहिए। उन्होंने सरस्वती के माध्यम से प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, माधव मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, पद्मसिंह शर्मा, रामचंद्र शुक्ल, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध आदि के साहित्य को समाज तक पहुँचाया।

द्विवेदी युग में निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचना आदि क्षेत्रों में अनेक साहित्यकार सामने आएँ। इस युग में नाटक के क्षेत्र में अंग्रेजी, बांग्ला और संस्कृत के नाटक अनूदित होकर हिंदी में आए। मौलिक नाट्य लेखन में चौपट चेपट, मयंक मंजरी (पंडित कोशोरीलाल गोस्मावी), रुकमिणी परिणय (अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध') जैसे नाटक लिखे गए। ये सभी सामान्य नाटक तेह जिन पर फारसी थियेटर का प्रभाव पड़ा।

उपन्यास के क्षेत्र में देवकीनंदन खत्री ने महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने चंद्रकांता और चंद्रकांता संतती के नाम से तिलिस्मी और ऐय्यारी उपनास लिखे। उन्होंने उर्दू-हिंदी के मिश्रित रूप को स्वीकारा। बाद में प्रेमचंद ने इसी भाषा रूप को अपने लेखन में अधिक विकसित किया। पंडित किशोरीलाल गोस्वामी ने छोटे-छोटे 65 उपन्यास लिखे। उन्होंने 'उपन्यास' नामक एक मासिक पत्र भी निकाला। इनके उपन्यासों में चपला, तरुण तपस्विनी, तारा, रज़िया बेगम,

लीलावती, लवंगलता आदि उल्लेखनीय हैं। हरिऔध जी ने ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल, लज्जाराम मेहता ने हिंदू धर्म, आदर्श दंपति आदि उपन्यास लिखे।

द्विवेदी युग में कहानी के क्षेत्र में चंद्रधर शर्मा गुलेरी, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, राधिकाप्रसाद सिंह, प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद उल्लेखनीय हैं। निबंध के क्षेत्र में बालमुकुंद गुप्त, पूर्णसिंह और आलोचना के क्षेत्र में रामचंद्र शुक्ल इसी युग का देन है। बालमुकुंद गुप्त ने व्यंग्य और विनोद की शैली को अपनाया। उनकी प्रसिद्ध रचना 'शिवशंभू का चिट्ठा' प्रसिद्ध है।

इन विधाओं के अतिरिक्त आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, यात्रा साहित्य, रेखाचित्र आदि नवीन विधाओं का सूत्रपात इस युग में हुआ।

बोध प्रश्न

- गद्य के विकास में सरस्वती का क्या योगदान है?
- द्विवेदी युग के प्रमुख साहित्यकारों का नाम बताइए।

1.3.5 छायावाद युग के प्रमुख गद्य-लेखक

छायावादी युग में "राजनीतिक दृष्टि से महात्मा गांधी का नेतृत्व जनता को सत्य, अहिंसा और असहयोग के माध्यम से स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए निरंतर प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान कर रहा था। 1919 ई. के प्रथम अवज्ञा-आंदोलन की असफलता, जलियांवाला कांड तथा भगतसिंह को प्रदत्त मृत्युदंड ऐसी घटनाओं से जनता का मनोबल कम नहीं हुआ था, साइमन कमीशन के बहिष्कार तथा नमक-कानून-भंग स्दृश जन आंदोलनों से इसी तथ्य की पुष्टि होती है।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र, पृ.549)। सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों का प्रभाव छायावाद युग के गद्य साहित्य पर भी दिखाई देता है। द्विवेदी युग में हिंदी गद्य का व्याकरण सम्मत परिमार्जित रूप स्थिर हो चुका था। अतः विभिन्न गद्य विधाओं का विकास स्वाभाविक था। इसलिए छायावाद युग का गद्य साहित्य द्विवेदी युग की तुलना में अधिक विकासशील और समृद्ध है।

नाटक साहित्य की दृष्टि से इस युग को 'प्रसाद युग' कहना उचित होगा। यद्यपि प्रसाद 1918 के पूर्व से ही नाटकों की रचना आरंभ कर दी थी, पर उनकी आरंभिक रचनाएँ (सज्जन, कल्याणी-परिणय, प्रायश्चित आदि) अपरिपक्क थीं। छायावाद युग में रचित अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि नाटकों के माध्यम से प्रसाद ने हिंदी नाटक साहित्य को विशिष्ट स्तर और गरिमा प्रदान की। कलात्मक उत्कर्ष की दृष्टि से प्रसाद के प्रमुख नाटक तीन हैं - स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हिंदी नाटक को साहित्यिक भूमिका प्रदान करने का प्रयास सर्वप्रथम भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया था। इस युग के अन्य नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी (रक्षाबंधन, प्रतिशोध आदि), लक्ष्मीनारायण मिश्र (अशोक,

संन्यासी, मुक्ति का रहस्य, सिंदूर की होली), रामकुमार वर्मा (बादल की मृत्यु), उपेंद्रनाथ अश्क (लक्ष्मी का स्वागत) आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में छायावाद युग को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि और गोदान जैसे उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठा कर जीवन के साथ सार्थक रूप से जोड़ने का काम किया। "उन्होंने सामयिक समस्याओं को अपने उपन्यासों का आधार बनाने के बावजूद जीवन की सहज-सामान्य धारा को उचित महत्व दिया।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र, पृ.560)। उन्होंने ईदगाह, नमक का दारोगा, पूस की रात, कफन जैसी अनेक कहानियों का सृजन किया। उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' नाम से आठ भागों में संकलित हैं। शिल्प और भाषा की दृष्टि से भी उन्होंने हिंदी कथा-साहित्य को विशिष्ट स्तर प्रदान किया। इस युग के अन्य गद्य लेखक हैं चतुरसेन शास्त्री, शिवपूजन सहाय, बेचन शर्मा उग्र, जैनेंद्र, भगवतीचरण वर्मा, राधिकारमण प्रसाद सिंह, वृंदावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुदर्शन, विष्णु प्रभाकर, चंद्रगुप्त विद्यालंकार आदि।

निबंध और आलोचना के क्षेत्र में इसे 'शुक्ल युग' कहा जाता है। आचार्य शुक्ल के निबंध 'चिंतामणि' नाम से संलित हैं। अन्य साहित्यकारों में गुलाबराय, शांतिप्रिय द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, श्यामसुंदर दास, रामकुमार वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

इस युग में विभिन्न गद्य विधाओं की उन्नति हुई। "प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद तथा रामचंद्र शुक्ल इस युग के ऐसे कृतिकार हैं, जिन्होंने एकाधिक गद्य-विधाओं को समृद्ध करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र, पृ. 590)। यह युग काव्य के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि गद्य के क्षेत्र में भी समृद्ध है।

बोध प्रश्न

- कलात्मक उत्कर्ष की दृष्टि से प्रसाद के प्रमुख नाटकों का नाम बताइए।
- प्रेमचंद की कहानियाँ किस नाम से संकलित हैं?
- छायावाद युग में किन कृतिकारों ने गद्य की विधाओं को स्मृद्ध किया?

1.3.6 छायावादोत्तर युग के प्रमुख गद्य-लेखक

हिंदी गद्य साहित्य की दृष्टि से यह युग सर्वांगीण उन्नति का युग है। इसी युग में भारत ने पराधीनता की बेड़ियाँ तोड़ी। इस युग में विभिन्न गद्य विधाओं का बहुमुखी विकास हुआ। इस युग के लेखकों ने कथासाहित्य, नाटक, आलोचना के साथ-साथ रिपोर्ताज और इंटरव्यू जैसे नए साहित्यिक विधाओं के माध्यम से भावों को अभिव्यक्त करने लगे। इस युग में राष्ट्र के नव निर्माण पर अल दिया जाने लगा। "कथ्य की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सर्वथा नए प्रतीक, उपमान अथवा बिंब ही प्रयुक्त नहीं हुए अपितु फ्लैशबैक, चेतना-प्रवाह आदि शैलियों का भी प्रयोग किया गया।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. नगेंद्र, पृ.659)

इस युग के लेखक वस्तुतः मानव-मन के सूक्ष्म संवेदनाओं को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करते थे। इस युग के गद्य साहित्य काव्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से वैविध्यपूर्ण है। इस युग के प्रमुख नाटककार हैं जगदीश माथुर (कोणार्क, पहला राजा), धर्मवीर भारती (अंधा युग), लक्ष्मीनारायण लाल (मादा कैक्टस, तीन आँखों वाली मछली), मोहन राकेश (आषाढ़ का एक दिन, लहरों का राजहंस), हरिकृष्ण प्रेमी (आहुति, स्वप्नभंग), जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद (समर्पण), चंद्रगुप्त विद्यालंकार (न्याय की रात), नरेश मेहता (सुबह के घंटे), मन्नू भंडारी (बिना दीवार का घर), ज्ञानदेव अग्निहोत्री (नेफ़ा की एक शाम) आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास कई मोड़ों से गुजरता हुआ दिखाई पड़ता है। इस युग में साहित्यकारों ने अनेक प्रयोग किए। इस क्षेत्र में अज्ञेय (शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप), इलाचंद्र जोशी (घृणामायी, संन्यासी, ॠतुचक्र), यशपाल (दादा कामरेड), रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' (चढ़ती धूप), भगवती चरण वर्मा (चित्रलेखा), अमृतलाल नागर (बूँद और समुद्र, अमरूत और विष), हजारी प्रसाद द्विवेदी (बाणभट्ट की आत्मकथा), रांगेय राघव (मुर्दों का टीला), नागार्जुन (रतिनाथ की चाची, बालचनमा), फणीशवरनाथ रेणु (मैला आंचल), रामदरश मिश्र (पानी की प्राचीर), धर्मवीर भारती (गुनाहों का देवता), निर्मल वर्मा (अंधेरे बंद कमरे) आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। कहानी के क्षेत्र में विष्णु प्रभाकर, रामदरश मिश्र, निर्मल वर्मा, इलाचंद्र जोशी, रांगेय राघव, मार्कण्डेय आदि उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न

- कथ्य की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए साहित्यकार क्या करते हैं?

1.3.7 स्वातंत्र्योत्तर युग के प्रमुख गद्य-लेखक

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोगों का मोहभंग होने लगा। मूल्य टूटने लगे। वैयक्तिक महत्वाकांक्षाएँ बढ़ने लगीं। ऐसे में साहित्यकारों ने यथार्थ स्थितियों को उजागर किया। मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' के माध्यम से आस्थाविहीन समाज तथा अनिश्चित की स्थिति में लटके हुए मनुष्य को रेखांकित किया। इस दृष्टि से 'वे दिन' (निर्मल वर्मा), 'मछली मरी हुई' (राजकमल चौधरी), 'डाक बंगला' (कमलेश्वर), 'अपने से अलग' (गंगा प्रसाद विमल), 'यह पथ बंधु' (नरेश मेहता), 'राग दरबारी' (श्रीलाल शुक्ल), 'आपका बंटी' (मन्नू भंडारी), 'धरती धन न अपना' (जगदीश माथुर), 'चित्तकोबरा' (मृदुला गर्ग), 'आधा गाँव' (राही मासूम रज़ा), 'गोबर गणेश' (रमेशचंद्र शाह) आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

इस युग में कहानी को लेकर अनेक साहित्यिक आंदोलन हुए। कुछ प्रमुख कहानी आंदोलन हैं - नई कहानी (मोहन राकेश), अ-कहानी (गंगा प्रसाद विमल), सचेतन कहानी (महीप सिंह), समांतर कहानी (कमलेश्वर)। इसी समय आधुनिकताबोध की प्रवृत्ति उभरी। इसके परिणामस्वरूप "भुवनेश्वर की 'सूर्यपूजा' और 'भेड़िए' शीर्षक कहानियों को जैनेंद्र, अज्ञेय और इलाचंद्र जोशी ने पल्लवित किया। 1950 के बाद की कहानियों में क्रमशः वैयक्तिकता का दबाव

बढ़ता गया।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र, पृ.728)। प्रगतिवादी विचारधारा के प्रतिनिधि कहानीकार हैं यशपाल। अज्ञेय ने व्यक्ति के आत्मसंघर्ष का चित्रण किया है। इलाचंद्र जोशी ने अपनी कहानियों में मनोवैज्ञानिक केस हिस्ट्री प्रस्तुत की है। अमृतराय, मोहन राकेश, विष्णु प्रभाकर, भैरवप्रसाद गुप्त, राजकमल चौधरी, श्रीकांत वर्मा, उषा प्रियंवदा, महीप सिंह आदि इस युग के उल्लेखनीय साहित्यकार हैं।

कथा-साहित्य के साथ-साथ यात्रा-साहित्य, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, बाल साहित्य, लघुकथा आदि अनेक विधाओं का सूत्रपात हुआ है। आज का युग विमर्शों का युग है। स्त्री, दलित, आदिवासी, वृद्ध, किन्नर, किसान, अल्पसंख्यक आदि अनेक विमर्श साहित्य के केंद्र में हैं। प्रभा खेतान, अनामिका, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला सिन्हा, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पुन्नी सिंह, सुशीला टाकभौरे, रणेन्द्र, रमेश उपाध्याय, मौआ माझी आदि अनेक साहित्यकार सामने आ रहे हैं। हिंदी गद्य-साहित्य का विकास निरंतर हो रहा है।

बोध प्रश्न

- कुछ प्रमुख कहानी आंदोलनों का नाम बताइए।

1.4 पाठ सार

छात्रो! आप इस पाठ के अध्ययन से स बात से परिचित हो चुके हैं कि आधुनिक काल वास्तविक रूप से गद्य के विकास का काल है। इस काल से पहले भी हिंदी साहित्य में गद्य लेखन के कुछ ग्रंथ प्राप्त होते हैं। लेकिन इनका परिमार्जित नहीं है। अठारहवीं शताब्दी में रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योगवाशिष्ठ' नाम का गद्य ग्रंथ खड़ी बोली में लिखा था। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'भाषा योगवाशिष्ठ' परिमार्जित गद्य की प्रथम पुस्तक है और रामप्रसाद निरंजनी प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक। आरंभिक गद्य लेखकों में सदासुखलाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लूलाल और सदल मिश्र प्रमुख हैं। इसी काल में हिंदी गद्य के स्वरूप को लेकर एक बहस भी छिड़ी। राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' जहाँ हिंदी में अरबी-फारसी शब्दों को स्वीकार करने के पक्षधर थे वहीं राजा लक्ष्मण सिंह इन्हें हिंदी में स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे। भारतेंदु माध्यम मार्ग अपनाकर अनप्रचलित खड़ी बोली को गद्य के लिए अपनाया। आगे के साहित्यकारों ने इसी खड़ी बोली को साहित्यिक रूप में विकसित किया।

भरातेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, छायावादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग के प्रमुख गद्य-लेखकों ने हिंदी गद्य के अनेक विधाओं को समृद्ध किया।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. हिंदी गद्य का प्रारंभिक रूप गोरखपंथी साधुओं की रचनाओं में मिलता है। यह राजस्थानी और ब्रज भाषा का मिश्रित भाषा रूप है।

2. 1635 ई. में मुल्ला वजही ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सबरस' की रचना की। अकबर के समय गंग कवि ने 'चंद छंद बरनन की महिमा' नामक एक पुस्तक खड़ी बोली में लिखी थी।

3. आधुनिक काल में परिमार्जित गद्य की प्रथम पुस्तक 'भाषायोगवशिष्ठ' है। ईसकी रचना रामप्रसाद निरंजनी ने की थी।

4. फोर्ट विलियम कॉलेज ने जॉन गिल क्राइस्ट के निर्देशन में हिंदी में पुस्तकें तैयार कराई जिससे हिंदी गद्य शैली का बहुत विकास हुआ।

5. भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के कारण कई परिवर्तन सामने आने लगे। उनका प्रभाव भारतीय जनजीवन पर पड़ने लगा।

6. हिंदी गद्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान रहा।

7. भारततेंदु हरिश्चंद्र ने जन साधारण की भाषा को साहित्य के लिए अपनाया। बाद के साहित्यकारों ने भी इसी भाषा को विकसित किया।

1.6 शब्द संपदा

1. अनगढ़पन = शिष्टता का अभाव
2. धर्मनिरपेक्ष = जो सभी धर्मों को समान मानता हो
3. परिमार्जित = स्वच्छ किया हुआ
4. हठयोग = नाथपंथियों में योग का एक प्रकार जिसमें कुंडलिनी जागरण कराकर सकारात्मक तक ले जाया जाता है।

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी गद्य के विकास के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. हिंदी गद्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी और सरस्वती पत्रिका की भूमिका की चर्चा कीजिए।
3. स्वातंत्र्योत्तर युग के प्रमुख गद्य-लेखकों पर प्रकाश डालिए।
4. छायावादोत्तर युग के प्रमुख गद्य-लेखकों के बारे में लिखिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी गद्य के उदय की पृष्ठभूमि विवेचित कीजिए।

2. ब्रज भाषा गद्य के बारे में चर्चा कीजिए।

3. भारतेंदु युग के गद्य लेखकों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

4. छायावाद युग के कौन-सी सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों का प्रभाव साहित्य पर पड़ा।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. 'अष्टयाम' के रचनाकार कौन हैं? ( )
   (अ) विट्ठलनाथ (आ) नाभादास (इ) वैकुंठमणि शुक्ल (ई) सुरति मिश्र

2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किसे प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक माना है? ( )
   (अ) रामप्रसाद निरंजनी (आ) गंगादास (इ) अमीर खुसरो (ई) सुरति मिश्र

3. आधुनिक काल में 'खड़ी बोली के पितामह' किसे कहा जाता है? ( )
   (अ) रामप्रसाद निरंजनी (आ) गंगादास (इ) अमीर खुसरो (ई) सुरति मिश्र

4. हिंदी के प्रथम साप्ताहिक पत्र का क्या नाम है? ( )
   (अ) बनारस अखबार (आ) मार्तंड (इ) उदंत मार्तंड (ई) प्रजामित्र

5. 'नासिकेत्पाख्यान' के रचनाकार कौन हैं? ( )
   (अ) सदल मिश्र (आ) लक्ष्मण सिंह (इ) वियोगी हरि (ई) इंशा अल्ला खाँ

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. परीक्षा गुरु के लेखक............हैं।

2. मनोवैज्ञानिक विषयों पर गंभीर चिंतन का कार्य प्रारंभ करने का श्रेय............ को जाता है।

3. ध्रुवस्वामिनी के रचनाकार .... हैं।

4. शिवशंभू का चिट्ठा के रचनाकार............ हैं।

5. प्रतापनारायण मिश्र ने .... पत्रिका के माध्यम से हिंदी गद्य को आगे बढ़ाया।

III. सुमेल कीजिए

1. राजा लक्ष्मण सिंह	(अ) भारतीय नवोत्थान के प्रतीक
2. अज्ञेय	(ब) सरस्वती
3. महावीर प्रसाद द्विवेदी	(स) प्रजा हितैषी
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र	(द) नदी के द्वीप

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र

इकाई 2 : उपन्यास : परिभाषा, स्वरूप और तत्व

रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 मूल पाठ : उपन्यास : परिभाषा, स्वरूप और तत्व
2.3.1 उपन्यास : अर्थ और परिभाषा
2.3.2 उपन्यास : तत्व
2.3.3 उपन्यास : प्रकार
2.3.4 उपन्यास का रचनागत वैशिष्ट्य
2.4 पाठ सार
2.5 पाठ की उपलब्धियाँ
2.6 शब्द संपदा
2.7 परीक्षार्थ प्रश्न
2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

छात्रो! आप जान ही चुके हैं कि हिंदी साहित्य के आधुनिक काल को गद्य काल कहा जाता है। इस काल में गद्य साहित्य का उत्तरोत्तर विकास हुआ। साहित्य मनुष्य की संवेदनात्मक क्षमता का परिणाम है। साहित्य पाठक के हृदय को कोमल और संवेदनशील बनाता है। आधुनिक काल में साहित्य की अनेक विधाओं का विकास हुआ है। इस इकाई में आप उपन्यास साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

2.2 उद्देश्य

छात्रो! आप इस इकाई में उपन्यास के स्वरूप के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- उपन्यास के अर्थ को समझ सेकेंगे।
- अनेक विद्वानों ने उपन्यास की जो परिभाषाएँ दी उन्हें जान सकेंगे।
- इन परिभाषाओं के आधार पर उपन्यास के स्वरूप को जान सकेंगे।
- उपन्यास के तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- उपन्यास की रचना विधान को समझ सकेंगे।
- उपन्यासों के विविध प्रकारों पर प्रकाश डाल सकेंगे।

2.3 मूल पाठ : उपन्यास : परिभाषा, स्वरूप और तत्व

आधुनिक काल में गद्य की अनेक विधाओं का विकास हुआ है। इनमें से प्रमुख है उपन्यास। इसका दायरा विस्तृत है। इसमें यथार्थ एवं कल्पना मिश्रित कहानी को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास किसे कहते हैं? इसके क्या-क्या तत्व हैं? कितने प्रकार के हैं? आदि विषयों पर आगे चर्चा करेंगे।

2.3.1 उपन्यास : अर्थ और परिभाषा

छात्रो! उपन्यास के अर्थ और परिभाषा पर ध्यान केंद्रित करने से पहले इस शब्द पर विचार करेंगे। 'न्यास' शब्द में 'उप' उपसर्ग जुड़ने से उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति हुई। 'उप' उपसर्ग का अर्थ है समीप तथा 'न्यास' शब्द का अर्थ है रखना। अतः कहा जा सकता है कि उपन्यास का शाब्दिक अर्थ है 'समीप रखना'। आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि किसके समीप रखना? उत्तर स्पष्ट है - मानव जीवन के समीप। क्योंकि उपन्यास में मानव जीवन का चित्रण होता है। इस विधा में मनुष्य के आस-पास के परिवेश को देखा जा सकता है।

'उपन्यास' शब्द संस्कृत की 'अस' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'रखना'। इसमें 'उप' और 'नि' उपसर्ग हैं, और 'धत्र' अर्थ प्रत्यय का प्रयोग है। इस प्रकार मोटे रूप में उपन्यास का अर्थ है उप स्थापन। विधा के विकास के साथ इस शब्द के अनेक लाक्षणिक अर्थ बनते गए, अलग-अलग भाषाओं में उपन्यास का शब्दगत अर्थ अलग-अलग है। अंग्रेजी में इसे 'नॉवेल' कहा जाता है तो गुजराती में 'नवल कथा' तथा तेलुगु में 'नवला', मराठी में 'कादंबरी', उर्दू में 'नाविल' तथा बांग्ला में 'उपन्यास' कहा जाता है। हिंदी में अंग्रेजी के 'नॉवेल' के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

कहा जाता है कि हिंदी में उपन्यास विधा बांग्ला के माध्यम से अंग्रेजी से आई। अतः अंग्रेजी में इस विधा के संबंध में क्या कहा गया है यह जानना भी अनिवार्य है। आइए! हम देखेंगे कि विभिन्न कोशों में इस शब्द का क्या अर्थ दिया गया है।

न्यू वेबस्टर डिक्शनरी : A lengthy fictitious prose narrative having an almost unlimited range of subject matter and varied techniques containing one or more plot (उपन्यास एक ऐसे कल्पित गद्य विधा है जिसके विषय की सीमा असीम है, शिल्प कौशल में वैविध्य है और उसके एक या अनेक कथानक हो सकते हैं)

केंब्रिज लरनर्स डिक्शनरी : Novel (n) : A book that tells a story about imaginary people and events. (उपन्यास एक ऐसी पुस्तक है जो काल्पनिक लोगों अथवा घटनाओं के बारे में कहती है)

मेक्डोनल ने अपने शब्दकोश में उपन्यास के अर्थ इस प्रकार बताए हैं - intimation, statement, declaration, discussion.

वर्धा शब्द कोश के अनुसार उपन्यास वह कल्पित और लंबी कहानी है जो अनेक पात्रों और घटनाओं से युक्त हो तथा जिसमें जीवन की विविध बातों का चित्रण किया गया हो।

हिंदी शब्द सागर के अनुसार उपन्यास शब्द का अर्थ है 'पास रखी धरोहर'।

संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ में उपन्यास शब्द अनेक अर्थों में प्रकट हुआ है - जैसे पास लाना, धरोहर, अमानत, प्रस्ताव, प्रमाण, उपक्रम, संधि का प्रकार, कल्पित या लंबी कहानी।

आइए अब हम हिंदी एवं अंग्रेजी विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

ई.एम. फोस्टर का मत है कि जीवन के गुप्त रहस्यों को अभिव्यक्त करने की विशेषता सबसे अधिक उपन्यास में है।

श्यामसुंदर दास की मान्यता है कि उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। उपन्यास आज के युग की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है।

प्रेमचंद उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझते हैं। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।

गुलाबराय की मान्यता है कि उपन्यास कार्य-कारण शृंखला में बंधा हुआ वह गद्य कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक व कालपनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सच का रसात्मक रूप से उद्घाटित किया जाता है।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य मानते हैं।

देवराज उपाध्याय के अनुसार उपन्यास मानव जीवन का वह स्वच्छ और यथार्थ गद्यमय चित्र है जिसमें मानव मन के प्रसादन की मूलभूत शक्ति के साथ-साथ उसके रहस्यों का उद्घाटन तथा उसके उन्नयन की विचित्र क्षमता भी होती है। उपन्यासकार यह कार्य सफल चरित्र-चित्रण द्वारा करता है।

अज्ञेय का मत है कि उपन्यास व्यक्ति के अपनी परिस्थितियों के साथ संबंध की अभिव्यक्ति के उत्तरोत्तर विकास का प्रतिनिधित्व करता है।

अतः उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उपन्यास उस रचना को कह सकते हैं जो मानव जीवन के किसी विशेष पक्ष को हमारे निकट रखे। उपन्यास मानव समाज की विषमताओं, समस्याओं और बढ़ती आवश्यकताओं को अभिव्यक्त करता है। यह एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें कलात्मकता के साथ जीवन की व्याख्या रहती है। इसका उद्देश्य मनोरंजन भी है और साथ ही यथार्थ को उजागर करना। सामान्य रूप से उपन्यास को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है - उपन्यास एक ऐसी गद्य विधा है जिसे जीवन का

महाकाव्य कहा जा सकता है। क्योंकि यह मानव जीवन के समूचे परिदृश्य को कल्पनात्मकता के साथ प्रस्तुत करता है।

बोध प्रश्न

- उपन्यास का शाब्दिक अर्थ क्या है?
- प्रेमचंद ने उपन्यास को किस प्रकार परिभाषित किया है?
- आप उपन्यास को किस प्रकार परिभाषित करेंगे?
- उपन्यास को जीवन का महाकाव्य क्यों कहा जाता है?

2.3.2 उपन्यास : तत्व

छात्रो! आप समझ ही चुके हैं कि उपन्यास में मानव जीवन की परिस्थितियों का अंकन होता है। उपन्यासकार किसी काल्पनिक अथवा वास्तविक घटना का चित्रण करता है। उस घटना को रोचक तरह से प्रस्तुत करने के लिए कथा की आवश्यकता होती है। उस कथा को विस्तार देने में पात्र सहायक सिद्ध होते हैं और उन पात्रों के बीच संवाद कायम होना जरूरी है। इसी प्रकार परिवेश भी महत्वपूर्ण है। और तो और कहने का ढंग और उद्देश्य भी उपन्यास को रचने में सहायक सिद्ध होते हैं। इस प्रकार कथानक, चरित्र, संवाद, परिवेश, शैली और उद्देश्य उपन्यास के प्रमुख तत्व हैं। वस्तुतः उपन्यास के तत्वों को अलग-अलग करना उसी तरह है जिस तरह वनस्पति विज्ञान में फूल की पंखुड़ियों को अलग-अलग करके अध्ययन किया जाता है। बुनावट को जानने के लिए ऐसा करना तर्कसंगत है। तो आइए, इन तत्वों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

कथानक :

कथानक अथवा वस्तु उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है। इसे अंग्रेजी में प्लॉट कहा जाता है। विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं को लेखक एक क्रम में जब प्रस्तुत करता है तो उसे कथावस्तु कह सकते हैं। यह उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है। पाश्चात्य विद्वान विलियम हेनरी हडसन के अनुसार उपन्यास में घटनाएँ परिस्थितियों के अनुसार घटती हैं तो कुछ देशकाल में किन्हीं व्यक्तियों के द्वारा की जाती हैं। जो घटित होता है और जो किया जाता है इन सबको मिलाने से जो चीज बनती है उसे कथावस्तु या प्लॉट कहा जाता है। कुछ लेखक कथावस्तु को प्रमुखता नहीं देते फिर भी यह उपन्यास का मूल आधार है। यह नींव की तरह काम करता है। इसी पर उपन्यास का समूचा कलेवर निर्मित होता है। उपन्यास में मानव जीवन को समग्रता में प्रस्तुत किया जाता है। अतः एक मुख्य कथा होती है और साथ ही अनेक प्रासंगिक उप-कथाएँ भी होती हैं। उदाहरण के लिए प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में होरी, धनिया की कथा मुख्य है तो गोबर, मालती, मेहता, मातादीन आदि की प्रासंगिक उप-कथाएँ साथ-साथ चलती हैं।

उपन्यास की कथा चरित्र को विकसित करने वाली होनी चाहिए। कथा को विस्तार देते समय यह ध्यान रखना अनिवार्य है कि कहीं कोई प्रसंग असंगत और अप्रासंगिक न हो। उपन्यास

की कथा चरित्र को विकसित करने वाली होनी चाहिए। काल्पनिक और अविश्वसनीय लगाने वाली घटनाओं से बचना चाहिए। पहले के उपन्यासों में कथा के आरंभ से अंत तक एक शृंखला होती थी। अर्थात आरंभ, मध्य और अंत होता था। लेकिन आज ऐसा नहीं है। आज कथा का आरंभ किसी भी घटना या वर्णन आदि से हो जाता है। कभी-कभी किसी पात्र के अंतर्द्वंद्व से कथा की शुरूआत होती है या कभी संवादों से कथा शुरू होती है। यह भी आवश्यक नहीं कि कथा का कोई निश्चित अंत हो। अर्थात कथा का समापन कहीं भी हो सकता है। कभी-कभी लेखक समापन पाठक पर छोड़ देते हैं।

बोध प्रश्न

- कथावस्तु किसे कहते हैं?
- प्रासंगिक उप-कथाओं से आप क्या समझते हैं?

चरित्र चित्रण :

कथावस्तु में जिन घटनाओं का उल्लेख किया जाता है वे कुछ व्यक्तियों के जीवन में घटित होती हैं और कुछ लोगों के द्वारा की जाती हैं या सहन की जाती हैं। और पुरुष या स्त्रियाँ जो इस घटनाक्रम को आगे बढ़ाते हैं वे 'ड्रैमेटिक परसोनी' अथवा चरित्र समूह का निर्माण करते हैं। कहने का आशया है कि उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाने में पात्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन व्यक्तियों के जीवन की घटना को लेकर कथा का विकास किया जाता है, वे पात्र कहलाते हैं। पात्रों के चरित्र की विशेषताओं का चित्रण ही चरित्र चित्रण कहलाता है। किसी भी कथा में पात्रों की आवश्यकता होती है क्योंकि उनके बिना घटना का चित्रण असंभव है। इसलिए चरित्र चित्रण उपन्यास के महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। कथा के अनुरूप ही पत्रों का चयन किया जाता है। पात्रों के चयन के अनुरूप ही चरित्र चित्रण भी होता है। पात्र भी अलग-अलग होंगे। कुछ पात्र आदर्श होते हैं, कुछ काल्पनिक होते हैं, कुछ यथार्थ होते हैं, कुछ पात्रों में व्यक्तित्व की प्रधानता होती है। कुछ पात्रों में वर्ग विशेषताएँ होती हैं। कुछ पात्र बहिर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं तो कुछ अंतर्मुखी। बहिर्मुखी व्यक्तित्व के पात्र वे होते हैं जो किसी भी स्थिति में तत्काल प्रतिक्रिया करने को तैयार हो जाते हैं। ये खूब मिलनसार होते हैं। हर काम में रुचि लेते हैं और जरा-जरा सी बात पर चिंतित नहीं होते। वे ज्यादा बातचीत करना पसंद करते हैं और दूसरों की बातों से जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। इनके विपरीत अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले पात्र होते हैं। अंतर्मुखी व्यक्ति प्रतिक्रिया करने से पहले झिझकता है। वह संकोची स्वभाव का होता है। वह नई स्थितों को पसंद नहीं करता। कभी-कभी उनसे डरता भी है। वह एकांत-प्रेमी होता है। लोगों से बहुत कम संपर्क रखता है। वह विचार और कल्पनाप्रधान होता है। ज्यादा संवेदनशील होता है। जारा-सी बात भी उसे जल्दी चुभ जाती है और वह चिंतित हो जाता है। वह जिद्दी भी होता है और बहस करना पसंद करता है। अंतर्मुखता और बहिर्मुखता उस व्यक्ति के व्यवहार से पता चलता है।

उपन्यासकार चरित्र चित्रण के लिए कई तरह की विधियाँ अपनाता है। सबसे पहले वह पात्र द्वारा किए जाने वाले कार्यों के माध्यम से चरित्र निर्माण करता है। पात्र के मन में उठने वाले विचार या भावनाओं के माध्यम से भी उसका चरित्र स्पष्ट होता है। एक पात्र दूसरे पात्र के बारे में जो कुछ कहता है वह भी पात्र के चरित्र चित्रण में सहायक सिद्ध होता है। कभी-कभी लेखक स्वयं पात्र के बारे में स्पष्ट करता है।

बोध प्रश्न

- कथा को आगे बढ़ाने में चरित्र चित्रण किस प्रकार सहायक सिद्ध होता हैं?
- ड्रैमेटिक परसोनी अथवा चरित्र समूह का निर्माण किस तरह से होता है?
- अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व के बारे में आप क्या जानते हैं?

संवाद :

पात्रों के बीच संवाद कायम होने से कथा को विस्तार मिलता है। पात्र आपस में जो बातचीत करते हैं उन्हें संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। कथा को विस्तार मिलने के साथ-साथ रोचकता भी प्राप्त होती है। पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने में संवाद सहायक बनते हैं। पात्रों की आयु, शिक्षा, रुचि एवं स्वभाव के अनुरूप संवाद योजना होनी चाहिए।

बोध प्रश्न

- संवाद योजना किस प्रकार होनी चाहिए?

परिवेश :

परिवेश के अंतर्गत देशकाल अथवा स्थान और समय आता है जहाँ उपन्यास की कहानी चलती है। कथावस्तु के अनुरूप ही परिवेश का वर्णन करना चाहिए। जहाँ तक हो सके उपन्यासकार स्वाभाविकता लाने के लिए परिवेश के यथार्थ रूप को प्रस्तुत करता है। अर्थात यदि कथा गाँव की है तो पूरा परिवेश ग्रामीण होना चाहिए। कहने का आशय है कि गाँव की कथा हो तो गाँव के घर, गलियाँ, चौपाल, खेत-खलिहान, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, मेले-त्योहार, संस्कार आदि की जानकारी देने से ही लेखक ग्रामीण जीवन को सही अर्थों में रचना में प्रस्तुत कर सकता है। अनुभव और जानकारी के बल पर परिवेश का चित्रण हो तो उपन्यास में स्वाभाविकता का पुट मिलता है।

बोध प्रश्न

- परिवेश चित्रण किस प्रकार होना चाहिए?

भाषा शैली :

शैली का अर्थ है रचना करने का ढंग। लेखक की रुचि और विषयवस्तु के कारण शैली में परिवर्तन होता है। उपन्यास में कथावस्तु, पात्र और परिवेश के अनुरूप ही संवादों की भाषा होनी चाहिए। भाषा प्रयोग से कथा जीवंत हो उठती है। सरल और बोलचाल की भाषा प्रयोग

रचना को सहज एवं स्वाभाविक बनाता है। हर लेखक की अपनी निजी शैली होती है। कथावस्तु और उद्देश्य को ध्यान में रखकर लेखक आवश्यकतानुसार व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक, पत्रात्मक, संवादात्मक, प्रत्यक्ष कथन, परोक्ष कथन, डायरी शैली और पूर्वदीप्ति (flashback) शैली का प्रयोग करते हैं। इसे कथन भंगिमा भी कहा जा सकता है। चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपरा' पत्रात्मक शैली लिखा गया उपन्यास है।

बोध प्रश्न

- किस प्रकार का भाषा प्रयोग रचना को सहज बनाता है?

उद्देश्य :

उपन्यास के उद्देश्य को प्रतिपाद्य भी कहा जाता है। अपने उद्देश्य को सहज रूप से पाठकों तक पहुँचाने में ही उपन्यासकार की सफलता सिद्ध होती है। कथावस्तु की प्रस्तुति द्वारा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। उद्देश्य कथित होने से उपदेश बन जाता है। 'गोदान' में किसानों का शोषण व्यंजित हुआ है, न कि प्रेमचंद द्वारा कहा गया है।

उपन्यास लेखन में इन तत्वों के अतिरिक्त लेखक का दृष्टिकोण, उनके विचार और अनुभव आदि भी कुछ मायने रखते हैं। अतः उपन्यास के तत्वों को बाँटकर देखना न्याय संगत नहीं होगा। ऐसी स्थिति में उपन्यास को दो तत्वो में बाँटा जा सकता है - 1. कथा तत्व और 2. संरचना तत्व। कथा तत्व के अंतर्गत कथा, घटनाएँ, अनुभव, लेखक का दृष्टिकोण, विचार और उद्देश्य स्वतः समाहित हो जाएँगे तथा संरचना तत्व के अंतर्गत चरित्र चित्रण, परिवेश, कथन भंगिमा (शैली), भाषा आर संवाद आ जाते हैं। ये सभी तत्व एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे को सहायता देते हैं। क्योंकि कथा या वस्तु, घटनाओं का संयोजन आदि संरचना तत्व पर निर्भर रहते हैं। कहा जाए तो उपन्यास में आई हुई कहानी/ कहानियाँ एवं घटनाएँ एक सूत्र में पिरोई गई होनी चाहिए। उनमें कसाव होना चाहिए। उनकी रचना कौतूहलतापूर्ण होनी चाहिए। वास्तविकता के प्रति आग्रह होना चाहिए। घटनाओं में गति होनी चाहिए। कथा की अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण होना चाहिए। कथन भंगिमा और परिवेश कथा के अनुरूप होने चाहिए। इन तत्वों का सही प्रयोग करने से उपन्यासकार अपने उद्देश्य में सफलता पा सकते हैं। इस संदर्भ में निर्मल वर्मा का यह कथन उल्लेखनीय है - "उपन्यास का गठन लेखक तैयार नहीं करता, स्वयं उसकी दृष्टि उसे निर्धारित करते हैं - जैसे नदी पहले अपना पाट तैयार करके नहीं बहती, स्वयं बहने के दौरान उसका पाट बनता जाता है।"

बोध प्रश्न

- उपन्यासकार अपने उद्देश्य में कब सफल हो सकता है?
- उपन्यास के विभिन्न तत्वों का उल्लेख कीजिए।

2.3.3 उपन्यास : प्रकार

उपन्यास विधा का वर्गीकरण उपन्यास के तत्वों अर्थात कथावस्तु, पात्रों के चरित्र चित्रण, परिवेश, शैली और प्रतिपाद्य के आधार पर किया जा सकता है।

(क) कथावस्तु के आधार

हर उपन्यास का कथानक अलग-अलग होता है। कोई उपन्यास पुराण कथा से संबंधित हो सकता है तो कोई तत्कालीन यथार्थ से। समकालीन यथार्थ से संबंधित उपन्यासों में कथावस्तु पारिवारिक हो सकती है, सामाजिक और राजनैतिक भी। अतः कथावस्तु को दृष्टि में रखकर उपन्यासों के कुछ वर्ग बन सकते हैं। जैसे ऐतिहासिक, पारिवारिक, सामाजिक, पौराणिक आदि।

ऐतिहासिक उपन्यास :

इस वर्ग के उपन्यासों में कथा का आधार इतिहास प्रसिद्ध घटना होती है। उनकी कथावस्तु अतीत से जुड़ी होती है। ऐसे उपन्यासों में इसका अवकाश नहीं होता कि इतिहास सम्मत सच्ची घटना को ही कथावस्तु का आधार बनाया जाए। इसमें कल्पना द्वारा कथा को विस्तार दिया जा सकता है। लेकिन इस बात पर ध्यान अवश्य देना चाहिए कि समकालीन जीवन की समस्याएँ अतीत की घटना के आधार पर प्रस्तुत हों। उदाहरण के लिए 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में बाणभट्ट के युग की कथा के माध्यम से आज के समाज में व्याप्त जातिप्रथा, धार्मिक विद्वेष, युद्धोन्माद आदि पर तीखा प्रहार किया गया है। कुछ प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास हैं मृगनयनी (वृंदावनलाल वर्मा), चारुचंद्रलेखा (हजारी प्रसाद द्विवेदी), दिव्या (यशपाल) आदि।

पारिवारिक उपन्यास :

जिस उपन्यास में प्रमुख रूप से परिवार की समस्या या घटना को कथावस्तु का आधर बनाया जाए उसे पारिवारिक उपन्यास कह सकते हैं। परिवार समाज की इकाई है। अतः इस प्रकार के उपन्यासों को सामाजिक उपन्यासों के अंतर्गत भी रखा जा सकता है। प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' में अनमेल विवाह के कारण परिवार में उत्पन्न समस्या को दर्शाया गया है। कुछ और उदाहरण हैं झरोखे (भीष्म साहनी), गुंठन (गुरुदत्त), बुनियाद (मनोहर श्याम जोशी), पाँच आँगनों वाला घर (गोविंद मिश्र) आदि।

सामाजिक उपन्यास :

सामाजिक समस्या या घटना को लेकर लिखे जाने वाले उपन्यासों को सामाजिक उपन्यास कह सकते हैं। पीढ़ी अंतराल, भ्रष्टाचार, सामाजिक रूढ़ियाँ, मूल्य ह्रास, समस्याएँ आदि को इस तरह के उपन्यासों में प्रमुख रूप से उजागर किया जाता है। प्रेमचंद के सभी उपन्यास सामाजिक हैं। कुछ उदाहरण हैं- सेवासदन (प्रेमचंद), ममता (जयशंकर प्रसाद), बूँद और समुद्र (अमृतलाल नागर), नंगातलाई का गाँव (विश्वनाथ त्रिपाठी), समुद्र में खोया हुआ आदमी (कमलेश्वर), पलटू बाबू रोड (फणीश्वरनाथ रेणु), आदमी स्वर्ग में (विष्णु नागर), जिंदगीनामा (कृष्णा सोबती) आदि।

पौराणिक उपन्यास :

जिस उपन्यास में कथा का आधार पौराणिक हो वह पौराणिक उपन्यास कहलाता है। इन तरह के उपन्यासों में कथा का आधार तो पुराण संबंधीत होता है लेकिन उद्देश्य आधुनिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करना होता है। कुछ पौराणिक उपन्यास हैं अनामदास का पोता (हजारी प्रसाद द्विवेदी), वसुदेव (नरेंद्र कोहली), परितप्त लंकेश्वरी (मृदुला सिन्हा) आदि।

(ख) चरित्र चित्रण के आधार पर

किसी उपन्यास में मुख्य चरित्र को केंद्र में रखकर कथा का विस्तार किया जाता है तो उसे चरित्र प्रधान उपन्यास कह सकते हैं। 'निर्मला' उपन्यास का प्रमुख पात्र स्त्री है। पूरी कथा उसके जीवन से संबंधित है। चरित्र प्रधान उपन्यास में एक केंद्रीय चरित्र के साथ-साथ अनेक गौण चरित्र होते हैं। पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को चित्रित करने के लिए घटनाओं और प्रसंगों की रचना की जाती है। पात्रों के मनोभावों को विस्तार दिया जाता है। अज्ञेय, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी आदि के उपन्यास इसी कोटी के माने जा सकते हैं।

(ग) परिवेश के आधार पर

हर उपन्यास में कोई न कोई परिवेश अवश्य होता है। लेकिन जिस उपन्यास में अन्य तत्वों की अपेक्षा परिवेश की प्रधानता होती है उसे परिवेश प्रधान उपन्यास के अंतर्गत रखा जा सकता है। आंचलिक उपन्यासों को परिवेश प्रधान उपन्यास कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आँचल'। इसमें बिहार के पूर्णिया क्षेत्र की आंचलिकता को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। परिवेश के आधार पर लिखे गए उपन्यासों को महानगरीय, शहरीय, कसबाई, ग्रामीण आदि विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(घ) वर्णन शैली के आधार पर

वर्णन शैली के आधार पर उपन्यासों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - घटना प्रधान और भाव प्रधान।

घटना प्रधान उपन्यास :

जिस उपन्यास में घटना की प्रधानता हो वह घटना प्रधान उपन्यास है। ऐसे उपन्यासों में कथा की रोचकता घटना के विकास से साथ जुड़ी हुई रहती है। जासूसी, ऐय्यारी, तिलिस्मी उपन्यास इसी वर्ग में आते हैं। चंद्रकांता, चंद्रकांता संतती आदि उपन्यासों को इस श्रेणी के अंतर्गत रख सकते हैं।

भाव प्रधान उपन्यास :

जिन उपन्यासों में भावनात्मक संघर्ष को कथा का आधार बनाया जाता है उन्हें भाव प्रधान उपन्यास कह सकते हैं। ऐसे उपन्यासों में पात्रों के मन में उठने वाले भावों का चित्रण किया जाता है। उदाहरण के लिए जैनेंद्र का उपन्यास 'सुनीता'।

(च) प्रतिपाद्य के आधार पर

रचनाकार के दृष्टिकोण और रचना के उद्देश्य के आधर पर इस वर्ग के उपन्यासों को बाँटा जा सकता है। रचनाकार की दृष्टि या तो आदर्शवादी होती है या यथार्थवादी। जब आदर्श को केंद्र में रखकर रचना की जाती है तो उस उपन्यास को आदर्शवादी उपन्यास कहा जाता है। प्रेमचंद के आरंभिक उपन्यास इसी वर्ग के अंतर्गत आते हैं। जब जीवन के यथार्थ को उजागर किया जाता है तो ऐसे उपन्यासों को यथार्थवादी उपन्यास कहा जाता है। जब मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर उपन्यास लिखा जाता है तो उसे मनोवैज्ञानिक उपन्यास कह सकते हैं। जब नए मूल्यों की खोज की जाती है तो प्रयोगशील उपन्यास कह सकते हैं। यंत्रीकरण और औद्योगीकरण के कारण आए परिवर्तनों के आधार पर लिखे गए उपन्यासों को आधुनिकता बोध के उपन्यास कह सकते हैं।

बोध प्रश्न

- उपन्यासों को किस प्रकार विभाजित किया जा सकता है?
- ऐतिहासिक उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए।
- पीढ़ी अंतराल, भ्रष्टाचार, शोषण आदि किस प्रकार के उपन्यासों में मिलते हैं?

2.3.4 उपन्यास का रचनागत वैशिष्ट्य

छात्रो! अब तक आप उपन्यास के स्वरूप, तत्व और भेदों से परिचित हो ही चुके हैं। और यह भी जान चुके हैं कि उपन्यास किसे कहते हैं। उपन्यास आधुनिक जीवन के यथार्थ को बहुत निकटता से पहचानकर उसे हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। उपन्यास को किसी एक सुनिश्चित परिभाषा में बाँधना आसान कार्य नहीं। फिर भी उसको पारिभाषित करते हुए कहा जाता है कि उपन्यास आधुनिक गद्य की वह विधा है जो यथार्थ को बहुत सहज रूप से प्रस्तुत करता है। रचनाकार अपने अनुभव जगत को कल्पना से जोड़कर घटनाओं को इस तरह पिरोता है कि पाठक के समक्ष चित्र उभरने लगते हैं। उपन्यास के पात्र जीवंत होते हैं। घटनाएँ भी हमारे बीच की होती हैं। अतः उपन्यास पढ़ते समय हम सब किसी न किसी तरह से कथा के साथ जुड़ ही जाते हैं। कभी कभी तो हम स्वयं पात्र भी बन जाते हैं।

छात्रो! आपमें से बहुत लोगों ने कोई न कोई उपन्यास अवश्य पढ़ा होगा। पहले के उपन्यासों में चमत्कार, तिलिस्म आदि से भरपूर अजीब घटनाओं का समावेश रहता था। घटना प्रधान उपन्यासों का भरमार था। पाठक को उस प्रकार के उपन्यासों से आनंद मिलता था। अपने उद्देश्य की पूर्ति भी लेखक घटनाओं के माध्यम से ही करता था। इसकी तुलना में आज का उपन्यासकार वास्तविकता को पाठकों के समक्ष लाने का प्रयास कर रहा है। इसलिए वह अपने पात्रों का चरित्र चित्रण इस प्रकार करता है कि वे काल्पनिक न लगें। पात्रों में सजीवता लाने का भरपूर प्रयास किया जाता है। आज का उपन्यासकार जीवन के यथार्थ को अपने अनुभव जगत के माध्यम से रचना में प्रस्तुत कर रहा है।

उपन्यास का जन्म पश्चिम में हुआ। पश्चिम के उपन्यासकारों ने उपन्यास को नया रूप प्रदान किया। समय के साथ-साथ उपन्यास विधा लोकप्रियता प्राप्त करती गई और समयानुरूप परिवर्तन भी आते गए। उपन्यास की रचना प्रक्रिया पर विचार करते हुए सोचा गया कि उपन्यास क्या है? मानव जीवन से इसका क्या संबंध है? इसे किस उद्देश्य से लिखा जाता है? तो आइए, पहले इन प्रश्नों के उत्तर खाजने का प्रयास करेंगे ताकि उपन्यास के रचना वैशिष्ट्य को आसानी से समझ सकेंगे।

उपन्यास में एक प्रधान कथा के इर्द-गिर्द अनेक उप-कथाएँ बुनी जाती हैं। इसमें जीवन का व्यापक चित्र अंकित होता है। कथा को विस्तार देने के लिए पात्रों के चरित्र का चित्रण किया जाता है। उसके लिए अनेक घटनाओं का समावेश करना पड़ता है। उपन्यास की रचना वैशिष्ट्य पर विचार करेंगे तो आप पाएँगे कि -

1. उसमें किसी घटना का विस्तृत वर्णन रहता है।
2. किसी स्थान विशेष और समय से घटना का संबंध होता है।
3. हर रचनाकार घटना को अपने ढंग से प्रस्तुत करता है।
4. यह घटना किसी पात्र या पात्रों से संबंधित होती है।
5. पात्र आपस में वार्तालाप करते हैं।
6. रचनाकार किसी न किसी उद्देश्य से ही रचना का सूत्रपात करते हैं।

किसी भी उपन्यास में इन बातों का समावेश होना आवश्यक है।

बोध प्रश्न

- उपन्यास के रचना वैशिष्ट्य पर ध्यान देने से क्या स्पष्ट होता है?

1.4 पाठ सार

छात्रो! आप इस इकाई को सावधानीपूर्वक पढ़ा होगा। आपने देखा कि उपन्यास गद्य साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है। जिस बात को पद्य में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता उसे उपन्यास के माध्यम से सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया जा सकता है। जन-जीवन के अत्यधिक निकट होने के कारण आरंभिक समय से लेकर वर्तमान समय तक उपन्यास ने अपनी जनप्रियता को बनाए रखा है।

आप जान ही चुके हैं कि उपन्यास के महत्वपूर्ण तत्व हैं कथावस्तु, चरित्र चित्रण, परिवेश, संवाद, शैली और उद्देश्य। उपन्यास के स्वरूप निर्धारण में इन तत्वों का योगदान महत्वपूर्ण है। आपने इस इकाई में उपन्यास की विविध परिभाषाओं से भी परिचित हो चुके हैं जिससे उपन्यास के स्वरूप का अंदाजा लगाया जा सकता है। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि उपन्यास उस रचना को कह सकते हैं जो मानव जीवन के किसी विशेष पक्ष को हमारे निकट

रखे। वह मानव समाज की विषमताओं, समस्याओं और बढ़ती आवश्यकताओं को सफल रूप से अभिव्यक्त करता है।

उपन्यासों के तत्वों के आधार पर उपन्यासों को सामाजिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक, चरित्र प्रधान, घटना प्रधान, भाव प्रधान, पौराणिक, मनोवैज्ञानिक, ग्रामीण, आंचलिक, शहरी, आधुनिकता बोध से युक्त आदि वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पहले के उपन्यासों पर दृष्टि केंद्रित करने से यह बात स्पष्ट होती है कि कथा का शृंखलाबद्ध ढंग से विस्तार होता है। अर्थात आरंभ, मध्य और अंत सुनिश्चित होता है। लेकिन अब ऐसी स्थिति नहीं है। कथा कहीं से भी आरंभ हो सकती है और कहीं भी अंत।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. 'न्यास' शब्द में 'उप' उपसर्ग जुड़ने से उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति हुई। 'उप' उपसर्ग का अर्थ है समीप तथा 'न्यास' शब्द का अर्थ है रखना। अतः कहा जा सकता है कि उपन्यास का शाब्दिक अर्थ है 'समीप रखना'।
2. उपन्यास में मानव जीवन का चित्रण होता है। इस विधा में मनुष्य के आस-पास के परिवेश को देखा जा सकता है।
3. अलग-अलग भाषाओं में उपन्यास का शब्दगत अर्थ अलग-अलग है। हिंदी में अंग्रेजी के 'नॉवेल' के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
4. उपन्यास एक एसी गद्य विधा है जिसे 'जीवन का महाकाव्य' कहा जा सकता है। क्योंकि यह मानव जीवन के समूचे परिदृश्य को कल्पनात्मकता के साथ प्रस्तुत करता है।
5. उपन्यास के प्रमुख रचना तत्व हैं - कथावस्तु, चरित्र चित्रण, संवाद, परिवेश, भाषा शैली और उद्देश्य।
6. मोटे तौर पर उपन्यास को दो तत्वो में बाँटा जा सकता है - 1. कथा तत्व और 2. संरचना तत्व।
7. कथा तत्व के अंतर्गत कथा, घटनाएँ, अनुभव, लेखक का दृष्टिकोण, विचार और उद्देश्य स्वतः समाहित हो जाएँगे तथा संरचना तत्व के अंतर्गत चरित्र चित्रण, परिवेश, कथन भंगिमा (शैली), भाषा आर संवाद आ जाते हैं। ये सभी तत्व एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे को सहायता देते हैं।
8. उपन्यास विधा का वर्गीकरण उपन्यास के तत्वों अर्थात कथावस्तु, पात्रों के चरित्र चित्रण, परिवेश, शैली और प्रतिपाद्य के आधार पर किया जाता है।

1.6 शब्द संपदा

1. अंतर्मुखी = आत्मकेंद्रित
2. अप्रासंगिक = विषय से असंबद्ध
3. कलेवर = आकार
4. तिलिस्मी = जादू या चमत्कार का वर्णन हो
5. बहिर्मुखी = बाहर की दुनिया में रुचि लेना वाला

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. उपन्यास की परिभाषाओं के आधार पर उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. 'उपन्यास को जीवन का महाकाव्य कहा जाता है।' इस उक्ति को उपन्यास के रचना तत्वों के आधार पर निरूपित कीजिए।
3. उपन्यासों के विभिन्न प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. उपन्यास किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. उपन्यास के रचना वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।
3. उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाने में पात्रों की भूमिका निरूपित कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. 'नंगातलाई का गाँव' के रचनाकार कौन हैं? ( )
   (अ) प्रेमचंद (आ) विश्वनाथ त्रिपाठी
   (इ) यशपाल (ई) चित्रा मुद्गल

2. 'आदमी स्वर्ग में' किस प्रकार का उपन्यास है? ( )
   (अ) सामाजिक (आ) पौराणिक
   (इ) ऐतिहासिक (ई) पारिवारिक

3. 'मैला आँचल' किस प्रकार का उपन्यास है? ( )
   (अ) कथावस्तु प्रधान (आ) परिवेश प्रधान
   (इ) इतिहास प्रधान (ई) चरित्र प्रधान

4. पत्रात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास कौन सा है? ( )
   (अ) अनामदास का पोता (आ) परितप्त लंकेश्वरी
   (इ) नाला सोपारा (ई) गोदान

5. इनमें से कौन-सा तत्व कथा तत्व नहीं हैं? ( )
   (अ) कथा (आ) घटनाएँ
   (इ) कथन भंगिमा (ई) अनुभव

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. जीवन के .... को अभिव्यक्त करने की विशेषता सबसे अधिक उपन्यास में है।
2. जन-जीवन के अत्यधिक निकट होने के कारण आरंभिक समय से लेकर वर्तमान समय तक उपन्यास ने अपनी.................... को बनाए रखा है।
3. पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने में .... सहायक बनते हैं।
4. उपन्यास एक ऐसी गद्य विधा है जिसे जीवन का........... कहा जा सकता है।

III. सुमेल कीजिए

1. चारुचंद्रलेखा (अ) प्रेमचंद
2. बुनियाद (ब) नरेंद्र कोहली

3. सेवासदन	(स) मनोहर श्याम जोशी
4. वसुदेव	(द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार, हरिमोहन
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र

इकाई 3 : स्वातंत्र्यतापूर्व हिंदी उपन्यास

रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 मूल पाठ : स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास
3.3.1 हिंदी का पहला उपन्यास
3.3.2 आरंभिक उपन्यास : भारतेंदु युग
3.3.3 आरंभिक उपन्यास : द्विवेदी युग
3.3.4 प्रेमचंद का आगमन और योगदान
3.3.5 प्रेमचंद युगीन उपन्यास
3.3.6 प्रेमचंदोत्तर उपन्यास : प्रगतिवाद काल
3.3.7 प्रेमचंदोत्तर उपन्यास : प्रयोगवाद काल
3.4 पाठ सार
3.5 पाठ की उपलब्धियाँ
3.6 शब्द संपदा
3.7 परीक्षार्थ प्रश्न
3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

छात्रो! अब तक के अध्ययन से आप हिंदी गद्य की विकास यात्रा और उपन्यास के तत्वों से परिचित हो चुके हैं। आप इस इकाई में उपन्यास के उद्भव और विकास की जानकारी प्राप्त करेंगे। आप यह जान ही चुके हैं कि उपन्यास एक ऐसी सशक्त गद्य विधा है जिसके माध्यम से तमाम परिस्थितियों का चित्रण बखूबी किया जा सकता है। इस इकाई के अध्ययन से आप यह जान जाएँगे कि स्वतंत्रता से पूर्व स्वाधीनता आंदोलन के दौरान देश में जो उथल-पुथल मचा हुआ था उसकी अभिव्यक्ति हिंदी उपन्यासों में किसी न किसी रूप में हुई है।

3.2 उद्देश्य

छात्रो! आप इस इकाई में स्वतंत्रता के पूर्व के हिंदी उपन्यासों के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- हिंदी साहित्य के क्षेत्र में पहले उपन्यास के संबंध में रोचक तथ्यों को जान सकेंगे।
- हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासों के बारे में समझ सकेंगे।
- भारतेंदु और द्विवेदी युग के उपन्यासों के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
- प्रेमचंद के योगदान पर प्रकाश डाल सकेंगे।

- प्रेमचंद युगीन उपन्यास साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास का विकास समझ सकेंगे।
- प्रगतिवाद और प्रयोगवाद काल के हिंदी उपन्यासों के बारे में प्रकाश डाल चर्चा कर सकेंगे।

3.3 मूल पाठ : स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास

छात्रो! आप जान ही चुके हैं कि उपन्यास गद्य साहित्य की सशक्त विधा है। इसका फलक विस्तृत होता है। साहित्यकार इस विधा के माध्यम से मानव जीवन की तमाम परिस्थितियों को बखूबी उजागर करता है। हिंदी उपन्यास के विकास क्रम को अध्ययन की सुविधा हेतु प्रारंभिक, स्वतंत्रतापूर्व और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास के रूप विभाजित किया जा सकता है। इस इकाई में आप स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यासों का अध्ययन करेंगे।

3.3.1 हिंदी का पहला उपन्यास

हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास किसे माना जाए इस संबंध में विद्वानों में मत भेद है। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में यह बताया कि "उपन्यास अपने आरंभ से माध्यमगत रूप में सामाजिक यथार्थ-चित्रण से जुड़ा हुआ है। प्रायः हर साहित्य में तिलिस्मी, ऐयारी, रहस्य और चमत्कार-प्रधान किस्सों से अलग होकर उपन्यास जब अपने पूर्ण-रूप 'रोमांस' से भिन्न एक स्वतंत्र कला-रूप के तौर पर स्थिर होता है तो उसका प्रधान उपजीव्य समाज की विविध विषमताएँ और समस्याएँ ही बनती हैं। हिंदी साहित्य के संदर्भ में ये समस्याएँ दो रूपों में उपजती हैं। एक तो अपनी जातीय रूढ़ियों के कारण और दूसरे विदेशी यूरोपीय संस्कृति की चुनौती सामने आने से। यह संयोग से कुछ अधिक है कि हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' (1882) सांस्कृतिक और जातीय संघर्ष की कथा-वस्तु को उठाता है।" (पृ. 136)।

गोपाल राय यह मानते हैं कि गौरीदत्त द्वारा लिखित उपन्यास 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) को प्रथम उपन्यास का दर्जा मिलना चाहिए। लेकिन इसकी कथावस्तु को लेकर विवाद है कि इसे उपन्यास कहा जाए या लंबी कहानी। कुछ विद्वान श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा रचित 'भाग्यवती' (1877 में इसकी रचना हुई और 1887 में प्रकाशित) को हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। रामचंद्र शुक्ल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में यह लिखा है कि "अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले पहल हिंदी में लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षागुरु' ही निकला था।" (पृ. 310)। इससे पूर्व 1881 में राधाकृष्ण दास का उपन्यास 'निःसहाय हिंदू' लिखा जा चुका था लेकिन इसका प्रकाशन 1890 में हुआ। 1886 में प्रकाशित बालकृष्ण भट्ट के 'नूतन ब्रह्मचारी' को प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास कौन-सा है?

- हिंदी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास कौन-सा है?

3.3.2 आरंभिक उपन्यास : भारतेंदु युग

हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में हिंदी उपन्यासों की परंपरा आरंभ होती है। इसका जन्म एक तरह से सुधारवादी आंदोलन और पुनरुत्थान कालीन स्थितियों के कारण माना जा सकता है। इस विधा में मनुष्य के समस्त पक्षों का समावेश होता है।

भारतेंदु युग हिंदी उपन्यास साहित्य का उद्भव काल है। इस युग के लेखकों पर अंग्रेजी एवं बांग्ला उपन्यासों का प्रभाव था। इस युग के उपन्यासों में मुख्य रूप से तीन प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं – 1. सामाजिक सुधार, 2. तिलिस्मी, ऐयारी, जासूसी तथा रोमानी प्रवृत्ति, 3. अनुवाद।

इस युग के अधिकांश उपन्यासों में समाज सुधार की भावना को देखा जा सकता है। ये उद्देश्यपरक उपन्यास हैं। आरंभ में लेखक अपना उद्देश्य स्पष्ट कर देते हैं। सामाजिक कुरीतियों को सामने लाकर उनका विरोध करना तथा आदर्श समाज एवं परिवार की स्थापना करना इस युग के उपन्यासों का प्रमुख लक्ष्य था। बालकृष्ण भट्ट, श्रीनिवास दास, किशोरीलाल गोस्वामी, राधाकृष्ण दास, लज्जाराम शर्मा आदि इस धारा के मुख्य उपन्यासकार हैं। दूसरी प्रवृत्ति है ऐयारी और तिलिस्मी। देवकीनंदन खत्री, गोपालदास गहमरी, ठाकुर जगमोहन सिंह के उपन्यासों में प्रमुख रूप से इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है। तीसरी प्रवृत्ति है अनुवाद। हिंदी में उपन्यास विधा का आविर्भाव अंग्रेजी एवं बांग्ला उपन्यासों के प्रभाव से हुआ। पहले हिंदी में जो उपन्यास आए उनमें अनुवाद अधिक थे। शेक्सपीयर, रवींद्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय, बंकिमचंद्र चटर्जी आदि उपन्यासकारों के उपन्यास हिंदी पाठकों के समक्ष अनुवादों के माध्यम से उपस्थित हुए।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास' में यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक युग के उपन्यास लेखन भारतेंदु युग से ही आरंभ हो गया था। भारतेंदु ने 'पूर्णप्रकाश और चंद्रप्रभा' नाम के सर्वप्रथम सामाजिक उपन्यास लिखा था। इसमें पूर्ण प्रकाश नायक है और चंद्रप्रभा नायिका। इस उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है वृद्ध-विवाह का खंडन और स्त्री शिक्षा का समर्थन। "इस उपन्यास में भारतेंदु ने नारीजाति के नवीन अभ्युदय का संदेश दिया और दीर्घकालीन से चली आती हुई सड़ी-गली रूढ़ियों का विरोध किया।" (पृ. 219)।

लाला श्रीनिवास दास के उपन्यास 'परीक्षा गुरु' को शुक्ल जी ने अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास कहा है। इसका प्रथम संस्करण कब प्रकाशित हुआ इसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है लेकिन इसका दूसरा संस्करण 1886 में हुआ था।

राधाकृष्ण दास का निःसहाय हिंदू (1886), बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी (1886), सौ अजान और एक सुजान (1892), मेहता लज्जाराम शर्मा का स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी

(1899), किशोरीलाल गोस्वामी के त्रिवेणी (1889), लवंगलता (1890), गोपालराम गहमरी का बड़ा भाई और सास पतोहू (1898), आदि उपन्यास इसी समय लिखे गए।

इस काल के उपन्यास लेखकों पर बांग्ला और संस्कृत साहित्य का प्रभाव दिखाई देता है। प्रतापनारायण मिश्र, राधाचारण गोस्वामी, गदाधर सिंह, राधाकृष्ण दास, कार्तिक प्रसाद खत्री आदि ने बांग्ला ने अनेक उपन्यासों के अनुवाद किए। "यह परंपरा बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक अबाध रूप से चलती रही। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक हिंदी गद्य की सर्वतोमुखी उन्नति हो चुकी थी। आधुनिक ढंग के नाटकों और उपन्यासों का सूत्रपात हो चुका था, नए ढंग के निबंध लिखे जा रहे थे, वैयक्तिक दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा हो चुकी थी, और देश की भिन्न-भिन्न भाषाओं से प्रेरणा लेकर नए-नए साहित्यांगों की सृष्टि का बीज बोया जा रहा था।" (हजारी प्रदास द्विवेदी, हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 220)

तिलिस्मी और ऐयारी उपन्यासों में देवकीनंदन खत्री के उपन्यास चंद्रकांता (1882) और चंद्रकांता संतति (चौबीस भाग 1986) लोकप्रिय हैं। इन उपन्यासों के अनुकरण पर और भी कई उपन्यास लिखे गए थे। हिंदी को लोकप्रिय बनाने में इन उपन्यासों का बहुत बड़ा हाथ है क्योंकि इन उपन्यासों को पढ़ने के लिए कई उर्दूजीवी लोगों ने हिंदी सीखी। जासूसी उपन्यासों में गोपालराम गहमरी के 'अद्भुत लाश' (1896) और 'गुप्तचर' (1899) उल्लेखनीय हैं।

इस युग में महत्वपूर्ण धारा सामाजिक उपन्यासों की है। इसकी शुरूआत परीक्षा गुरु से हुआ था। "इस युग के सर्वप्रथम उपन्यास लेखक किशोरीलाल गोस्वामी माने गए हैं। गोस्वामी जी ने मानवीय प्रेम के विविध पक्षों के उद्घाटन में ही अपनी शक्ति का अपव्यय किया। वस्तुतः जीवन के यथार्थ को कला में ढालने वाले उपन्यासों के रचना का वातावरण अभी नहीं बन पाया था। इस शैली का आरंभ आगे चल कर द्विवेदी युग में हुआ।" (सं. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 462)

बोध प्रश्न

- उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में हिंदी उपन्यासों की परंपरा आरंभ किन कारणों से हुआ?
- भारतेंदु युग के उपन्यासों की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या थीं?
- भारतेंदु के उपन्यास 'पूर्णप्रकाश और चंद्रप्रभा' का मुख्य उद्देश्य क्या था?
- भारतेंदु युग के प्रमुख उपन्यासकारों के नाम बताइए।

3.3.3 आरंभिक उपन्यास : द्विवेदी युग

द्विवेदी युग में रचित गद्य साहित्य के मूल में सांस्कृतिक चेतना है। विदेशी शासन के प्रति जनता के असंतोष में वृद्धि हुई। "राष्ट्रीय चेतना क्रमशः विकसित होती हुई एक निश्चित लक्ष्य – पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति की सिद्धि के संकल्प में परिणत हुई, जिसकी अभिव्यक्ति इस युग के साहित्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में ध्यान आकृष्ट करती है। ××× आलोच्य काल में

आर्यसमाज और सनातन धर्म दोनों का द्वंद्व चलता रहा, किंतु यह निर्विवाद है कि धार्मिक-सामाजिक क्षेत्र में क्रमशः उदारता और सहिष्णुता की भावनाएँ फैलती जा रही थीं। यह राजनीतिक जागरूकता, आर्थिक समझदारी, सामाजिक-धार्मिक उदारता तथा राष्ट्रप्रेम मुख्यतः शिक्षित मध्यवर्ग की जनता के जागरण का परिणाम था।" (सं नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 495)। इस काल के गद्य साहित्य के प्रत्येक विधा में अंतर्निहित चेतना एक ही है - राष्ट्रीय जागरण और समाज सुधार की भावन।

द्विवेदी काल में सामाजिक जीवन की यथार्थ समस्याओं को लेकर गंभीर उपन्यासों की रचना कम हुई। इस युग में पाठक रहस्यमयी घटनाओं के कारण एक अपरिचित संसार में भटकते रहते थे। प्रवृत्ति भेद के आधार पर इस काल के उपन्यासों को पाँच वर्गों में बाँटा जा सकता है – तिलिस्मी-ऐयारी, जासूसी, घटनाप्रधान, ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यास।

छात्रो! आप जान ही चुके हैं कि तिलिस्मी और ऐयारी उपन्यासों की परंपरा देवकीनंदन खत्री द्वारा भारतेंदु युग में ही आरंभ हो गई थी। द्विवेदी युग में भी यह परंपरा जीवित रही। देवकीनंदन खत्री के काजर की कोठरी (1902), अनूठी बेगम (1905), गुप्त गोदना (1906), भूतनाथ (प्रथम छह भाग 1906) आदि उपन्यास इसी युग में आए। हरेकृष्ण जौहर के मयंकमोहिनी या मायामहल, कमलकुमारी, भयानक खून और रामलाल वर्मा के पुतली महल भी उल्लेखनीय हैं। देवकीनंदन खत्री के पुत्र दुर्गाप्रसाद खत्री ने भूतनाथ के शेष भागों को लिखकर इस परंपरा को आगे बढ़ाया।

जासूसी उपन्यासों के प्रवर्तक के रूप में गोपालदास गहमरी को जाना जाता है। इन्होंने अंग्रेजी के प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार आर्थर कानन डायल से प्रभावित होकर उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'ए स्टडी इन स्कारलेट' (1887) को 'गोविंदराम' (1905) शीर्षक से हिंदी में रूपांतरित भी किया। सरकटी लाश (1900), चक्करदार चोरी (1901), जासूस की भूल (1901), जासूस पर जासूसी (1904), जासूस चक्कर में (1906), इंद्रजालिक जासूस (1910), गुप्त भेद (1913), जासूस की ऐयारी (1914) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। रामलाल वर्मा, किशोरीलाल गोस्वामी आदि ने भी इस क्षेत्र में कुछ प्रयोग अवश्य किए।

घटना प्रधान उपन्यासों में वस्तुतः किसी रहस्यमय कोने का उद्घाटन किया जाता था। विट्ठलदास नागर का 'किस्मत का खेल' (1905), बाँकेलाल चतुर्वेदी का 'खौफ़नाफ़ खून' (1912), निहालचंद वर्मा का 'प्रेम का फल या मिस जौहरा' (1913), प्रेमविलास वर्मा का 'प्रेममाधुरी या अनंगकांता' तथा दुर्गाप्रसाद खत्री का 'अद्भुत भूत' (1916) इसी शैली के उपन्यास हैं।

किशोरीलाल गोस्वामी, गंगाप्रसाद गुप्त, जयराम दास गुप्त और माध्यवप्रसाद शर्मा इस काल के उल्लेखनीय ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। किशोरीलाल गोस्वामी के तारा व क्षात्रकुलकमलिनी, सुल्तान रजिया बेगम वा रंगमहल में हलाहल और लखनऊ की कब्र व शाही महलसरा इस काल के चर्चित ऐतिहासिक उपन्यास हैं। गंगाप्रसाद गुप्त के ऐतिहासिक उपन्यासों में नूरजहां, कुमारसिंह सेनापति और हम्मीर उल्लेखनीय हैं तो जयराम प्रसाद गुप्त के काश्मीर

पतन, नवाबी परिस्तान वा वाजिद अली शाह, मल्का चाँद बीबी आदि प्रसिद्ध हैं। इस युग के सशक्त ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं किशोरीलाल गोस्वामी। "उपन्यास-रचना में इनका उद्देश्य प्रेम का विज्ञान प्रस्तुत करना था। इसलिए इनके द्वारा रचित ऐतिहासिक उपन्यासों के कथानक भी प्रेम की विविधता एवं रहस्यमयता के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। इनके ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास-सम्मत सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का चित्रण नहीं हुआ है तथा अनेक स्थलों पर कालदोष भी आ गया है।" (सं नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 499)

इस काल के सामाजिक उपन्यासकारों में लज्जाराम शर्मा (आदर्श दंपति, आदर्श हिंदू), किशोरीलाल गोस्वामी (लीलावती व आदर्श सती, चपला व नव्य समाज, पुनर्जन्म व सौतिया डाह), अयोध्यासिंह उपाध्याय (अधखिला फूल), राधिकारमण प्रसाद (नवजीवन व प्रेमलहरी) आदि उल्लेखनीय हैं। इस युग के सामाजिक उपन्यासों में सुधारवादी जीवन दृष्टि प्रधान है।

द्विवेदी युगीन उपन्यासों की परंपरा ने आगे चलकर प्रेमचंद की उपन्यास रचना के लिए पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। सामाजिक उपन्यासों का लक्ष्य समाज सुधार था। प्रेमचंद ने भी इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर उपन्यास लिखने लगे। उनके उपन्यास प्रेमा (1907), रूठी रानी (1907) और सेवादसन (1918) इसी युग में प्रकाशित हुए।

बोध प्रश्न

- द्विवेदी युगीन प्रमुख ऐतिहासक रचनाकरों के नाम बताइए।
- द्विवेदी युगीन सामाजिक उपन्यासों का प्रमुख लक्ष्य क्या था?
- द्विवेदी काल के गद्य साहित्य में अंतर्निहित चेतना क्या थी?
- द्विवेदी काल के गद्य लेखकों का प्रधान लक्ष्य क्या प्रतीत होता है?
- प्रवृत्ति के आधार पर द्विवेदी काल के उपन्यासों को किस प्रकार बाँटा जा सकता है?
- जासूसी उपन्यासों के प्रवर्तक कौन हैं?

3.3.4 प्रेमचंद का आगमन और योगदान

हिंदी उपन्यास साहित्य के संदर्भ में छायावाद युग को प्रेमचंद युग कहा जाता है क्योंकि सेवासदन का प्रकाशन हिंदी उपन्यास क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण घटना थी। द्विवेदी युग के उपन्यासों में अजीबोगरीब घटनाओं के द्वारा पाठकों में कुतूहल पैदा किया जाता था। यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए साधन नहीं मिले। अतः हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन से उपन्यास विधा सशक्त रूप से विकसित होने लगा। प्रेमचंद ने भारतीय जनता की समस्याओं को समझकर उन्हें उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इसीलिए उनके उपन्यास आम जनता की व्यथा-कथा को उजागर करते हैं। प्रेमचंद पर महात्मा गांधी का प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने महात्मा गांधी की पुकार पर सरकारी नौकरी तक छोड़ दी।

प्रेमचंद के संदर्भ में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कुछ रोचक तथ्यों को उजागर किया। अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास' में उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रेमचंद अपने आपको सदा

मजदूर समझते थे। प्रेमचंद कहा करते थे - "मैं मजदूर हूँ, मजदूरी के बिना मुझे भोजन करने का अधिकार नहीं।" इसका यह अर्थ नहीं कि "उन्हें मजदूरी करना लाजिमी था, बल्कि इसलिए कि उनके दिमाग में कहने लायक इतनी बातें आपस में धक्का-मुक्की करके निकलना चाहती थीं कि वे उन्हें प्रकट किए बिना रह नहीं सकते थे। उनके हृदय में इतनी वेदनाएँ, इतने विद्रोहभाव और इतनी चिनगारियाँ भरी थीं कि उन्हें सम्हाल नहीं सकते थे। उनका हृदय अगर इन्हें प्रकट न कर देता तो वे शायद पहले ही बंधन तोड़ देते।" (पृ. 228)।

प्रेमचंद का व्यक्तित्व सरल था। वे धार्मिक आडंबरों को ढोंग समझते थे। उनकी दृष्टि में मनुष्यता सबसे श्रेष्ठ है। वे पददलित, निस्सहाय, निरीह, अपमानित और शोषित जनता की आवाज थे। पाठकों को सहज रूप से झोंपड़ियों से लेकर महलों तक, छोटे-छोटे खोमचेवालों से लेकर उच्च पद पर आसीन व्यक्तियों तक ले जाने की कला प्रेमचंद में विद्यमान थी।

प्रेमचंद का अपना एक निजी जीवन दर्शन था। वे यह मानते थे कि यदि गरीब इंसान या आम आदमी यह अनुभव कर सकें कि संसार की कोई भी शक्ति उन्हें नहीं दबा सकती तो वे निश्चय ही अजेय होंगे। इसके लिए तो बस उन्हें अपने भीतर की शक्ति को पहचानना होगा। बाहरी बंधन को वे दो प्रकार के मानते थे। एक का नाम संस्कृति है तो दूसरे का संपत्ति। एक का वाहक धर्म है तो दूसरे का राजनीति। प्रेमचंद इन दोनों को मनुष्यता के बाधक मानते थे। इसीलिए उन्होंने 'गोदान' में मेहता के मुख से कहलवाया है कि "मैं भूत की चिंता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता। भविष्य की चिंता हमें कायर बना देती हैं। भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवन शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों तथा इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं। उठने का नाम नहीं लेते।" (गोदान, पृ. 179)

प्रेमचंद के अनुसार प्रेम मानसिक गंदगी को दूर करके संघर्ष करने की शक्ति प्रधान करता है। जब प्रेमचंद के पात्र प्रेम करने लगते हैं तो वे सेवा की ओर अग्रसर होते हैं तथा अपना सर्वस्व त्याग देते हैं क्योंकि जहाँ सेवा और त्याग नहीं, वहाँ प्रेम भी नहीं। प्रेमचंद ने आरंभ में आदर्शवादी उपन्यासों का सृजन किया। लेकिन धीरे-धीरे वे यथार्थ की ओर मुड़े। उनके लेखन को 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' के नाम से जाना जाता है। सेवासदन (1918), प्रेमाश्रम (1921), रंगभूमि (1925), कायाकल्प (1926), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि (1932) और गोदान (1936) उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनका अधूरा उपन्यास है मंगलसूत्र (1936)।

भाषा और शिल्प की दृष्टि से प्रेमचंद ने उपन्यास साहित्य को विशिष्ट स्तर पर पहुँचाया। उनके उपन्यासों की भाषा बोलचाल की भाषा (हिंदुस्तानी) है। पात्रों एवं परिवेश के अनुरूप उनके उपन्यासों में भाषा वैविध्य को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के उपन्यासों में क्या पाया जाता है?
- प्रेमचंद के अनुसार मनुष्य के बाहरी बंधन क्या है?

- प्रेमचंद का व्यक्तित्व कैसा था ?
- प्रेमचंद के लेखन को किस नाम से जाना जाता है?
- प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास कौन-सा है?

3.3.5 प्रेमचंद युगीन उपन्यास

प्रेमचंद युगीन लेखकों की संख्या बहुत ज्यादा है। लेकिन यहाँ कुछ प्रमुख उपन्यासकारों और उनके उपन्यासों की चर्चा करेंगे। विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने प्रेमचंद का अनुकरण करते हुए 'माँ' और 'भिखारिणी' शीर्षक उपन्यास लिखे। प्रेमचंद के अनुकरणकर्ताओं में चतुरसेन शास्त्री और प्रतापनारायण श्रीवास्तव प्रमुख हैं। चतुरसेन शास्त्री ने हृदय की परख (1918), हृदय की प्यास (1932), अमर अभिलाषा (1932) और आत्मदाह (1937) शीर्षक उपन्यासों की रचना की। विदा (1929) और विजय (1937) प्रतापनारायण श्रीवास्तव के आदर्शवादी उपन्यास हैं। 'विदा' में उच्छवर्गीय समाज का चित्रण है तो 'विजय' में विधवा समस्या का चित्रण है।

शिवपूजन सहाय का 'देहाती दुनिया' (1926) शीर्षक उपन्यास रूढ़ि को तोड़ने की दिशा में साहसिक कदम था। बेचन शर्मा 'उग्र' ने चंद हसीनों के खतूत (1927), दिल्ली का दलाल (1927), बुधुआ की बेटी (1928), शराबी (1930) आदि उपन्यासों में समाज की बुराइयों को प्रस्तुत किया था। ऋषभचरण जैन भी उग्र की भाँति समाज के वर्जित विषयों पर कलम चलाई। उन्होंने दिल्ली का कलंक, दिल्ली का व्यभिचार, वेश्यापुत्र आदि उपन्यासों की रचना की।

प्रेमचंद के समकालीनों में जयशंकर प्रसाद प्रसिद्ध थे क्योंकि उन्होनें कविता और नाटक के साथ-साथ कंकाल (1929) और तितली (1934) की रचना द्वारा उपन्यासकार के रूप में अपना एक निजी स्थान अर्जित कर चुके थे। जहाँ तितली ग्रामीण और कृषक जीवन को उजागर करता है वहीं कंकाल के पात्र असामान्य हैं। वे असामान्य मनोविज्ञान के सिद्धांतों के अनुरूप पात्रों को गढ़ लेते थे। लेकिन उपन्यासकार के रूप में सफल नहीं हो पाए क्योंकि उनकी भाषा उपन्यास रचना के अनुरूप नहीं थी बल्कि वह जरूरत से ज्यादा आडंबरयुक्त थी।

परख, सुनीता और त्यागपत्र जैनेंद्र के प्रमुख उपन्यास हैं। उनके उपन्यासों की कहानी अधिकतर परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। जैनेंद्र अपने पात्रों को पहेली बनाकर छोड़ देते थे। उन्होंने हिंदी उपन्यास को नई भाषा और नया शिल्प प्रधान किया। उनकी भाषा स्वगत आलाप है। अर्थात खुद से बात करना।

इस युग के अन्य उपन्यासकारों में भगवती चरण वर्मा (चित्रलेखा, 1934), राधिकारमण प्रसाद (राम-रहीम, 1937), सियाराम शरण गुप्त (गोद, 1932), भगवतीप्रसाद वाजपेयी (प्रेमपथ, अनाथ पत्नी), वृंदावन लाल वर्मा (संगम, कुंडलीचक्र), राहुल सांकृत्यायन (शैतान की आँख, सोने की ढाल), सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा) आदि उल्लेखनीय हैं। इन लेखकों ने परवर्ती लेखकों के लिए मार्गदर्शन किया।

बोध प्रश्न

- जयशंकर प्रसाद सफल उपन्यासकार क्यों नहीं बन सके?
- जैनेंद्र की भाषा किस प्रकार की है?
- प्रेमचंद युगीन प्रमुख रचनाकारों का नाम बताइए।

3.3.6 प्रेमचंदोत्तर उपन्यास : प्रगतिवाद काल

प्रेमचंदोत्तर युग हिंदी गद्य के सर्वांगीण उन्नति का युग है। इस युग में भारत ने पराधीनता की बड़ियों को तोड़कर स्वाधीनता की सुखद सांस ली। 'शेखर : एक जीवनी' (अज्ञेय) के प्रकाशन के साथ-साथ हिंदी उपन्यास की दिशा में नया मोड़ा आया। कुछ आलोचकों ने इसकी प्रशंसा की तो कुछ आलोचकों ने इसे असंबद्ध माना। कुछ भी हो कथा, शिल्प और भाषा की दृष्टि से यह परंपरा से हटकर एक नया प्रयोग था। इसे ही आज आधुनिकता की संज्ञा दी जाती है। "इसका मूल मन्तव्य है - स्वतंत्रता की खोज। यह खोज अपने को सबसे काट कर नहीं की गई है, बल्कि अन्य संदर्भों में, यानी मानवीय परिस्थितियों के बीच की गई है। उसकी तलाश में शेखर अनेक प्रकार के आंतरिक संघर्षों से जूझता और भीतरी तनावों से गुजरता है, किंतु अपने निषेधात्मक रोमैन्टिक विद्रोह को लेकर वह बहिर्मुखी नहीं हो पाता। फलस्वरूप सारा संघर्ष मौखिक होकर रह जाता है, क्रिया (एक्ट) में नहीं बदलता।" (सं नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 689)।

प्रेमचंदोत्तर युगीन उपन्यासों को ऐतिहासिक, सामाजिक, मानवतावादी, स्वच्छंदतावादी, प्रकृतवादी, व्यक्तिवादी, मनोविश्लेषणवादी, यथार्थवादी और आंचलिक वर्गों में रखा जा सकता है। इनके अतिरिक्त कई उपन्यासों को आधुनिकता और जनवाद के केंद्र में रखा जा सकता है। यद्यपि इस युग के उपन्यासों को एक निश्चित प्रवृत्ति के अंतर्गत रखना कठिन है लेकिन उपर्युक्त वर्गीकरण महज अध्ययन की सुविधा के लिए किया जाता है।

सामाजिक उपन्यासकारों में भगवती चरण वर्मा (चित्रलेखा, टेढ़े मेढ़े रास्ते, आखिरी दाँव, भूले बिसरे चित्र, रेखा, सीधी सच्ची बातें तथा सबहिं नचावत राम गोसाईं), भगवती प्रसाद वाजपेयी (टूटा टी सेट, चलते-चलते, विश्वास का बल, सपना बिक गया), अमृतलाल नागर (बूंद और समुद्र), उदयशंकर भट्ट (शेष-अशेष), सियाराम शरण गुप्त (गोद, अंतिम आकांक्षा), विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', सेठ गोबिंददास तथा विष्णु प्रभाकर (निशिकांत, तट के बंधन), यशपाल (दिव्या, डादा कामरेड, झूठा सच) प्रमुख हैं। उपन्यासकार के रूप में भगवती चरण वर्मा को प्रतिष्ठित करने वाला उपन्यास 'चित्रलेखा' पाप और पुण्य की समस्या को नाटकीय शैली में उपस्थित करता है।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों में व्यक्ति के बाह्य संघर्ष के स्थान पर आंतरिक संघर्ष पर अधिक बल दिया जाता है। इस वर्ग के उपन्यासकारों में जैनेंद्र का नाम अग्रपंक्ति में लिया जाता है। इनके अतिरिक्त अज्ञेय (शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप), इलाचंद्र जोशी (घृणामयी, मुक्तिपथ, सुबह के भूले, जहाज के पंछी, निर्वासित), देवराज (पथ की खोज, बाहर-भीतर, रोड़े

और पत्थर, अजय की डायरी), धर्मवीर भारती (गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा), प्रभाकर माचवे (परंतु, साँचा), नरेश मेहता (डूबते मस्तूल), भरत भूषण अग्रवाल (लौटती लहरों की बाँसुरी), निर्मल वर्मा (वे दिन) आदि प्रमुख उपन्यासकार हैं।

इस युग में ऐतिहासिक उपन्यासों के दौर में इतिहास संबंधी एक नया दृष्टिकोण सामने आया। इस श्रेणी के उपन्यासकारों में वृंदावनलाल वर्मा (झांसी की रानी, कचनार, मृगनयनी, अहिल्याबाई), हजारीप्रसाद द्विवेदी (बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्रलेख, पुनर्नवा, अनमदास पोथा), राहुल सांकृत्यायन (सिंह सेनापति), रंगेय राघव (मुर्दों का टीला) आदि उल्लेखनीय हैं।

ग्रामांचल के उपन्यासों को आंचलिक कहकर सीमित कर दिया जाता है। फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आंचल), नागार्जुन (बलचनमा), उदयशंकर भट्ट (सागर, लहरें और मनुष्य), रामदरश मिश्र (पानी का प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब), हिमांशु श्रीवास्तव (रथ के पहिए), राजेंद्र अवस्थी (जंगल के फूल), विवेकी राय (बबूल), सच्चिदानंद धूमकेतु (माटी की महक) इस श्रेणी के उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं।

इस युग में मन्मथनाथ गुप्त, भैरवप्रसाद गुप्त, अमृतराय, लक्ष्मीनारायण लाल, राजेन्द्र यादव आदि अनेक उपन्यासकार सामने आए।

बोध प्रश्न

- ‘शेखर : एक जीवनी का मूल मन्तव्य क्या है?
- प्रेमचंदोत्तर युग के कुछ प्रमुख उपन्यासकारों और उनके उपन्यासों का नाम बताइए।
- मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों में किस पर बल दिया जाता है?

3.3.7 प्रेमचंदोत्तर उपन्यास : प्रयोगवाद काल

हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद वस्तुतः आधुनिक विचारधारा है। प्रगतिवाद के जनवादी दृष्टिकोण को विरोध करने की दृष्टि से यह सामने आया। नए प्रतीकों, नए उपमानों एवं नवीन बिंबों के प्रयोग उपन्यासों में भी होने लगे। प्रगतिवाद काल में जैनेंद्र और अज्ञेय ने प्रयोगों में कहानी और चरित्र का पूरा ध्यान रखा। लेकिन इस दौर में “कहानी का तत्व क्षीण हो गया, जिससे कथानक का पुराना रूप विघटित हो गया तथा अपने क्रियाशील के प्रति सचेत एवं तराशे हुए पात्र नहीं रह गए।” (सं नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 699)। इस दौर में उपन्यासों में नए शिल्प देखने को मिला। शिवप्रसाद मिश्र ‘रुद्र’ (बहती गंगा), गिरिधर गोपाल (चाँदनी रात के खंडहर), सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (सोया हुआ जल) के उपन्यास इसी श्रेणी के हैं।

इन उपन्यासों के अतिरिक्त आधुनिकता बोध के उपन्यास सामने आए। “आस्थाहीन समाज, अनिश्चय की स्थिति में लटके हुए इंसान और आत्मनिर्वासन की अभिव्यक्ति देने की पहल मोहन राकेश ने अपने उपन्यास ‘अंधेरे बंद कमरे’ (1961) में की। इसके अनुसार प्रेम कोई शासवात उदात्त मूल्य नहीं रह गया, वैयक्तिक महत्वाकांक्षाएं और आधुनिक जीवन की सफलताएं प्रेम की आंतरिक विवशता में दरारें पैदा कर देती हैं।” (सं नगेंद्र, हिंदी साहित्य का

इतिहास, पृ. 700)। वे दिन (निर्मल वर्मा), मछली मर गई (राजकमल चौधरी), दूसरी बार (श्रीकांत वर्मा), एक पति के नोट्स (महेंद्र भल्ला), डाक बंगला (कमलेश्वर), अपने से अलग (गंगा प्रसाद विमल), पचपन खंबे लाल दीवारें (उषा प्रियंवदा) आदि उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता के बाद स्थितियाँ बदलीं। बदलते सामाजिक स्थितियों, परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखे जाने लगे। उपन्यास एक ऐसी सशक्त साहित्यिक विधा बन चुका है कि समाज की तमाम परिस्थितियों का अंकन किया जाने लगा। छात्रो! स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों के बारे में आप आगे अध्ययन करेंगे।

बोध प्रश्न

- प्रयोगवाद काल के उपन्यासों की क्या विशेषता रही?
- प्रयोगवाद काल के कुछ प्रमुख उपन्यासों और उपन्यासकारों का नाम बताइए।

3.4 पाठ सार

छात्रो! आपने इस इकाई में स्वतंत्रापूर्व हिंदी उपन्यासों का अध्ययन कर चुके हैं। आप समझ ही चुके होंगे कि प्रारंभिक उपन्यास का कालखंड 1877 से 1918 तक माना जाता है। हिंदी साहित्य के पहले उपन्यास के संबंध काफी मतभेद हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' (1882) हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास है। इसमें सांस्कृतिक और जातीय संघर्ष का चित्रण है।

भारतेंदु और द्विवेदी युग के उपन्यासों में सुधारवादी चेतना प्रमख रोप से देखा जा सकता है। इस युग में अनेक उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखकर हिंदी उपन्यास विधा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रेमचंद युग में हिंदी उपन्यासों में अनेक आयाम सामने आए। वस्तुतः प्रेमचंद ने भारतीय जनता की समस्याओं को समझकर उन्हें उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त किया। अतः उनके उपन्यास आम जनता की व्यथा-कथा को उजागर करने में सफल हैं। इस युग में अनेक साहित्यकारों ने आम जनता की पीड़ा को पाठकों के समक्ष रखा। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नए प्रतीकों, नए उपमानों और नवीन बिंबों के प्रयोग होने लगे। भाषा और शिल्प की ऋष्टि से नवीन प्रयोग होने लगे।

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में हिंदी उपन्यासों की परंपरा का प्रारंभ हुआ। इसका जन्म सुधारवादी आंदोलन और पुनरुत्थान कालीन स्थितियों के कारण माना जा सकता है।
2. हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास है लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा गुरु' (1882)।
3. बालकृष्ण भट्ट कृत 'नूतन ब्रह्मचारी' को प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास माना जाता है।

4. भारतेंदु युग हिंदी उपन्यास साहित्य का उद्भव काल है। इस युग के अधिकांश उपन्यासों में समाज सुधार की भावना को देखा जा सकता है। ये उद्देश्यपरक उपन्यास हैं।
5. भारतेंदु युग के उपन्यासों का प्रमुख लक्ष्य था – सामाजिक कुरीतियों को सामने लाकर उनका विरोध करना तथा आदर्श समाज एवं परिवार की स्थापना करना।
6. द्विवेदी युग में रचित गद्य साहित्य के मूल में सांस्कृतिक चेतना और सुधारवादी जीवन दृष्टि है।
7. प्रेमचंद ने भारतीय जनता की समस्याओं को समझकर उन्हें उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त किया। अतः उनके उपन्यास आम जनता की व्यथा-कथा को उजागर करते हैं।
8. प्रेमचंदोत्तर युग हिंदी गद्य के सर्वांगीण उन्नति का युग है। नए प्रतीकों, नए उपमानों और नवीन बिंबों के प्रयोग उपन्यासों में भी होने लगे।

3.6 शब्द संपदा

1. अभ्युदय = उन्नति, उत्थान
2. उपजीव्य = जिसके सहारे जीवन चले, आश्रय
3. ऐतिहासिक = इतिहास से संदर्भित
4. ऐयारी = चालाकी, वेश बदलकर काम निकालना
5. कुरीति = समाज या व्यक्ति को हानि पहुँचाने वाली अनुचित रीति
6. जासूसी = गुप्तचरी
7. तिलिस्मी = अलौकिक व्यवहार
8. रूढ़ि = परंपरा, प्रथा
9. संस्कृति = परंपरा से चली आ रही आचार-विचार
10. सर्वांगीण = जो सभी अंगों से युक्त हो, हर दृष्टि से हर बात में

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. भारतेंदु युगीन आरंभिक उपन्यासों की मुख्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
2. द्विवेदी युगीन उपन्यासों की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।
3. हिंदी उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचंद के योगदान को रेखांकित कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी के प्रथम उपन्यास के संबंध में प्रकाश डालिए।
2. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
3. प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों की विशेषताओं को बताते हुए प्रमुख उपन्यासों का उल्लेख कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. रामचंद्र हुकल के अनुसार हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास कौन-सा है ? ( )
   (अ) भाग्यवती (आ) परीक्षा गुरु (इ) नूतन ब्रह्मचारी (ई) देवरानी जेठानी की कहानी

2. 'अद्भुत लाश' उपन्यास के लेखक कौन हैं? ( )
   (अ) देवकीनंदन खत्री (आ) भारतेंदु हरिश्चंद्र
   (इ) गोपालराम गहमरी (ई) लाला श्रीनिवास दास

3. 'काजर की कोठरी' के लेखक कौन हैं? ( )
   (अ) देवकीनंदन खत्री (आ) भारतेंदु हरिश्चंद्र
   (इ) गोपालराम गहमरी (ई) महावीर प्रसाद द्विवेद

4. इनमें से एक जैनेंद्र का उपन्यास नहीं है? ( )
   (अ) सुनीता (आ) त्यागपत्र (इ) परख (ई) चित्रलेखा

5. भगवती चरण वर्मा के किस उपन्यास में पाप और पुण्य की समस्या पर प्रकाश डाला गया है? ( )

(अ) भूले बिसरे चित्र (आ) टेढ़े-मेढ़े रास्ते (इ) चित्रलेखा (ई) आखिरी दाँव

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. भारतेंदु ने .... नाम के सर्वप्रथम सामाजिक उपन्यास लिखा था।
2. द्विवेदी युग में रचित गद्य साहित्य के मूल में .... चेतना है।
3. जासूसी उपन्यास के प्रवर्तक .... हैं।
4. 'शेखर : एक जीवनी' का मूल मन्तव्य .... है।

III. सुमेल कीजिए

1. लाला श्रीनिवासदास	(अ) डादा कामरेड
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी	(ब) नदी के द्वीप
3. अज्ञेय	(स) परीक्षा गुरु
4. यशपाल	(द) बाणभट्ट की आत्मकथा

3.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, हजारी प्रसाद द्विवेदी

इकाई 4 : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 मूल पाठ : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास
4.3.1 स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज
4.3.2 बदलता ग्रामीण परिवेश
4.3.3 औद्योगीकरण का प्रभाव
4.3.4 पंचवर्षीय योजनाएँ
4.3.5 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास
4.3.5.1 सामाजिक उपन्यास
4.3.5.2 व्यक्तिवादी उपन्यास
4.3.5.3 मनोविश्लेषणवादी उपन्यास
4.3.5.4 आंचलिक उपन्यास
4.3.5.5 मिथकीय उपन्यास
4.3.5.6 ऐतिहासिक उपन्यास
4.3.5.7 अस्तित्ववादी उपन्यास
4.3.5.8 हाशियाकृत समाज से संबद्ध उपन्यास
4.4 पाठ सार
4.5 पाठ की उपलब्धियाँ
4.6 शब्द संपदा
4.7 परीक्षार्थ प्रश्न
4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

छात्रो! आप यह जान चुके हैं कि स्वाधीनता आंदोलन के कारण संपूर्ण समाज में सामाजिक और राजनैतिक उथल-पुथल मचा हुआ था। हिंदी साहित्यकारों ने उन तमाम परिस्थितियों को आत्मसात किया और साहित्य के माध्यम से उन्हें अभिव्यक्ति दी, जनता को जागरूक किया और देश की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने हेतु उन्हें प्रेरित किया। उस समय जनता के पास एकमात्र उद्देश्य था स्वतंत्रता। उस समय का तमाम साहित्य राष्ट्रीय मूल्यों से ओतप्रोत था। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद स्थितियाँ बदलीं। जनता का मोहभंग हुआ। परिणामस्वरूप उदासीनता के लक्षण दिखाई देने लगे। अवसरवादिता और लोभ की प्रवृत्ति मध्यवर्ग में पनपने लगी। शोषक और समाजविरोधी तत्व बढ़ने लगे। औद्योगीकरण और बाजारवाद के कारण सामाजिक स्थितियाँ बदलने लगीं। निम्नवर्ग और मध्यवर्ग बुरी तरह से

पीसने लगा। कुछ समुदाय हाशिये पर जीवन यापन करने पर मजबूर हो गए। अतः अनेक संवेदनशील साहित्यकारों ने अपनी आवाज बुलंद की। इस इकाई में आप स्वतंत्रा के बाद उत्पन्न सामाजिक स्थितियों और उन स्थितियों को उजागर करने वाले उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे।

4.2 उद्देश्य

छात्रो! आप इस इकाई में स्वतंत्रता के बाद के हिंदी उपन्यासों के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- स्वतंत्रता के बाद भारत में उपन्न सामाजिक स्थितियों की जानकारी प्राप्त कर सेकेंगे।
- समूचे परिवेश में जो बदलाव आया उसे समझ सकेंगे।
- औद्योगीकरण और उसका प्रभाव तथा विकास हेतु निर्मित पंचवर्षीय योजनाओं के बारे में बता सकेंगे।
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और उनकी प्रवृत्तियों के बारे में स्पष्ट कर सकेंगे।

4.3 मूल पाठ : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

छात्रो! आप स्वतंत्रतापूर्व उपन्यासों के बारे में अध्ययन कर चुके हैं। उस समय के कुछ प्रमुख उपन्यासकार स्वातंत्र्योत्तरकाल में भी सक्रिय रहें। स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों के बारे में जानकारी प्राप्त करने से पहले स्वतंत्रता के बाद उत्पन्न सामाजिक स्थितियों के बारे में जानना आवश्यक है क्योंकि उनका अंकन साहित्य में होता है।

4.3.1 स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज

स्वस्थ समाज का निर्माण तभी संभव होगा जबकि किसी प्रकार की विषमता, कटुता और भेदभाव न हो। ऐसा तभी संभव है जब हर नागरिक को समान सुविधाएँ प्राप्त होंगी। इसमें दो राय नहीं कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारतीय समाज का विकास हुआ। 15 अगस्त, 1947 में प्राप्त स्वतंत्रता से संपूर्ण देश में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। लेकिन आजादी के बाद हमें भारत-पाक विभाजन के रूप में एक बिखरा हुआ भारत मिला जिसके बारे में कभी कल्पना भी नहीं की थी। विभाजन के बाद आशा थी कि भारत और पाकिस्तान के बीच दृढ़ संबंध स्थापित होंगे लेकिन वह आज तक भी सपना ही बनकर रह गया। फिर भी सशक्त राजनैतिक नेता देश की भागडोर संभाले। पर स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद महात्मा गांधी की हत्या से देश को बड़ा झटका लगा। विभाजन के बाद भारत को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाने के लिए प्रतिस्पर्धा के दौड़ में संघर्ष करना पड़ा। 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान का निर्माण हुआ। इसके साथ ही भारत को गणतंत्र घोषित किया गया। जनता के मौलिक अधिकारों की व्यवस्था की गई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के सामने बड़ी समस्या खड़ी हुई गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन के रूप में। सामान्य जनता, किसान और मजदूरों की स्थिति बदतर होती गई। इस समस्या को दूर करने के लिए अनेक योजनाएँ बनाई गईं। लेकिन जमींदारी उन्मूलन से लेकर भूदान आंदोलन तक किसी भी योजना से जनता को विशेष लाभ नहीं हुआ। तमाम संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत आदि विषमताएँ समाज में फैलने लगीं। भारत-पाकिस्तान विभाजन के कारण हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य बढ़ता ही गया। विस्थापन और पुनर्वास की समस्या के कारण सांप्रदायिक विद्वेष भी पनपने लगा। विभाजन और महँगाई से उत्पन्न बेरोजगारी के कारण आर्थिक स्थिति बाधित हुई। पूँजीवादी व्यवस्था बढ़ने लगी। स्वातंत्रता के बाद अवनति को रोकने का संघर्ष अधिक हो गया। किसान आंदोलनों को सरकार द्वारा कुचला गया। तेलंगाना किसान आंदोलन इसका ज्वलंत उदाहरण है। जनता का समर्थन भी कम होता था क्योंकि मध्यवर्ग में यह भावना पनपने लगी कि स्वतंत्रता के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। अतः संघर्ष करने की कोई जरूरत नहीं। यही प्रवृत्ति राजनैतिक तथा साहित्यिक क्षेत्र में दिखाई देने लगी।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के दो वर्ष बाद देश को आजादी मिली। उस समय शिक्षित वर्ग में अवसरवाद की प्रवृत्ति पनपने लगी। इस प्रवृत्ति के कारण वे राजनीति तथा समाज से विमुख होते गए। दूसरी ओर फासिस्ट शक्तियों का पराजय हुआ। रूस ने साम्यवादी व्यवस्था को स्वीकार किया। रूस की बढ़ती शक्ति से अमेरिका को विशेष चिंता हुई और उसने शीत युद्ध का ऐलान किया। परिणामस्वरूप अस्तित्ववादी चेतना से प्रेरित आधुनिकतावादी साहित्य और सिद्धांतों का प्रसार हुआ। भय, कुंठा, अकेलापन, अजनभीपान, संत्रास, निरर्थकता, मृत्युबोध आदि साहित्य में मुख्य रूप से उभरने लगे। अपसंस्कृति के साथ-साथ मूल्यहीनता तेजी से पनपने लगी।

1975 की इमेर्जेंसी, शोषण और दमन के बावजूद जनता में आत्माविश्वास बढ़ने लगा। शोषित जनता में असंतोष और आक्रोश बढ़ने लगा। भय दूर होने लगा। परिणामस्वरूप सत्तातंत्र का भय बढ़ता गया। अनेक साहित्यिक विधाओं में इसका अंकन होने लगा। बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों अर्थात (1980-2000) में उपन्यास केंद्रीय विधा के रूप में विकसित हुआ। इस दौर में दलित, स्त्री, आदिवासी, अल्पसंख्यक, किन्नर जैसे हाशियाकृत समुदाय परिधि से केंद्र की ओर आने लगे। इन समुदायों पर खुलकर लिखा जाने लगा। साथ ही अन्य प्रवृत्तियों को लेकर गंभीर उपन्यास लिखे गए। छात्रो! आगे संक्षिप्त रूप में इन पर चर्चा करेंगे।

बोध प्रश्न

- स्वतंत्रता के बाद देश को झटका क्यों लगा?
- विस्थापन और पुनर्वास की समस्या के कारण क्या पनपने लगा?
- बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों के साहित्य में किस प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई देने लगीं?

4.3.2 बदलता ग्रामीण परिवेश

स्वतंत्रता के बाद सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों में जो बदलाव आया उससे देश का वातावरण बदल गया। भारत कृषि प्रधान देश है। अतः गाँवों पर ध्यान देना आवश्यक है। इसलिए महात्मा गांधी का ध्यान सबसे पहले गाँवों की ओर गया। उन्होंने देश के शिक्षित वर्ग को गाँव के विकास और सुधार के लिए प्रेरित किया। गाँवों के विकास के लिए अनेक योजनाएँ बनीं जिनके माध्यम से गाँवों में शिक्षा का प्रसार हुआ। पंचायत, सहकारी बैंक, कृषि और चिकित्सा आदि क्षेत्रों का विकास होने लगा।

कृषि विकास योजनाओं के अंतर्गत सिंचाई साधनों के विकास, बागबानी, भूमि विकास, सूखे क्षेत्र विकास, वृक्षारोपण, मुर्गी पालन, भेड़ पालन, लघु उद्योग एवं खादी का विकास आदि के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इससे ग्रामीणों को रोजगार भी मिल सका। ग्रामोद्योग के क्षेत्र में भी प्रगति हुई। गाँवों के विकास में औद्योगिक और व्यापारिक संगठनों की भूमिका अग्रणी रही। बाढ़ नियंत्रण योजना से किसानों को राहत मिली। गाँवों में बिजली पहुँची, अच्छी फसल उगने लगी, पैदावार बढ़ती गई। अतः यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के बाद कृषि और ग्राम उद्योग के क्षेत्र में विकास हुआ।

बोध प्रश्न

- स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए जो योजनाएँ बनाई गई उनसे क्या लाभ हुआ?

4.3.3 औद्योगीकरण का प्रभाव

स्वतंत्रता के बाद औद्योगीकरण के कारण हर क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसके कारण देश की अर्थ व्यवस्था में भी वृद्धि हुई। औद्योगिक क्षेत्र में भारत विश्व के सभी देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित कर चुका था। औद्योगीकरण के कारण अर्थव्यवस्था का मुख्य केंद्र कृषि से हटकर उद्योग की ओर परिवर्तित होने लगा। कच्चे माल को तकनीकी रूप से उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तित किया जाने लगा। उत्पादन में वृद्धि होने के कारण रोजगार के अवसर भी बढ़ने लगे।

औद्योगीकरण का संबंध उत्पादन की प्रक्रिया से है। इस शब्द का प्रयोग व्यापक एवं संकुचित दो अर्थों में होता है। व्यापक रूप में इसका अर्थ है कि देश के संपूर्ण आर्थिक संरचना को परिवर्तित करना। संकुचित रूप में इसका अर्थ है निर्माण उद्योगों की स्थापना एवं विकास करना। देश की अर्थव्यवस्था पर औद्योगीकरण के प्रभाव को निम्नलिखित आरेख के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है -

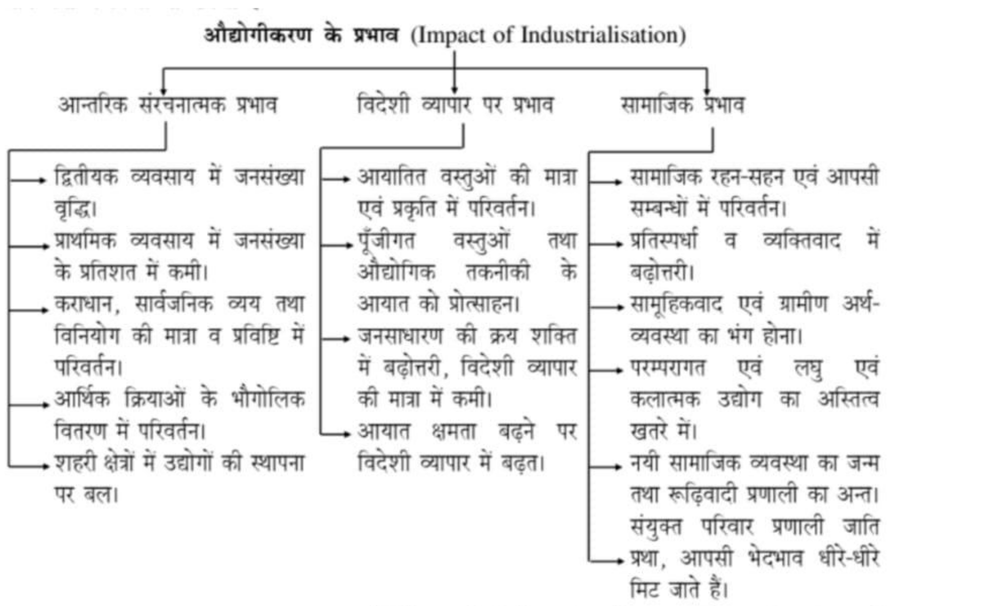

बोध प्रश्न

- औद्योगीकरण किसे कहा जाता है?
- औद्योगीकरण के कारण देश की अर्थ व्यवस्था पर क्या प्रभाव हो सकता है?

4.3.4 पंचवर्षीय योजनाएँ

भारत में पंचवर्षीय योजनाओं की शुरूआत जवाहरलाल नेहरू के समय में ही हो गई थी। 1951 में भारत की पहली पंचवर्षीय योजना शुरू की गई थी और 12वीं और अंतिम योजना 2017 में समाप्त हो गई थी। हैरोड-डोमर मॉडल पर आधारित प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956) का मुख्य ध्यान देश के कृषि विकास पर था। द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-1961) का मुख्य लक्ष्य देश के औद्योगिक विकास पर था। तीसरी योजना (1961-1966) का मुख्य लक्ष्य अर्थव्यवस्था को गतिमान और आत्मनिर्भर बनाना था। चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-1974) का लक्ष्य स्थिरता के साथ विकास और आत्मनिर्भरता की स्थिति प्राप्त करना था। इस योजना के दौरान 1971 के चुनावों के दौरान इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ का नारा दिया था। लेकिन यह योजना असफल रही। पाँचवी योजना (1974-1979) में कृषि को प्राथमिकता दी गई थी। इसके बाद उद्योग और कारखानों को। छठी योजना (1980-1985) का मूल उद्धेश्य गरीबी उन्मूलन और तकनीकी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। इस योजना ने भारत में आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत की थी। इसी योजना के समय नाबार्ड बैंक (1982) की स्थापना हुई थी। सातवीं योजना (1985-1990) के उद्धेश्यों में आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की स्थापना और रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा करना शामिल था। आठवीं योजना (1992-1997) में मानव संसाधन विकास जैसे रोजगार, शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी। देश में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की शुरूआत हुई थी। नौवीं योजना (1997-2002) का मुख्य लक्ष्य था न्याय और समानता के साथ विकास। दसवीं योजना (2002-2007) का लक्ष्य

अगले 10 वर्षों में भारत की प्रति व्यक्ति आय को दुगना करना था। ग्यारहवीं योजना (2007-2012) का लक्ष्य तेज और अधिक समावेशी विकास था। बारहवीं योजना (2012-2017) का उद्धेश्य गैर कृषि क्षेत्र में 50 मिलियन नए काम के अवसर पैदा करना था। भले ही सरकार ने 2017 से पंचवर्षी योजनाएँ बनाना बंद कर दिया लेकिन भारत के आर्थिक विकास में इन योजनाओं का योगदान अतुलनीय है।

बोध प्रश्न

- पंचवर्षीय योजनाओं का उद्धेश्य क्या है?

4.3.5 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में उत्पन्न सामाजिक एवं राजनैतिक स्थितियों का अंकन हिंदी उपन्यासों में होने लगा। अध्ययन की सुविधा हेतु स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों को निम्नलिखित रूप से विभाजित किया जा सकता है -

4.3.5.1 सामाजिक उपन्यास

समाज से ली गई विषयवस्तु पर आधारित उपन्यासों को सामाजिक उपन्यास की संज्ञा दी जाती है। आजादी से पहले सभी आंदोलन समाज सुधार और देश की आजादी पर केंद्रित थीं। अतः साहित्य में भी इन्हीं का अंकन होता था। लेकिन आजादी के बाद जनता की उदासीनता, सामाजिक विसंगतियाँ, रूढ़िवादी मान्यताएँ आदि साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होने लगे। भगवती प्रसाद वाजपेयी, उपेंद्रनाथ अश्क, अमृतलाल नागर, यशपाल, रामेश्वर शुक्ल अंचल, रांघेय राघव, प्रेमचंद आदि अनेक उपन्यासकार तत्कालीन सामाज का चित्र प्रस्तुत करने लगे।

नागार्जुन ने अपने प्रसिद्ध उपन्यासों रतिनाथ की चाची (1949), बलचनमा (1952), बाबा बटेसरनाथ (1954), दुखमोचन (1956), कुंभीपाक (1960) आदि के माध्यम से ग्रामीण जीवन को केंद्र में रखकर स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य को प्रस्तुत किया। गंगा मैया (भैरव प्रसाद गुप्त) शीर्षक उपन्यास में किसानों और जमींदारों के बीच का संघर्ष अंकित है। गंगा के कछार में सामूहिक खेती की योजना बनती है। मटरू की खेत को जमींदारों से बचाने के लिए किसान एकजुट होकर संघर्ष करते हैं। इस उपन्यास में विधवा पुनर्विवाह को भी दर्शाया गया है। इसी प्रकार 'अमर बेल' (1953) में जमींदारी उन्मूलन, सहकारिता आंदोलन आदि का चित्रण है। अलग-अलग वैतरणी (1967) में शिवप्रसाद सिंह ने स्वातंत्र्योत्तर गाँवों की वर्ण व्यवस्था पर आधारित जातिप्रथा की विषमता का यथार्थपरक अंकन किया है। जल टूटता हुआ में रामदरश मिश्र ने अपने पात्र के माध्यम से यह चिंता व्यक्त की कि गाँव टूट रहा है, मूल्य टूट रहे हैं, सत्य टूट रहे हैं, कोई किसी का नहीं, सब अकेले हैं। राही मासूम रज़ा ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास आधा गाँव (1966) में 1937-1952 तक के 15 वर्षों के कालखंड में हिंदू-मुस्लिम और भारत-पाक विभाजन के कारण घटित घटनाओं का मर्मस्पर्शी अंकन किया है। सांप्रदायिक जहर को झूठा सच (यशपाल), तमस (भीष्म साहनी), जहरबद्ध (अब्दुल बिस्मिल्लाह) आदि उपन्यासों में भी चित्रित किया गया है। जगदीश चंद्र का धरती धन न अपना, घास गोदाम, मुट्ठी भर

कांकर आदि उपन्यासों में दलित एवं निम्नवर्गीय किसान-मजदूर के यथार्थ को नई तरह से प्रस्तुत किया गया है। कृष्णा सोबती के उपन्यास जिंदगीनामा में स्वाधीनता आंदोलन की गतिविधियों के साथ-साथ स्वतंत्रता प्राप्ति तक के पंजाब की सामाजिक हलचल, सांस्कृतिक परिदृश्य का अंकन है।

यह कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक उपन्यासों में तत्कालीन सामाजिक विसंगतियाँ, जमींदारी उन्मूलन, किसान-मजदूर संघर्ष, टूटते बिखरते गाँव, बदलते मूल्य आदि का बखूभी चित्रण किया गया है।

बोध प्रश्न

- सामाजिक उपन्यास किसे कहा जाता है?
- सामाजिक उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए।

4.3.5.2 व्यक्तिवादी उपन्यास

स्वतंत्रता के बाद साहित्य के केंद्र में व्यक्ति में आ गया। ध्यान से देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिवादी उपन्यासों का श्रीगणेश प्रेमचंदकालीन उपन्यासों में स्वतंत्रता से पहले ही हो चुका था लेकिन स्वतंत्रता के बाद जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, भगवती चरण वर्मा, नरेश मेहता आदि उपन्यासकारों के उपन्यासों में वैयक्तित्क चेतना बखूबी मुखरित हुई। व्यक्तिवादी उपन्यासों के पात्र अहं केंद्रित आत्मविश्वासी होते हैं। अतः जीवन, मृत्यु, ईश्वर, प्रेम, विवाह, समाज आदि से संबंधित धारणाएँ उनकी निजी अनुभवों से ओत-प्रोत होती हैं। इन उपन्यासों में व्यक्तित्व की महत्ता को रेखांकित किया जाता है। व्यक्तिवादी पात्रों के जीवन में व्याप्त निरशा के कारण ईश्वर, भाग्य और पुनर्जन्म के प्रति आस्था उत्पन्न होता है। नदी के द्वीप (अज्ञेय) उपन्यास में रेखा वैवाहिक जीवन की यातनाओं से गुजरती है। अतः उन कटु अनुभवों के आधार पर वह भविष्य के सपने देखना व्यर्थ समझती है तथा वर्तमान में ही विश्वास रखती है। वह क्षण की अनुभूति को ही यथार्थ मानती है। इसी प्रकार डूबते मस्तूल (नरेश मेहता) की रंजना भी क्षण में ही विश्वास रखती है। रंजना के माध्यम से नरेश मेहता कहते हैं कि 'प्रत्येक क्षण का सत्य ही सत्य है और पूरा जीवन इन छोटे-छूटे संपूर्ण खंड सत्यों का यौगिक विस्तार फैलाव है।' मुक्तिपथ (इलाचंद्र जोशी), व्यतीत (जैनेंद्र), रेखा (भगवती चरण वर्मा), टूटा टी सेट (भगवती प्रसाद वाजपेयी) आदि व्यक्तिवादी उपन्यास हैं।

बोध प्रश्न

- व्यक्तिवादी उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए।

4.3.5.3 मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

इस वर्ग के उपन्यासों में पात्रों के चरित्र-चित्रण का सूक्षम मनोवैज्ञानिक अध्ययन और विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह के उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ

वैयक्तिक समस्या और व्यक्ति पर उनका प्रभाव तथा व्यक्ति के मानसिक अंतर्द्वंद्व का चित्रण होता है। व्यक्ति के जीवन में अतृप्त इच्छाओं एवं निराशाजनक भावनाओं के कारण कुंठाओं का जन्म होता है। प्रेम, विवाह और यौन संबंधों को लेकर समाज में जो रूढ़ मान्यताएँ हैं उन पर अनास्था रखने वाला व्यक्ति मानसिक संघर्षों से ग्रस्त होता है। यह भी देखा जा सकता है कि अतृप्त वासनाएँ उसे कुंठित और मासिक रोगी बना सकती हैं। इन सभी पहलुओं का चित्रण उपन्यासों में हुआ है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में आधुनिक मानव की परिवर्तित मान्यताओं एवं स्वच्छंद प्रेम प्रवृत्ति का चित्रण दिखाई देता है। शेखर : एक जीवनी (अज्ञेय), नदी के द्वीप (अज्ञेय), अपने अपने अजनबी (अज्ञेय), जहाज का पंछी (इलाचंद्र जोशी), संन्यासी (इलाचंद्र जोशी), सुनीता (जैनेंद्र), परख (जैनेंद्र), त्यागपत्र (जैनेंद्र), आदि मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों के उदाहरण हैं।

बोध प्रश्न

- मानोविश्लेषणवादी उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए।

4.3.5.4 आंचलिक उपन्यास

आंचलिक उपन्यासों में नायक या नायिका नहीं होते बल्कि परिवेश ही नायक होता है। हिंदी में अंचल शब्द का सीधा सा अर्थ है जनपद या क्षेत्र जो अपने आप में एक पूर्ण भौगोलिक इकाई है। अतः अंचल विशेष के अपने रीति-रिवाज, संस्कार, जीवन प्रणाली, परंपराएँ और मान्यताएँ आदि होती हैं। आंचलिक उपन्यासों का विषय क्षेत्र ग्राम एवं भारत के अज्ञात अंचल होता है। इन उपन्यासों के संबंध में अपना मत व्यक्त करते हुए रामदरश मिश्र ने कहा है कि “आंचलिक उपन्यास तो अंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है। उसका संबंध जनपद से होता है ऐसा नहीं, वह जनपद की ही कथा है।” फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल, नागार्जुन का रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, रांगेय राघव का कब तक पुकारूँ, शिवप्रसाद सिंह का अलग-अलग वैतरणी, शिवपूजन सहाय का देहाती दुनिया आदि प्रमुख आंचलिक उपन्यास हैं।

बोध प्रश्न

- आंचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ बताइए।

4.3.5.5 मिथकीय उपन्यास

साहित्य और मिथक एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि साहित्य को सभ्य मनुष्य का यथार्थ माना जाए तो मिथक आदिम मनुष्य का। मिथक का धार्मिक कृत्यों से अटूट संबंध होता है। मिथक शब्द अंग्रेजी के मिथ शब्द के हिंदी रूपांतरण है। सामान्य रूप से मिथ एक मिथ्या कथा है जिसकी सच्चाई की परीक्षा नहीं की जा सकती। देवी-देवताओं, विश्व की उत्पत्ति तथा लोक विश्वासों आदि से इसका संबंध होता है। यह एक ऐसा विश्वास है जिसे बिना तर्क के स्वीकार कर लिया जाता है।

मिथकीय उपन्यासों की कथा रामायण और महाभारत आदि पर आधारित होती हैं। इन उपन्यासों की विशेषता यह होती है कि मिथकीय चरित्र वर्तमान संदर्भों को अभिव्यक्त करते हैं। वर्तमान संदर्भ को व्यक्त करने के कारण ये उपन्यास प्रासंगिक बन जाते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों (बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्रलेख, पुनर्नवा आदि) में मिथकों, आद्य बिंबों के माध्यम से कथा को आगे बढ़ाया गया है।

नरेंद्र कोहली के दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर आदि उपन्यासों में रामकथा को आधुनिक परिप्रेक्षय में प्रस्तुत किया गया है। इनमें लौकिक स्तर पर राक्षस पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधि है तो राम एवं वानर सेना मजदूर वर्ग का। भगवान सिंह ने अपने अपने राम में राम के संबंध में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय ने पदातिक उपन्यास में राम को मानवीय कथा भूमि पर प्रतिष्ठित कर परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय पर बल दिया। मृदुला सिन्हा के उपन्यास परितप्त लंकेश्वरी, सीता पुनि बोली आदि भी मिथकीय उपन्यास ही हैं।

बोध प्रश्न

- मिथक किसे कहा जाता है?
- मिथकीय उपन्यासों की क्या विशेषता है?

4.3.5.6 ऐतिहासिक उपन्यास

इतिहास और साहित्य दोनों की अपनी-अपनी सीमाएँ होती हैं। इतिहास में तथ्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जबकि ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास के तथ्यों को ग्रहण किया जाता है और कथा की रोचकता बनाए रखने के लिए कल्पना का भी सहारा लिया जाता है। हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासों में देशभक्ति का स्वर प्रधान है। हिंदी में दो प्रकार के ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए हैं - कल्पना प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास और इतिहास प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास।

कल्पना प्रधान ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास का आधार कम मात्रा में होता है। कहीं-कहीं तो ऐतिहासिक पात्रों का केवल नामोल्लेख किया जाता है, कहीं-कहीं परिवेश ऐतिहासिक होता है तो घटनाएँ और पात्र काल्पनिक। आचार्य चतुरसेन शास्त्री का वैशाली की नगरवधू, वयं रक्षाम, राहुल सांकृत्यायन का सिंह सेनापति, वृंदावनलाल वर्मा का कचनार और टूटे काँटे आदि कल्पना आधारित ऐतिहासिक उपन्यास हैं।

इतिहास प्रधान उपन्यासों में कल्पना की अपेक्षा ऐतिहासिक तथ्यों पर ज़ोर दिया जाता है। वृंदावनलाल वर्मा के झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, अहल्याबाई, माधवजी सिंधिया, सत्यकेतु विद्यालंकार के आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य आदि इसी श्रेणी के उपन्यास हैं।

बोध प्रश्न

- ऐतिहासिक उपन्यासों की क्या विशेषता है?

- इतिहास और कल्पना प्रधान ऐतिहासिक उपन्यासों में क्या अंतर है?

4.3.5.7 अस्तित्ववादी उपन्यास

अस्तित्ववादी दर्शन में मृत्यु से साक्षात्कार महत्वपूर्ण बिंदु है। मृत्यु की आशंका से उत्पन्न भय, संत्रास, निराशा और पीड़ा इसके मुख्य तत्व हैं। दुख की परिस्थितियों में व्यक्ति को उसके अस्तित्व का बोध होता है। इससे स्वार्थ भावना का विकास होता है। ऐसा भी देखा जाता है कि स्वार्थ प्रवृत्ति में लिप्त व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु परपीड़न में सुख अनुभव करता है। ऐसे व्यक्तियों में हर क्षण महत्वूर्ण होता है। निराश स्थिति में मनुष्य ईश्वर, जीवन, मृत्यु, स्वर्ग, नरक आदि विषयों पर जिज्ञासा व्यक्त करता है।

अज्ञेय का उपन्यास 'अपने अपने अजनबी' अस्तित्ववादी धारा का एक प्रमुख उपन्यास है। उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रुकोगे नहीं राधिका' तथा 'पचपन खंभे लालदीवारें', सुरेश सिन्हा के 'एक और अजनबी' आदि में स्त्री के अस्तित्व की सोचनीय स्थिति का अंकन है। व्यक्ति अपने वैयक्तिक अनुभूतियों को महत्वपूर्ण और सार्थक मानता है और वह अपने अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहता है। अत्यंत विवशता की स्थिति में वह समझौया करने के लिए बाध्य होता है। स्वार्थ और अहं में लिप्त आधुनिक मानव निराशामय जीवन जीता हुआ अस्तित्व के प्रति सचेत रहता है।

बोध प्रश्न

- अस्तित्ववादी दर्शन के मुख्य तत्व क्या है?

4.3.5.8 हाशियाकृत समाज से संबद्ध उपन्यास

हाशियाकरण का अर्थ है किसी व्यक्ति या समुदाय को हाशिये या किनारे पर ढकेल देना। ये यक्ति या समुदाय मुख्यधारा से कटे हुए रहते हैं। ये गरीब और कमजोर होते हैं। अतः इन्हें हीन दृष्टि से भी देखा जाता है। आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के कारण आज अनेक ऐसे समुदाय साहित्य के केंद्र में आ चुके हैं जो आज तक हाशिये पर थे। उनमें से प्रमुख हैं स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, किन्नर और वृद्ध। ये समुदाय सदियों से शोषित थे। शिक्षा के कारण इनमें चेतना जगी। असंतोष के कारण उनके भीतर आक्रोश की भावना जागने लगी। परिणामस्वरूप समय के साथ-साथ अपने मूलभूत मानवाधिकारों के लिए, अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए ये संघर्ष करने लगे। यह संघर्ष साहित्य के क्षेत्र में विमर्श के नाम से सामने आया। अनेक संवेदनशील साहित्यकारों ने इन समुदायों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए साहित्य सृजन किया और इन समुदायों के दुख-दर्द को अभिव्यक्त किया। स्त्रीवादी साहित्यकार और दलित साहित्यकार सहानुभूति के लेखन को नहीं मानते। उनके अनुसार स्वानुभूति का साहित्य ही स्त्री और दलित साहित्य है। लेकिन इस सच से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता है कि सहानुभूतिपरक साहित्य भी महत्वपूर्ण है।

स्त्री विमर्श की दृष्टि से मृदुला गर्ग के उपन्यास कठगुलाब, छितकोबरा, मिलजुल मन, चित्रा मुद्गल का आँवा, मैत्रेयी पुष्पा का इदन्नम, अल्मा कबूतरी, चाक, प्रभा खेतान का छिन्नमस्ता, कृष्णा सोबती का सूरजमुखी अंधेरे में, नासिरा शर्मा का शाल्मली, ठीकरे की मंगनी, अनामिका का आईना साज़, सूर्यबाला का यामिनी कथा आदि उल्लेखनीय हैं। दलित विमर्श की दृष्टि से जयप्रकाश कर्दम का छप्पर, ओमप्रकाश वाल्मीकि का जूठन उल्लेखनीय है तो अल्पसंख्यक विमर्श की दृष्टि से राही मासूम रज़ा का आधा गाँव, अनवर सुहैल का पहचान, मंजूर एहतेशाम का सूखा बरगद। संजीव का जंगल जहाँ शुरू होता है, पाँव तले दूब, फांस, मधुकर सिंह का बाजात अनहद ढोल आदि में आदिवासियों का संघर्ष है तो समय सरगम (कृष्णा सोबती), गिलीगड्डू (चित्रा मुद्गल), उस चिड़िया का नाम (पंकज बिष्ट), रेहन पर रग्घू (काशीनाथ सिंह), दौड़ (ममता कालिया), पत्थर ऑफर पानी (रवींद्र वर्मा), वसीयत (सूरज सिंह नेगी) आदि में वृद्धों की व्यथा-कथा। यमदीप (नीरजा माधव), गुलाम मंडी (निरमाला भुराडिया), किन्नर कथा (महेंद्र भीष्म), मैं पायल (महेंद्र भीषम), तीसरी ताली (प्रदीप सौरभ), पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा (चित्रा मुद्गल), ज़िंदगी 50-50 (भगवंत अनमोल), मैं भी औरत हूँ (अनसूया त्यागी), अस्तित्व की तलाश में सिमरन (मोनिका देवी) आदि उपन्यास किन्नरों के जीवन और उनके संघर्ष को व्यक्त करती हैं।

बोध प्रश्न

- हाशियाकरण का क्या अर्थ है?

4.4 पाठ सार

छात्रो! आप इस इकाई को पढ़ने के बाद स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों के बारे में अपना विचार व्यक्त करने में सक्षम होंगे। आपने स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों से भी परिचित हो चुके हैं। आजादी के बाद स्थितियाँ बदलीं। जनता का मोहभंग हुआ। स्वार्थी नेताओं के कारण जनता बुरी तरह से पिसने लगी। आजादी के बाद हमें भारत-पाक विभाजन के रूप में एक बिखरा हुआ भारत मिला जिसके बारे में कभी कल्पना भी नहीं की थी। विभाजन के बाद आशा थी कि भारत और पाकिस्तान के बीच दृढ़ संबंध स्थापित होंगे लेकिन वह आज तक भी सपना ही बनकर रह गया। इतना ही नहीं औद्योगीकरण के कारण ग्रामीण और शहरी परिवेश में बदलाव नजर आने लगा। सारा भारत बाजार में बदल गया। सरकार ने भारत के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाईं। संवेदनशील साहित्यकारों ने उपन्यासों के माध्यम से इन परिस्थितियों को बखूभी चित्रित किया है। परिणामस्वरूप स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों को अध्ययन की सुविधा हेतु सामाजिक, ऐतिहासिक, मिथकीय, व्यक्तिवादी, मनोविश्लेषणवादी, आंचलिक, अस्तित्ववादी और हाशियाकृत समाज से संबद्ध उपन्यासों के रूप में विभाजित किया जाता है। यह विभाजन कथ्य के अनुरूप है। छात्रो! इस इकाई में सूत्र रूप में इन तथ्यों की ओर संकेत मात्र किया गया है।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं -

1. आजादी के बाद हमें भारत-पाक विभाजन के रूप में एक बिखरा हुआ भारत मिला।
2. भारत-पाकिस्तान विभाजन के कारण हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य बढ़ता ही गया।
3. विस्थापन और पुनर्वास की समस्या के कारण सांप्रदायिक विद्वेष भी पनपने लगा।
4. विभाजन और महँगाई से उत्पन्न बेरोजगारी के कारण आर्थिक स्थिति बाधित हुई।
5. जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत आदि विषमताएँ समाज में फैलने लगीं।
6. शिक्षित वर्ग में अवसरवाद की प्रवृत्ति पनपने लगी।
7. भय, कुंठा, अकेलापन, अजनभीपान, संत्रास, निरर्थकता, मृत्युबोध आदि साहित्य में मुख्य रूप से उभरने लगे। अपसंस्कृति के साथ-साथ मूल्यहीनता तेजी से पनपने लगी।
8. आजादी के बाद जनता की उदासीनता, सामाजिक विसंगतियाँ, रूढ़िवादी मान्यताएँ आदि सामाजिक उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त होने लगे।
9. व्यक्तिवादी उपन्यासों के पात्र अहं केंद्रित आत्मविश्वासी होते हैं। अतः जीवन, मृत्यु, ईश्वर, प्रेम, विवाह, समाज आदि से संबंधित धारणाएँ उनकी निजी अनुभवों से ओत-प्रोत होती हैं।
10. मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ वैयक्तिक समस्या और व्यक्ति पर उनका प्रभाव तथा व्यक्ति के मानसिक अंतर्द्वंद्व का चित्रण होता है।
11. आंचलिक उपन्यासों में परिवेश ही नायक होता है।
12. मिथकीय उपन्यासों की कथा रामायण और महाभारत आदि पर आधारित होती हैं।
13. हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासों में देशभक्ति का स्वर प्रधान है।
14. अस्तित्ववादी चेतना से प्रेरित आधुनिकतावादी साहित्य और सिद्धांतों का प्रसार हुआ। भय, कुंठा, अकेलापन, अजनभीपान, संत्रास, निरर्थकता, मृत्युबोध आदि साहित्य में मुख्य रूप से उभरने लगे।
15. हाशियाकारण का अर्थ है किसी व्यक्ति या समुदाय को हाशिये या किनारे पर ढकेल देना। जैसे स्त्री, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी, वृद्ध और किन्नर। ये आज के साहित्य के केंद्र में हैं।

4.6 शब्द संपदा

1. अपसंस्कृति = ऐसा आचार या पद्धति जो उच्च या श्रेष्ठ मूल्यों के विरुद्ध हो, अनुचित संस्कृति

2. अल्पसंख्यक = कम जनसंख्या वाला समुदाय

3. अवसरवादिता = मौकापरस्ती

4. अस्तित्ववाद = साहित्य-कला आदि में व्यवहृत एक विशेष दार्शनिक सिद्धांत जो मनुष्य के अस्तित्व को आकस्मिक उपज मानता है, क्षण को महत्व देता है और मृत्यु, संत्रास, कुंठा आदि के भीतर से ही उसके सही अर्थ की तलाश करता है।

5. उदासीनता = खिन्नता

6. औद्योगीकरण = व्यवस्था को उद्योग प्रधान बनाने की प्रक्रिया

7. किन्नर = देवलोक का एक देवता जो एक प्रकार का गायक था और उसका मुंह घोड़े के समान होता था, वर्तमान समय में हिजड़ा के लिए शिष्टोक्ति

8. चेतना = ज्ञान, बुद्धि

9. प्रतिस्पर्धा = प्रतियोगिता

10. बाजारवाद = वह मत या विचारधारा जिसमें जीवन से संबंधित हर वस्तु का मूल्यांकन केवल व्यक्तिगत लाभ या मुनाफे की दृष्टि से ही किया जाता है

11. मिथक = लोक काल्पनिक कथानक, पौराणिक कथा

12. विसंगति = संगति का अभाव, समकालीन जीवन की वह स्थिति जहाँ प्रत्येक मूल्य या धारणा का ठीक उलटा रूप दिखाई पड़ता है

13. विस्थापन = किसी स्थान से बलपूर्वक हटाना

14. वैमनस्य = मनमुटाव

15. संत्रास = तीव्र वेदना

16. सांप्रदायिक विद्वेष = धर्म के नाम पर शत्रुता

17. साम्यवादी = साम्यवाद का पक्षधर या समर्थक, मार्क्सवादी

18. हाशिया = अंतिम किनारा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. स्वतंत्रता के बाद भारत में उत्पन्न सामाजिक स्थितियों पर प्रकाश डालिए।
2. सामाजिक उपन्यास किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करें।
3. मिथकीय और ऐतिहासिक उपन्यासों से क्या अभिप्राय है?
4. हाशियाकृत समाज से संबंधित उपन्यासों पर प्रकाश डालें।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में आए हुए बदलावों के बारे में चर्चा करें।
2. औद्योगीकरण से क्या अभिप्राय है? देश की अर्थ व्यवस्था को वह किस रूप से प्रभावित करता है?
3. देश के विकास में पंचवर्षीय योजनाएँ किस प्रकार सहायक हैं?
4. व्यक्तिवादी उपन्यासों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. इमेर्जेंसी की घोषणा कब हुई? ( )
   (अ) 1985 (आ) 1975 (इ) 1995 (ई) 1980

2. अस्तित्ववादी दारा का प्रमुख उपन्यास कौन सा है? ( )
   (अ) यमदीप (आ) मैला अंचल (इ) कठगुलाब (ई) अपने अपने अजनबी

3. 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' के लेखक कौन हैं? ( )
   (अ) चतुरसेन शास्त्री (आ) वृंदावनलाल वर्मा
   (इ) ओमप्रकाश वाल्मीकि (ई) राहुल सांकृत्यायन

4. इनमें कौन सा उपन्यास आंचलिक उपनुयास नहीं है? ( )
(अ) अलग अलग वैतरणी (आ) देहाती दुनिया (इ) कब तक पुकारूँ (ई) वयं रक्षाम

5. सांप्रदायिक जहर को चित्रित करने वाला उपन्यास कौन सा है? ( )
(अ) तमस (आ) टूटा टी सेट (इ) जूठन (ई) नदी के द्वीप

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. दुख की परिस्थितियों में व्यक्ति को उसके .... का बोध होता है।

2. हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रधान स्वर .... है ।

3. .... किसी व्यक्ति को कुंठित और मासिक रोगी बना सकती हैं।

4. देवी-देवताओं, विश्व की उत्पत्ति तथा लोक विश्वासों आदि से .... का संबंध होता है।

III. सुमेल कीजिए

1. महेंद्र भीष्म	(अ) दीक्षा
2. मृदुला सिन्हा	(ब) अपने अपने राम
3. नरेंद्र कोहली	(स) परितप्त लंकेश्वरी
4. भगवान सिंह	(द) मैं पायल

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं नगेंद्र
2. हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, शशिभूषण सिंघल
3. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन, सुमित्रा त्यागी
4. स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य के सामाजिक सरोकार, हेमलता राठौर

इकाई 5 : जैनेन्द्र : एक परिचय

रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मूल पाठ : जैनेन्द्र : एक परिचय
5.3.1 जीवन परिचय
5.3.2 रचना यात्रा
5.3.3 रचनाओं का परिचय
5.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व
5.4 पाठ सार
5.5 पाठ की उपलब्धियाँ
5.6 शब्द संपदा
5.7 परीक्षार्थ प्रश्न
5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप उपन्यास सम्राट प्रेमचंद से परिचित न हों यह हो ही नहीं सकता। हिंदी उपन्यास साहित्य के विकास-क्रम में उपन्यासकार लाला श्रीनिवास दास (परीक्षा गुरु) के बाद प्रेमचंद का जो स्थान है, प्रेमचंद के पश्चात वही स्थान जैनेन्द्र कुमार का है। इस इकाई में आप प्रेमचंद के समकालीन और उनके पश्चात हिंदी कथाकार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाने वाले एक प्रमुख व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करेंगे। प्रेमचंदोंत्तर उपन्यासकारों में जैनेन्द्रकुमार का विशिष्ट स्थान है। छायावादोत्तर काल के कथा साहित्य का परिदृश्य जैनेन्द्र कुमार से निर्मित होना शुरू होता है। वे प्रेमचंद के मित्र, सहयोगी और शिष्य जैसे हैं पर अपनी संवेदना और भाषा प्रयोग में प्रेमचंद से आगे निकलते प्रतीत होते हैं। वे हिंदी साहित्य के उन गिने चुने साहित्यकारों में से एक हैं जो मूलतः पश्चिमी उत्तर प्रदेश अर्थात ठेठ हिंदी प्रदेश से आते हैं। जैनेन्द्र हिन्दी उपन्यास और कथा-साहित्य के इतिहास में मनोविश्लेषणात्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हैं। एक कहानीकार के रूप में ‘अपने पथ के अनूठे अन्वेषक’ और ‘हिन्दी कथा साहित्य के गोर्की’ जैनेन्द्र कुमार की उपलब्धियां अनेक हैं। आपको इनके जीवन और कृतित्व से परिचय प्राप्त करते समय इनकी सादगी, सहजता और विद्वत्ता पर गर्व करने को मन चाहेगा।

5.2 उद्देश्य

आपको इस इकाई के पाठ के शीर्षक से ही संकेत मिल गया होगा कि यह जैनेन्द्र कुमार के परिचय से संबन्धित है। इसलिए इस पाठ से आप यह अपेक्षा कर सकते हैं कि इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त करेंगे।
- जैनेन्द्र की प्रमुख रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
- जैनेन्द्र कुमार के सम्पूर्ण रचना संसार को देख सकेंगे।
- हिंदी कथा साहित्य को उनकी देन का स्वयं आकलन कर सकेंगे।

5.3 मूल पाठ : जैनेन्द्र : एक परिचय

5.3.1 जीवन परिचय

जैनेद्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 ईस्वी को अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) जिले के कौड़ियागंज कस्बे में हुआ था। इनकी माता का नाम रामदेवी बाई और पिता का नाम प्यारे लाल था। सकट-चतुर्थी के दिन जन्म लेने के कारण माँ ने 'सकटुआ' नाम धर दिया किन्तु पिता ने पत्र के तेजोदीप्त प्रसन्न मख को देखकर नाम रखा - आनंदी लाल। जैनेन्द्र ने बचपन से ही संघर्ष का जीवन जिया। दो वर्ष के थे कि पिता की मृत्यु हो गयी। उनके मामा (जो बाद में सुप्रसिद्ध देशभक्त महात्मा भगवानदीन के नाम से विख्यात हुए) उनकी माँ को अपने साथ ले गए, जहाँ वे रेलवे की नौकरी करते थे। लेकिन दो साल बाद ही उन्होंने स्वयं सब कुछ छोड़ संन्यास ले लिया। संघर्षशील माँ ने अपने बल-बूते पर जैनेन्द्र को पाला-पोसा। माँ का संघर्ष और मामा का संन्यास जैनेन्द्र की चेतना में सदा के लिए बस गए। यह चेतना उनके जीवन और लेखन दोनों में सर्वत्र दिखाई देती है। जैनेन्द्र की दो बहनें थी। बड़ी बहन जीवन भर अविवाहित रहीं।

15 वर्ष की आयु तक वे यही नहीं समझ पाए कि मामा भगवानदीन उनके पिता नहीं, माँ के भाई हैं। आप अब समझ ही गए होंगे कि जैनेद्र कुमार नाम तो बहुत बाद में पड़ा, जन्म का नाम तो आनंदीलाल था। इनके मामा ने हस्तिनापुर में एक गुरुकुल की स्थापना की थी। वहीं जैनेद्र की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा भी हुई। यहीं यह नया नामकरण भी हुआ। सन 1912 में उन्होंने गुरुकुल छोड़ दिया। प्राइवेट रूप से दसवी की परीक्षा देने के लिए बिजनौर आ गए किन्तु परीक्षा वे 1919 में पंजाब से ही दे सके। उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में प्रारम्भ हुई। 1921 में उन्होंने विश्व विद्यालय की पढ़ाई छोड़कर गांधी जी के द्वारा चलाए जा रहे अँग्रेजी शासन के विरोध में असहयोग आंदोलन भाग लेने के उद्देश्य से दिल्ली आ गए। कुछ समय के लिए वे लाला लाजपत राय के 'तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स' में भर्ती हुए। फिर उसे भी छोड़कर साहित्य सेवा में रम गए। 1921 से 1923 के बीच कुछ व्यापार, फिर नागपुर में राजनीतिक पत्रों के संवाददाता के रूप में कार्य और गिरफ्तारी के बाद दिल्ली लौट कर लेखन कार्य में ही मन लगाने का प्रयत्न किया। कुछ दिन कलकत्ता में भी बिताए पर बात नहीं बनी। युवा जैनेन्द्र के सामने अपने भविष्य के कर्म क्षेत्र चुनने की समस्या रही क्योंकि देश भर में गांधी

जी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलंन चलाये जा रहे थे। वे कुल मिलाकर तीन बार जेल भी गए। जैनेन्द्र कुमार ने अपने जीवन संघर्ष का वर्णन करते हुए लिखा है, "मैं दुनिया में आ पड़ा। पर दुनिया में मेरी किसी तरह की जान पहचान न थी। समंदर की लहरों पर तिनका तैरता है क्योंकि हल्का होता है। मुझमें भी कहीं किसी तरह का वजन नहीं था और बरसों लहरों पर मैं इधर-उधर उतराया किया।"

कर्मनिष्ठा और ईमानदारी का गुण उन्हें दाय में मिला था। कोई काम छोटा बड़ा नहीं होता इसलिए जैनेन्द्र ने जीवन में स्टाम्प-फ़रोशी और कपड़ों की फेरी लगाई और गांवों की पैंठ में जाकर कपड़ा बेचा। थक-हार कर इन्होंने लेखन कार्य को ही अपना काम मान लिया। जैनेन्द्र कुमार का जीवन जितना सरल, सहज और सादा था, वे भीतर से उतने ही गहरे थे। प्रेमचंद के लिखा है, 'उनमें साधारण सी बात को भी कुछ इस ढंग से कहने की शक्ति है जो तुरंत आकर्षित करती है। उनकी भाषा में एक खास प्रकार की लोच है, एक खास अंदाज है।" आप कह सकते हैं कि जैनेन्द्र कुमार में एक आम आदमी, साधारण गृहस्थ, मार्मिक लेखक और सघन विचारक का अद्‌भुत समन्वय है। वे आस्तिक भी थे और जैन भी। उनका महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, विनोबा भावे, राधाकृष्णन, जय प्रकाश नारायण, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी आदि नेताओं से सीधा संवाद रहा किन्तु यह संवाद राष्ट्रीय हितों की खातिर था, निजी स्वार्थों के लिए कदापि नहीं। गांधी पर उनकी आस्था सदा रही। लेकिन उन्होंने गांधी टोपी कभी न पहनी। स्वतन्त्रता आंदोलन में सत्याग्रही अवश्य बने, जेल भी गए किन्तु आजादी के बाद राजनीति न की। इमेर्जेंसी के समय इन्दिरा गांधी से दो टूक कह दिया कि यह गलत है और इसे तुरत वापिस लेना चाहिए। जैनेन्द्र कुमार ने एक लेखक और साहित्यकार के दायित्व को बख़ूबी निभाया।

जैनेन्द्र कुमार की कुल रचनाओं की संख्या 57 बताई जाती है जिसमें से मौलिक उपन्यास 12 हैं। 1927 में उन्होनें एक कहानी लिखी। 'खेल' नामक यह कहानी 'विशाल भारत' में प्रकाशित होकर बहुत लोकप्रिय हुई। 1929 में 'परख' उपन्यास के लिए हिंदुस्तानी अकादमी पुरस्कार, 1966 में लघु उपन्यास 'मुक्तिबोध' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने 1971 में उन्हें पद्म भूषण से भी सम्मानित किया। 1985 में उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सर्वोच्च सम्मान 'भारत भारती' मिला जिसे प्रदान करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने अपने वक्तव्य में जैनेन्द्र कुमार को 'आत्मा का शिल्पी' कहा। सही रोजगार की ऊहापोह के साथ साथ लेखन करते करते सहज और सरल जीवन बिताकर जैनेन्द्र कुमार ने 24 दिसंबर 1988 को अंतिम सांस ली।लेखक की तरह जिए और लेखक की तरह मरे। किसी का कोई अनुग्रह कभी स्वीकार न किया। विष्णु खरे ने उनके निधन पर अपने संपादकीय में लिखा था' "भारतीय महालेखन में वे व्यास के ज्यादा समीप हैं, वाल्मिकि से कम; कबीर ज्यादा हैं, सूर-तुलसी कम; गालिब-मीर ज्यादा हैं, इकबाल-फैज कम। उन्हीं की शैली में जिसकी संक्रामकता घातक है, वे जैनेन्द्र ज्यादा हैं, प्रेमचंद कम।" अपनी अलग पहचान बनाकर जैनेन्द्र कुमार हिंदी कथा-साहित्य के अमर हस्ताक्षर बने ।

बोध प्रश्न

- जैनेन्द्र कुमार का बचपन का नाम क्या था और उनका यह दूसरा नाम कैसे पड़ा?
- जैनेन्द्र कुमार के लालन-पालन में उनके मामा का योगदान क्या रहा?
- जैनेन्द्र कुमार को आजीविका के लिए क्या क्या करना पड़ा?

5.3.2 रचना यात्रा

जैनेन्द्र कुमार ने अपनी उर्वर लेखनी से प्रचुर लेखन कर अपने पाठकों को लीक से हटकर कृतियाँ दीं। उन्होंने घिसी पिटी नैतिकता और संकीर्णता से अपने पाठकों को उबारकर उन्हें आत्मचिंतन और आत्मावलोकन का अवसर दिया। डॉ नगेन्द्र के शब्दों में, “हिन्दी उपन्यास के जैनेन्द्र ने एक पहेली के रूप में पदार्पण किया। पाठक को घिसी पिटी एवं संकीर्ण नैतिकता से निकालकर मूल नैतिकता तक पहुँचाने वाले गहन आत्म-चिंतन की ओर सर्वप्रथम उन्होंने ही प्रवृत्त किया।” हिंदी साहित्य में उनका आविर्भाव कथाकार के रूप में हुआ। ‘परख’ और ‘सुनीता’ उपन्यासों ने उन्हें प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों का सिरमौर बनाया और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों ने आम लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उनका कथा साहित्य समाज से विद्रोह का परिचायक बनकर उभरा।

उपन्यास-क्षेत्र में एक नयी शैली का सूत्रपात जैनेन्द्र कुमार द्वारा हुआ। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा अपने युग की मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को अपने सुचिन्तित दृष्टिकोण से देखा तथा उनका समाधान भी अपने ही चिंतन एवं अनुभव के अनुसार किया है। उन्होंने इसके लिए जो साँचा तैयार किया उसे ‘जैनेन्द्रीय साँचा’ कहा जा सकता है जिसका ताना बाना आपने जैन संप्रदाय के योजक सिद्धान्त, गांधीवादी आत्मपीड़न दर्शन, नवीन समयानुकूल सामाजिक नैतिकता और परिवर्तनशील सामाजिक सांस्कृतिक चेतना के मेल से बनाया गया है। जैनेन्द्र कुमार की कहानियों और उपन्यासों में वर्णित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का आधार पारंपरिक है किन्तु उनका समाधान एकदम नवीन है। इस नवीनता को ‘जैनेन्द्रीय समाधान’ कहा जा सकता है। जैनेन्द्र कुमार के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव तो है ही उनकी अपनी मौलिकता और चिंतन भी पृष्ठभूमि में है। स्त्री-सशक्तीकरण को रेखांकित करते हुए जैनेन्द्र नारी और पुरुष की अपूर्णता और पारस्परिकता की भावना को इनके संघर्ष का कारण समझते हैं। नई तेवर, नई भाषा, नई सोच और नए रूप विधान के साथ विचारशीलता को लेकर जैनेन्द्र कुमार ने अपने पहले तीन उपन्यासों ‘परख’, ’सुनीता’ और ‘त्यागपत्र’ से धूम मचा कर रख दी थी।

जैनेन्द्र की रचनाओं में उनका जीवन दर्शन व्याप्त है। वे ईश्वर की अखंड सत्ता में विश्वास रखते हैं। मनुष्य को समाज के साथ अनुकूलन करने की कोशिश करनी चाहिए। वे जैन दर्शन के अस्ति-आस्तिकवाद में भी विश्वास करते हैं। उनकी कर्म फल में भी गहरी आस्था थी। उनके जीवन दर्शन में जीवन के प्रति गहरी आस्था और उसकी रहस्यमयता पर बल है। उनके अनुसार आत्मव्यथा और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हौइन। वे सबके प्रति प्रेम और सहानुभूति को

अनिवार्य मानते हैं। उनके मतानुसार व्यक्ति त्याग और कष्ट सहन के द्वारा दूसरों को सही मार्ग पर ल सकता है। गांधीवादी जीवन-दर्शन की छाप भी उनकी रचनाओं में है। वे प्रत्येक वक्तव्य को सूक्ष्म विवेचन करके ही प्रस्तुत करते हैं। वे अपने-लेखन के केंद्र में मनुष्य-मात्र का हित रखते हैं।

बोध प्रश्न

- जैनेन्द्र कुमार को 'पहेली' क्यों कहा गया है?
- जैनेन्द्र के उपन्यासों की पहले पहल प्रसिद्धि का सबसे बड़ा कारण क्या रहा होगा?

5.3.3 रचनाओं का परिचय

1921 में जैनेन्द्र का कहानी संग्रह 'फाँसी' प्रकाशित हुआ और इसकी सफलता के उपरांत उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'परख' भी आया। इन पुस्तकों ने हिंदी को प्रेमचंद सरीखा एक सम्पूर्ण कथाकार प्रदान किया। इस उपन्यास में बाल-विधवा के पाखंड पर प्रहार किया गया है। सत्यधन, कट्टो, बिहारी और गरिमा नामक पात्रों के चरित्र पर आधारित यह मनौवैज्ञानिक उपन्यास विधवा विवाह की कथा बड़ी नाटकीय और अविश्वसनीय ढंग से कहता है। आदर्शवाद कथा पर हावी है। सत्यधन आदर्शवादिता में विधवा कट्टो से प्रेम तो कर बैठता है पर उसे अपनी पत्नी नहीं बना पाता। सत्यधन के प्रेम की परख होती है और वह खोटा सिद्ध होता है। 1935 में जैनेन्द्र का दूसरा उपन्यास 'सुनीता' है। उपन्यास का नायक हरिप्रसन्न एक राष्ट्रीय कार्यकर्ता है। वह अपने मित्र श्रीकांत के यहाँ रहता है और धीरे धीरे वह सुनीता से प्रेम करने लग जाता है। पर 'सुनीता' के चरित्रों की मानसिक अस्थिरता और कालांतर में हरिप्रसन्न का सुनीता को घर लौटकर हमेशा के लिए चला जाना निरुद्देश्य सा लगता है।जैनेन्द्र की तीसरी कृति 'त्यागपत्र' का प्रकाशन 1937 में हुआ। मृणाल नामक भाग्यहीना युवती के जीवन पर आधारित इस कथा में भतीजा प्रमोद अपनी बुआ मृणाल के मन की पीड़ा को समझता है। कथानायक पर मृणाल की अनवरत पीड़ा और तदुपरान्त मृत्यु से दुखी होकर वह नौकरी से त्यागपत्र देकर दुनिया से विरक्त हो जाता है। 1939 में प्रकाशित उपन्यास 'कल्याणी' में विवाह और डाक्टरी, पत्नीत्व और निजत्व का परस्पर संघर्ष की कहानी है। आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास अपने परिचितों की जीवनकथा को समेटते हुए डॉ श्रीमती कल्याणी असरानी के आज की गृहणी बनने की समस्या को कथारूप देता है। 'सुखदा' (1953) उपन्यास की नायिका सुखदा वैचारिक असमानताओं के कारण अपने पति से खुश नहीं रहती और लाल की ओर आकर्षित हो जाती है। 'व्यतीत' (1953) भी सुखदा के समान आत्मचरितात्मक उपन्यास है। उलझी हुई कथा के पात्र जयंत, अनिता, चंद्री, पुरी आदि कठपुतलियों की तरह व्यवहार करते हैं। 'जयवर्धन' (1956) एक डायरीनुमा उपन्यास है। जैनेन्द्र के उपन्यासों की विशेषताएँ हैं - दार्शनिक और आध्यात्मिक तत्वों का समावेश, पात्र बाह्य वातावरण और परिस्थितियों से अप्रभावित, चरित्रों की भरमार नहीं, नारी पात्रों के व्यवहार का मनोवैज्ञानिक चित्रण और घटनाओं की संघटनाओं पर बहुत कम बल आदि। जैनेन्द्र ने अपने प्रायः सभी उपन्यास उत्तमपुरुषात्मक या आत्मपुरुषात्मक रूप से

डायरी शैली में लिखे हैं। 'हिंदी उपन्यास साहित्य' में गोपाल राय का कथन है कि जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों की कहानी अधिकतर एक परिवार की कहानी होती है और वे शहर की गली और कोठरी की सभ्यता में ही सिमट कर व्यक्ति पात्रों की मानसिक गहराइयों में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं। उनके पात्र बने बनाए सामाजिक नियमों को स्वीकार कर उनमें अपना जीवन बिताने की चेष्टा नहीं करते अपितु उन नियमों को चुनौती देते हैं। यह चुनौती उनकी नायिकाओं से आती है जो उनकी लगभग सभी रचनाओं में मुख्य पात्र भी हैं।

एक कहानीकार के रूप में भी जैनेन्द्र कुमार अप्रतिम हैं। छायावाद के पश्चात कथा साहित्य के परिदृश्य के निर्माण में उनकी भूमिका उल्लेखनीय है। उनकी फांसी (1929), वातायन (1930), नीलम देश की राजकन्या (1933), एक रात (1934), दो चिड़ियाँ (1935), पाजेब (1942), जयसन्धि (1949) आदि विविध कहानियाँ 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' सात भागों में प्रकाशित हैं। इनमें से पहले भाग में राष्ट्रीय और क्रांतिकारी, दूसरे में बाल मनोविज्ञान, तीसरे में दार्शनिक और प्रतीकात्मक, चौथे में प्रेम और विवाह संबंधी, पांचवें में प्रेम के विविध रूपों की कहानियाँ, छठे में सामाजिक और सातवें में अन्य कहानियाँ हैं। आलोचकों का मत है कि उन्होंने कहानी को 'घटना' के स्तर से उठाकर 'चरित्र' और 'मनोवैज्ञानिक सत्य' पर लाने का प्रयास किया। उन्होंने कथावस्तु को सामाजिक धरातल से समेटकर व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक भूमिका पर प्रतिष्ठित किया। जैनेन्द्र ने कहानी को एक सीधी रेखा में बढ़ाने के स्थान पर इसे एक नया मोड़ दिया। इस मोड़ से आरंभ होने वाली कहानी अपनी चेतना और संरचना दोनों में नयी थी। वे कहीं भी यह आभास नहीं होने देते कि वे किसी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के सहारे आंतरिक सत्य की पहचान उभार रहे हैं। वे तो आसपास के जाने पहचाने पात्रों में मूर्त सत्य को बहुत सहज भाव से पकड़ लेते हैं और उतनी ही सहजता से उसे शब्दों के सहारे अभिव्यक्त भी कर देते हैं।

निबंधकार, अनुवादक और संपादक के रूप में भी इनकी उपलब्धियां उल्लेखनीय हैं। यात्रा संस्मरण (मेरे भटकाव आदि), विचार पुस्तकें(साहित्य और संस्कृति आदि) एक दर्जन से अधिक), नाटक, बाल साहित्य, सह लेखन (ऋषभ चरण जैन के साथ) आदि भी आपने खूब लिखे हैं। निबंधकार के रूप में जैनेन्द्र का विचाराधीन विषयों के व्यापक क्षेत्र में साहित्य, समाज, धर्म, दर्शन आदि से जुड़े प्रश्नों का चिंतन और विश्लेषण किया गया है। जैनेन्द्र की दृष्टि में मानव और मानवता केंद्र में हैं जिसे वे गांधीवादी चिंतन के आलोक में देखते परखते हैं। जहाँ एक ओर उनके ग्यारह-बारह उपन्यास और दस कहानी संग्रह प्रकाशित हुए वहीं उनके निबंध और आलोचना संग्रह भी विचारणीय हैं। इन अनेक पुस्तकों के लेखक के रूप में जैनेन्द्र एक गंभीर चिंतक के रूप में हमारे सामने आते हैं। इनके निबंधों के विषय साहित्य, समाज, राजनीति, धर्म, संस्कृति तथा दर्शन आदि हैं।

सुरेश सिन्हा ने 'हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास' में सही कहा है कि "जैनेन्द्र ने व्यक्ति की अतल गहराई में पैठ कर उसकी आंतरिक प्रवृत्तियों को स्पष्ट कर उसके संघर्ष को समाप्त कर दुविधा में पड़े मन को एक निश्चित दिशा देने का प्रयास किया है।" वे अपने समस्त

लेखन में किन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजते प्रतीत होते हैं। वे प्रश्नों को टालते नहीं बल्कि उनके सहारे अपनी दृष्टि और अनुभूति को परिष्कृत भी करते हैं। उनके व्यक्तित्व और लेखकीय स्वभाव की यह विशेषता रही है कि वे सदा जीवन और जगत के रहस्यपूर्ण प्रश्नों से उलझते रहे, उनके उत्तर खोजते रहे। इसी कारण वे चिंतक कथाकार कहे जाते हैं। कहना न होगा कि जैनेन्द्र का विचारक और चिंतक रूप उनके कथाकार रूप से किसी भी तरह कम नहीं है।

बोध प्रश्न

- जैनेन्द्र कुमार के प्रथम उपन्यास 'परख' में किस समस्या को उठाया गया है?
- कथाकार के रूप में जैनेन्द्र कुमार की सबसे बड़ी पहचान क्या है?

5.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

आपने लक्ष्य किया होगा कि जैनेन्द्र के उपन्यासों के कथानक प्रायः 'स्त्री' केन्द्रित हैं। उन्होंने अपने नारी पात्रों के चरित्र चित्रण में सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है। स्त्री के विविध रूपों उनकी समस्याओं और प्रतिक्रियाओं का विश्वसनीय अंकन किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में पति-धर्म और पत्नी-धर्म दोनों को ही चुनौती दी है। प्रेमचंद के अनुपूरक और उनके द्वारा 'भारत का गोर्की' कहे गए जैनेन्द्र कुमार ने हिंदी कथा साहित्य को नयी पारदर्शी भाषा ही प्रदान नहीं की बल्कि शिल्प और कथ्य की ऐसी अनूठी भंगिमा भी दी जिसका पूर्ण परिपाक 'अज्ञेय' (जैनेन्द्र कुमार का ही दिया हुआ नाम) के कथा लेखन में हुआ। जैनेन्द्र कुमार ने प्रेमचंद की कथा-परंपरा को आगे बढ़ाते हुए एक नई राह चुनी। उन्होंने प्रेमचंद के द्वारा समर्थित सामाजिक यथार्थ के मार्ग को नहीं अपनाया क्योंकि वे इसकी सीमाओं से बखूबी परिचित हो गए थे। इसलिए वे प्रेमचंद के विलोम नहीं अपितु पूरक बनकर आगे आए। अपनी कथा नैतिकता को उन्होंने और भी अधिक सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक बनाया।काम और परिवार के संबंध को अनूठे ढंग से प्रस्तुत करते हुए मृणालिनी जैसी हाड़-मांस की जीती जागती स्त्रियाँ प्रस्तुत कीं जो अपनी देह का निर्णय स्वयं करने को अपना अधिकार मानती हैं।

स्त्री सशक्तीकरण, नारी-विमर्श और फेमिनिज़्म से प्रभावित वर्तमान में जैनेन्द्र के विचार आपको परंपरावादी प्रतीत होंगे। जैसे जैनेन्द्र का यह कथन, "अभागिनी है वह जो स्त्री राजनीति में आती है या उसका विचार भी करती है। राजनीति करे वह स्त्री जिसके पास पुरुष न हो।" आपको अजूबा लगेगा। जैनेन्द्र कुमार स्त्री मन के चितेरे होने पर भी उसके मन की सम्पूर्ण थाह न ले सके। वे स्त्री की स्वतन्त्रता को सीमा में रखते हुए आदर्श स्त्री की कल्पना को कोई ठोस आकार न दे सके। प्रिय छात्रो, आपको अपने अध्ययन में धैर्य पूर्वक देखना होगा कि वे अपने स्त्री-विमर्श में कहाँ तक स्त्री के पक्षकार और कहाँ पुरुषवादी मानसिकता रखते प्रतीत होते हैं। आपको लेखक के पाठ से अलग भी यदि अपना कोई समसामयिक पाठ इन उपन्यासों और कहानियों में दिखाई दे तो उसका संज्ञान लें। लेखकीय मंतव्य से अलग आपका यदि कोई मत है तो उसे अवश्य चिन्हित करें। आपको याद रखना होगा कि अपने पहले उपन्यास 'परख' में ही जैनेन्द्र कुमार ने पाठकों को संबोधित करते हुए लिख दिया था, "मैंने जगह- जगह कहानी में तार की कड़ियाँ

तोड़ दी हैं। वहाँ पाठकों को थोड़ा कूदना पड़ता है।और मैं समझता हूँ, पाठक के लिए थोड़ा अभ्यास वांछनीय होता है, अच्छा ही लगता है।" इसलिए आप भी जैनेन्द्र कुमार की रचनाओं को पढ़ते समय यह ध्यान रखें कि जैनेन्द्र में कथा के प्रति उदासीनता अवश्य है किन्तु उन्होंने इसकी कमी दृश्यात्मकता से पूरी की है। घटनाएँ स्वयं बोलने लगती हैं और कथाएँ नाटक के समान बोलने लग जाता है। यही कारण है कि आपको पाठक के रूप में सदा जागरूक रहना होगा।

प्रिय छात्रो! आपको यह स्मरण रखना होगा कि जैनेन्द्र का योगदान हिंदी गद्य के निर्माण में भी बहुत महत्वपूर्ण है। भाषा के स्तर पर उनके द्वारा की गई नक्काशी ने हिंदी को नई रवानी दी। उन्होंने हिंदी को एक पारदर्शी भाषा और भंगिमा दी, एक नया तेवर दिया, एक नया 'सिंटेक्स' दिया। जैनेन्द्र का गद्य न होता तो अज्ञेय का परिष्कृत गद्य संभव न होता। अज्ञेय ने एक बार कहा था कि आज के हिंदी आख्यानकारों और विशेषतः कहानीकारों में सबसे अधिक टेक्निकल जैनेन्द्र हैं। जैनेन्द्र ने कथा-भाषा को वर्णन के प्राथमिक स्तर से ऊपर उठाया। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने जैनेन्द्र की कथा-भाषा में 'वर्णन न करके वर्णन को व्यंजित करने की क्षमता' को रेखांकित किया है। उदाहरण के लिए, जैनेन्द्र कुमार ने ठेठ खड़ी बोली क्षेत्र की भाषा में निरीह-से दिखने वाले अव्ययों (तो, भी, और, कि) का ऐसा प्रयोग किया जिसका इससे पहले किसी ने ऐसे प्रयोग नहीं किया था। वे नए शब्द गढ़ने में अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देते हैं। कुछ शब्द जैसे - असुधार्य, आशाशील आदि पहले कभी प्रयोग में न आए थे और उनके प्रयोग से इन शब्दों ने नई अर्थवत्ता को प्रस्तुत किया।वे वाक्य गठन में भी उदारता बरतते नज़र आते हैं, जैसे- "पर सबको संतुष्ट कर पाऊँ ऐसा मुझसे नहीं बनता। बरसों लहरों पर मैं इधर-उधर उतराया किया।" जैनेन्द्र कुमार तत्सम शब्दों के साथ तद्भव और उर्दू शब्दों का सहज प्रयोग करते हैं, जैसे - तत्सम - परिमित, आमंत्रण, आग्रह आदि; तद्भव - धीरज; उर्दू शब्द - फिजूल, हरज़, दरकार। अँग्रेजी शब्द - पावर, पर्चेजिंग पावर, मनी बैग। संवादों का प्रयोग करके अपनी भाषा-शैली को रोचक बना देते हैं। उदाहरण के लिए –

> सुनीता : तुम क्या चाहते हो हरी बाबू !
>
> हरिप्रसन्न : क्या चाहता हूँ? तुम पूछोगी क्या चाहता हूँ, तुमको चाहता हूँ, समूची तुमको चाहता हूँ !

वक्रोक्ति का प्रयोग करना कोई उनसे सीखे, जैसे- 'दिल बस्तगी की कहानी चाहिए तो हटिए मुझे न सताइए' (सोच विचार, पृष्ठ 46)। भाषा को बाहरी सजावट से दूर करते हुए उसका निपट प्रयोग करते देखकर अशोक वाजपेयी ने उन्हें 'शब्द के संकोच का कथाकार' कहा था। शब्दों को समझ बूझकर करीने से सजाकर मितव्यता और किफायतसारी से प्रयोग करते हुए जैनेन्द्र ने एक ऐसे कथा संसार की रचना की जिसका कोई जोड़ नहीं।

बोध प्रश्न

- 'स्त्री केन्द्रित' रचना से आप क्या समझते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

- 'वर्णन न करके वर्णन को व्यंजित करने की क्षमता'वाक्यांश को स्पष्ट कीजिए।
- 'प्रेमचंद का विलोम नहीं पूरक'कहने से क्या तात्पर्य है?

5.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद के पश्चात जैनेन्द्र कुमार उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में विख्यात होने वाले साहित्यकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं। खड़ी बोली हिंदी के क्षेत्र में कोडियागंज (अलीगढ़) नामक गाँव में इनका जन्म 2 जनवरी सन 1908 को हुआ था। बचपन का नाम आनंदी लाल था और हस्तिनापुर के गुरुकुल में जैनेन्द्र कुमार नाम मिला। उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से लेकर आजीविका की खोज की और कोई खास सफलता न मिलने पर केवल मसिजीवी लेखक होकर रह गए। उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, अनुवाद आदि विभिन्न विधाओं और क्षेत्रों में अनवरत लेखन करके 57 मौलिक ग्रन्थों की रचना की और हिंदी उपन्यास के इतिहास में मनोविश्लेषणात्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में मान्य हुए। 24 दिसम्बर 1988 को इस महान कथाकार का निधन हुआ। विश्व साहित्य में प्रेमचंद के साहित्य से साथ सदा जैनेन्द्र कुमार के लेखन का जिक्र किया जाता रहेगा। अपने उपन्यासों और कहानियों के द्वारा व्यक्ति की प्रतिष्ठा, व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध की नई व्याख्या और स्त्री के मनोविज्ञान की परख करते हुए 'आत्मपीड़ा' का दर्शन रचकर जैनेन्द्र कुमार ने हिंदी साहित्य के अमिट हस्ताक्षरों में अपना नाम अंकित कराया है।

जैनेन्द्र और प्रेमचंद को एक दूसरे का पूरक, विलोम नहीं, मानकर और उन्हें साथ साथ रखकर ही एक दूसरे के व्यक्तित्व और कृतित्व को ठीक प्रकार से समझा जा सकता है। प्रेमचंद में नारी शक्ति और स्त्री पुरुष के प्रेम सम्बन्धों की उपस्थिति नगण्य है। जैनेन्द्र ने इस अभाव की पूर्ति की। उन्होंने अपने कथा साहित्य में हाड मांस की जीती जागती ऐसी स्त्रियाँ पात्रों के रूप में प्रस्तुत कीं जो अपनी देह और मन पर ही नहीं अपनी स्वतंत्र निर्णय क्षमता पर भी पूरा अधिकार और भरोसा रखती हैं।जैनेन्द्र का एक महत्वपूर्ण योगदान हिन्दी गद्य को तराशने का भी है। भाषा के स्तर पर उन्होंने अनेक प्रयोग किए। रवीन्द्र कालिया (वागर्थ, फरवरी-2005) के शब्दों में "जैनेन्द्र ने हिंदी को एक पारदर्शी भाषा और भंगिमा दी, एक नया तेवर दिया। एक नया 'सिंटेक्स' दिया। जैनेन्द्र का गद्य न होता तो अज्ञेय का गद्य संभव न होता। आज के हिंदी गद्य पर जैनेन्द्र की अमिट छाप है।"

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन अध्ययन के उपरांत आपने

1. जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त किया।
2. जैनेन्द्र की प्रमुख रचनाओं के बारे में जान सके।
3. जैनेन्द्र कुमार के सम्पूर्ण रचना संसार को देख पाये।

4. हिंदी कथा साहित्य को उनकी देन का स्वयं आकलन कर सके।

5.6 शब्द सम्पदा

1. आविर्भाव	= प्रकट होना, उत्पत्ति
2. ऊहा-पोह	= अनिश्चय की स्थिति में मन में उत्पन्न होने वाला तर्क-वितर्क या विचार
3. ठेठ	= जो बिलकुल मूल रूप में हो
4. तेजोदीप्त	= चमकदार
5. परिदृश्य	= चारो ओर दिखने वाला दृश्य
6. पाखंड	= आडंबर, ढकोसला
7. प्रवर्तक	= प्रवर्त करने वाला, प्रतिष्ठा करने वाला, किसी मिशन को आरंभ करने या कराने वाला।
8. मसि जीवी	= लेखक, पत्रकार
9. मितव्ययता/मितव्ययिता	= किफ़ायती
10. सूत्रपात	= कार्य का आरंभ
11. स्टाम्प-फ़रोशी	= टिकट (रसीदी) बेचने वाला

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. जैनेन्द्र कुमार के संघर्षपूर्ण जीवन का परिचय देते हुए उस जीवन का उनके लेखन पर प्रभाव को रेखांकित कीजिए।
2. “अपनी रचनाओं में जैनेन्द्र कुमार अपने जीवन प्रसंगों को आधार बनाते हैं।” इस कथन की समीक्षा कीजिए।
3. कथाकार के रूप में जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
4. हिंदी कथा साहित्य के विकास में जैनेन्द्र कुमार के योगदान पर संतुलित दृष्टि से विचार कीजिए।

5. जैनेन्द्र के रचे हुए पात्रों की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. "जैनेन्द्रीय साँचा" के सिद्धान्त को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।
2. "जैनेन्द्रीय समाधान' क्या है?
3. जैनेन्द्र के उपन्यासों की विशेषताओं का आकलन करते हुए उनके उपन्यासकार रूप को उद्घाटित कीजिए।
4. कहानीकार के रूप में जैनेन्द्र कुमार की सहजतापूर्ण लेखन शैली की विवेचना कीजिए।
5. जैनेन्द्र कुमार के जीवन-दर्शन पर विचार व्यक्त कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. जैनेन्द्र कुमार के मामा का नाम था – ( )
   क) श्रीनिवास दास ख) प्यारे लाल ग) भगवानदीन घ) आनंदीलाल

2. जैनेन्द्र कुमार ने आजीविका के लिए यह कभी न किया- ( )
   क) स्कूल-मास्टरी ख) पत्रकारिता ग) फेरी लगाना घ) लेखन कार्य

3. किस उपन्यास में 'बाल विधवा' की समस्या को उठाया गया है? ( )
   क) कल्याणी ख) परख ग) सुनीता घ) त्यागपत्र

4. जैनेन्द्र कुमार इनमें से क्या नहीं कहे जाते? ( )
   क) अपने पथ के अनूठे अन्वेषक ख) हिंदी कथा साहित्य के प्रेमचंद
   ग) आत्मा का शिल्पी घ) शब्द के संकोच का कथाकार

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. परीक्षा-गुरु उपन्यास के लेखक .... हैं।
2. जैनेन्द्र कुमार .... के प्रवर्तक माने जाते हैं।
3. जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों के कथानक प्रायः .... केन्द्रित हैं।

4. जैनेन्द्र कुमार ने कहानी को ...... के स्तर से उठाकर .... और ....पर लाने का प्रयास किया।

III. सुमेल कीजिए

1. प्रथम उपन्यास	(अ) सत्यधन
2. मुक्तिबोध	(आ) परख
3. उपन्यास का पात्र	(इ) आत्मा का शिल्पी
4. जैनेन्द्र कुमार	(ई) उपन्यास
	(उ) मृणालिनी

5.8 पठनीय पुस्तकें

1. जैनेन्द्र : साहित्य और समीक्षा (1958), रामरतन भटनागर

2. अनासक्त आस्तिक (2019), ज्योतिष जोशी

3. उपन्यासकार जैनेन्द्र : मूल्यांकन और मूल्यांकन, डॉ मन मोहन सहगल

इकाई 6 : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : कथासार

रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 मूल पाठ : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : कथासार
6.4 पाठ सार
6.5 पाठ की उपलब्धियाँ
6.6 शब्द संपदा
6.7 परीक्षार्थ प्रश्न
6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! जैसा कि अब आप जान चुके हैं 'त्यागपत्र' जैनेन्द्र कुमार की तीसरी औपन्यासिक कृति है और इसका प्रकाशन 1937 में हुआ था। प्रकाशक थे - प्रसिद्ध साहित्यकार नाथू राम प्रेमी (हिंदी-ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई) और इसे उन्होंने 'मौलिक सामाजिक उपन्यास' कहा था। सवा रुपए कीमत में सवा सौ से भी कम पृष्ठों का यह उपन्यास आज हिंदी के कालजयी उपन्यासों में से एक है। 'त्यागपत्र' मृणाल नामक भाग्यहीना की मार्मिक कहानी है। प्रथम पुरुष के रूप में कही गई यह कथा पाठक को भावविभोर करके रख देती है। जैनेन्द्र कुमार ने अपने अन्य उपन्यासों की भांति इस उपन्यास में भी दो-चार घटनाओं के बल पर नारी जीवन के एक खंड का नहीं सम्पूर्ण जीवन का हृदयविदारक चित्रण प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की कथा समस्त नारी जाति की दुखद नियति को प्रस्तुत करती है। समाज के अन्यायपूर्ण और निर्मम नैतिक विधान पर भी यहाँ तीखी टिप्पणी है। इस उपन्यास की यहाँ प्रस्तुत कथावस्तु आपको बहुत कुछ विचार करने को विवश कर देगी। यह कहानी मृणाल-केन्द्रित है किन्तु बहुत से पाठक इसे केवल प्रमोद के दृष्टिकोण से पढ़ते और समझते हैं। मेरा आपसे आग्रह होगा कि आप इस कृति को मृणाल के नजरिए से भी पढ़ें। मृणाल ही क्यों? हर उस पात्र के नजरिए से पढ़ें जो इसमें आता है। और हाँ, पाप और पुण्य की अपनी परिभाषा की इस उपन्यास में बताई गई परिभाषा से तुलना करके देखें।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

- 'त्यागपत्र' उपन्यास के कथानक के प्रमुख बिन्दुओं से परिचित होंगे।
- उपन्यास के प्रमुख पात्रों और उनके पारस्परिक संबंध को जान सकेंगे।
- घटनाओं और प्रसंगों के आधार पर उनका विवेचन कर सकेंगे।
- 'त्यागपत्र' शीर्षक के विविध निहितार्थों पर गौर कर सकेंगे ।

6.3 मूल पाठ : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : कथासार

सर्वप्रथम हम इस उपन्यास की कथा अति संक्षेप में पढ लेंगे। फिर इसका सिलसिलेवार पाठ होगा। इस कथा का प्रारम्भ अंत से होता है। पूरा उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। जस्टिस एम दयाल अपने पद से त्यागपत्र दे देते हैं। क्यों? यही कहानी है जो एम दयाल के बचपन से प्रारम्भ होती है। बचपन में वह प्रमोद है। प्रमोद की बुआ (प्रमोद के पिता की बहन) के जीवन के यह दर्द भरी कहानी है। वास्तव में यह कथा उसी के दुख दर्द से शुरू होकर उसी के अंत के साथ समाप्त होती है। मृणाल के माता-पिता का देहांत हो गया है इसलिए उसके लालन-पालन और संरक्षण का स्वाभाविक दायित्व उसके बड़े भाई का है। भाई-भाभी के कठोर नियंत्रण को बहुत ध्यान और चिंता से उसका पाँच वर्ष का भतीजा प्रमोद देखता रहता है। पढ़ाई करते समय प्रमोद की बुआ मृणाल का प्रेम उसकी सहेली शीला के भाई से हो जाता है। यह रहस्य खुलने पर पहले तो वह निर्दयतापूर्वक पीटी जाती है और फिर प्रमोद के माता पिता द्वारा एक वयस्क विधुर के साथ जबरन उसका विवाह कर दिया जाता है। एक दिन मृणाल निश्छलतापूर्वक अपने विवाह पूर्व के प्रेमी के तभी आए पत्र की चर्चा अपने पति से कर देती है। वह क्रोधित हो जाता है और मृणाल को मारपीट कर अपने घर से निकाल दूसरे अलग कमरे में ला पटकता है। फिर कभी उसकी सुध भी नहीं लेता है। मृणाल को विवश होकर एक अनजान कोयला बेचनेवाले का आश्रय स्वीकार कर लेना पड़ता है। कोयलेवाला मृणाल के रूप का लोभी अवश्य है किन्तु अपने परिवार, समाज और उनके बारे में लापरवाह होकर तब आता है जब मृणाल को वास्तव में अन्न-जल के भी लाले हैं। उसके साथ रहते वह गर्भवती हो जाती है। एक दिन वह कोयले वाला भी उससे उकताकर और उसे बदजात व्यभिचारिणी मानकर त्याग देता है। प्रमोद उसे घर ले जाना चाहता है किन्तु वह मना कर देती है।मृणाल अस्पताल में एक बच्ची को जन्म देती है। बच्ची दस महीने बाद ही कुछ रोग से और कुछ भूख से मर जाती है। कुछ वर्षों के बाद राजनंदिनी नामक सर्वगुणसम्पन्न कन्या से प्रमोद का विवाह संबंध बनते बनते इसलिए टूट जाता है क्योंकि प्रमोद राजनंदिनी के घर में बच्चों को पढ़ाने वाली स्त्री को पहचानकर सबको बता देता है कि यह स्त्री उसकी बुआ मृणाल है। बुआ का वह काम छूट जाता है, स्कूल की नौकरी चली जाती है। फिर वह समाज की 'जूठन' कहे जाने लोगों के बीच जा बसती है। मृणाल समाज के निम्नवर्गीय लोगों के बीच जीवन व्यतीत करती है और कई बीमारियों से ग्रसित हो जाती है। मायके के बिलकुल स्नेह रहित, रूढ़िवादी और उदासीन परिवार द्वारा उसके प्रेम का अस्वीकार, एक दुहाजू और प्रौढ़ व्यक्ति से उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह, पति का शंकालु कठोर स्वभाव और उसके द्वारा मृणाल का शारीरिक पीड़न और शोषण और अंततः घर से निष्कासन, यह सब उसके साथ होता है और इसके जवाब में वह आत्महत्या न कर ऐसी जीवन-पद्यति अपनाती है, जो समाज के मुख पर तमाचा है। कुछ वर्षों के बाद सांसारिक कष्टों को किसी प्रकार से झेलते हुए एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती है। इस दुख से दुखी होकर प्रमोद अपनी जजी से त्यागपत्र देकर संसार से विरक्त हो जाता है। एम. दयाल जजी छोड़ देते हैं। यह 'त्यागपत्र' है। क्यों? वे

दूसरों के लिए रहना न सीख पाये पर इतना निश्चय कर सके हैं कि उतनी ही स्वल्पता से रहेंगे जितना अनिवार्य होगा।

बोध प्रश्न

- मृणाल के भतीजे के बचपन और बड़े होने पर क्या क्या नाम थे?
- सहेली के भाई से प्रेम करने का क्या परिणाम होता है?
- मृणाल का पति उससे दुर्व्यवहार क्यों करता है? मृणाल इसका क्या उत्तर देती है?
- कोयले वाला मृणाल के लिए आश्रयदाता और कष्ट का कारण दोनों है, कैसे?
- राजनंदनी से प्रमोद का संबंध क्यों टूटा?
- बच्चों को पढ़ाने का काम छूट जाने के बाद मृणाल ने कहाँ शरण ली? वहाँ उसका जीवन कैसा था?

अब हम उपन्यास के दो महत्वपूर्ण उद्धरणों (आदि और अंत) के साथ इस कथा की गहराई में उतरेंगे। यह आप ध्यान रखें कि कोष्ठक में दी गई पृष्ठ संख्या इस पुस्तक के प्रथम संस्करण की है। आज तक न जाने इस उपन्यास के कितने संस्करण निकाले जा चुके हैं। उपन्यास का आरंभ कुछ इस प्रकार से होता है-

नहीं भाई। पाप-पुण्य की समीक्षा मुझसे न होगी। जज हूँ, कानून की तराजू की मर्यादा जानता हूँ। पर उस तराजू की जरूरत को भी जानता हूँ। इसलिए कहता हूँ कि जिनके ऊपर राई-रत्ती नाप जोखकर पापी कहकर व्यवस्था देने का दायित्व है, वे अपनी जानें। मेरे बस का वह काम नहीं है। मेरी बुआ पापिष्ठा नहीं थीं, यह भी कहनेवाला मैं कौन हूँ? पर आज मेरा जी अकेले में उन्हीं के लिए चार आँसू बहाता है। मैंने अपने चारों ओर तरह-तरह की प्रतिष्ठा की बाड़ खड़ी करके खूब मजबूत जमा ली है। कोई अपवाद उसको पारकर मुझ तक नहीं आ सकता। पर उन बुआ की याद मुझे अब चैन लेने देगी? उनके मरने की खबर अभी पाकर बैठा हूँ। मुझको नहीं मालूम वह कैसे मरीं? घुल-घुल कर मरीं, इतना तो जानता हूँ (पृष्ठ 1)।

और अंत होता है -

बुआ, तुम गईं। तुम्हारे जीते जी मैं राह पर न आया। अब सुनो, मैं यह जजी छोड़ता हूँ। जगत का आरंभ-समारंभ ही छोड़ दूँगा। औरों के लिए रहना तो शायद नये सिरे से मुझसे सीखा न जाय। आदतें पक गई हैं। पर अपने लिए तो उतनी ही स्वल्पता से रहूँगा जितना अनिवार्य होगा। यह वचन देता हूँ। भगवान, तुम मेरी बात सुनते हो। वैसे चाहे न भी दो, पर वचन तोड़ूँ तो मुझे नरक अवश्य ही देना। पुनश्च - इसी के साथ सही करता हूँ कि जजी से अपना त्याग-पत्र मैंने दाखिल कर दिया है। (पृष्ठ 112)

बोध प्रश्न

- उपरोक्त पंक्तियों के वक्ता का परिचय क्या है?
- वह किसके जीवन के बारे में कह रहा है? उसे क्या हुआ है?
- 'मेरी बुआ पापिष्ठा नहीं थीं' इस कथन का अर्थ क्या है?

- दूसरे अनुच्छेद में कौन किसको कब संबोधित कर रहा है और क्यों?
- आदतें पक जाने का क्या तात्पर्य है? इसमें किस ओर संकेत है?
- 'त्यागपत्र' के कई अर्थ यहाँ हैं, कम से कम दो अर्थ स्पष्ट कीजिए।

त्यागपत्र हिंदी के अनोखे उपन्यासों में से एक है। जब यहाँ कोई कथा नहीं है तो सीधा कथानक कहाँ से होगा? घटनाएँ हैं जो कुछ पात्रों के जीवन में घटती हैं। 'घटनाएँ होती हैं, होकर चली जाती हैं। मृणाल पापिष्ठा थी या नहीं, इसका फ़ैसला न्यायाधीश एम दयाल भी नहीं कर पाते। मृणाल के पहाड़ से जीवन की यही तो छोटी सी कथा है। अब कथा कुछ सिलसिलेवार समझते हैं।

युवा मृणाल अपने माता पिता के देहांत के बाद अपने भाई-भाभी और भतीजे प्रमोद के साथ रहती है, "स्वभाव से हँसमुख और निर्द्वंद्व। जब वह ठहाका मारकर हँसती तो प्रमोद को कहानी की परियों का ध्यान हो आता। रूप का आलम यह कि ऐसा रूप कब किसको विधाता देता है।" इसी दौर में उसके जीवन में एक प्रेमी आ जाता है। वह अपनी सहेली शीला के भाई से प्रेम करने लगती है। फिर तो वह मानो आकाश में पंछी की तरह उड़ना चाहती है। "मैं नहीं बुआ होना चाहती। बुआ! छी! देख, चिड़ियाँ कितनी ऊंची उड़ जाती हैं। मैं चिड़िया होना चाहती हूँ।" प्रेम मृणाल को बदल कर रख देता है। वह अपनी सहेली के घर देर तक रुकने लगती है। एक दिन तो इतनी देर हो जाती है कि नौकर भेजकर उसे बुलवाना पड़ता है। भेद खुल जाता है। मृणाल की भाभी उसकी पिटाई बहुत निर्ममता से करती है। प्रमोद कहता है, "वह दिन था कि फिर बुआ की हँसी मैंने नहीं देखी ...बुआ का उसी दिन से पढ़ना छूट गया था।" इतना ही नहीं, इसके कुछ समय बाद उसका विवाह भी उससे उम्र में बहुत बड़े एक विधुर व्यक्ति से कर दिया गया। मृणाल का प्रेम करना क्या कोई इतना बड़ा अपराध था? "विवाह से पहले बुआ कई घंटे अपनी छाती से मुझे चिपकाए बहुत-बहुत रोती रहीं।" चिड़िया होने का सपना समाप्त हो गया। वह प्रमोद से कहती है, "तेरी बुआ तो मर गई। तू उसे अब कभी याद मत करियो।" विवाह को निभाने की भरसक कोशिश करती है, "ब्याह के बाद मैंने बहुत सोचा, बहुत सोचा। सोचकर अंत में यही पाया कि मैं छल नहीं कर सकती। छल पाप है। हुआ, जो हुआ, ब्याहता को पतिव्रता होना चाहिए।" वह पूरी ईमानदारी के साथ अपने पति के सामने अपने प्रेमी के खत और उसके उत्तर में लिखे गए अपने खत को रख देती है। किन्तु पति उसके इस कार्य में उसकी सच्चाई नहीं देखता। उसका पाप देखता है। यही वह घटना है जो मृणाल के जीवन को फिर बदल कर देती है।

बोध प्रश्न

- 'मृणाल बुआ नहीं चिड़िया होना चाहती है' इसका अर्थ क्या है?
- मृणाल के पत्रों को देखकर उसके पति की क्या प्रतिक्रिया थी?

मृणाल का पति उसे त्याग देता है। शहर के किसी गंदे इलाके में वह एक कोठरी में जा रहती है। उन दो पत्रों में ऐसा कुछ भी न था जिसके लिए कोई पति अपनी पत्नी को इतना बड़ा

दंड दे। पर इस समाज में घर पुरुष का होता है। वह घर का मालिक बनकर अपनी गृहणी को ही निकाल बाहर करता है। मृणाल प्रमोद से कहती है, “तू जानता है, पति का घर क्या होता है? स्वर्ग होता है। जानता है स्वर्ग क्या होता है? स्वर्ग बड़े आराम की जगह है ... वहाँ देवता रहते हैं।” पति ने अपनी पत्नी पर चरित्रहीन होने का आरोप लगाया। पत्नी के उत्तर नहीं दिया। अपना धर्म निभाया। “वे मुझे देखना नहीं चाहते, यह जानकर मैंने उनकी आँखों के आगे से हट जाना स्वीकार कर लिया।” पति द्वारा निकाल दिये जाने पर उसका संबंध एक कोयले वाले के साथ होता है। कोयले वाले की सहायता और आसरा वह उस पर दया करके स्वीकार करती है। इस ‘करुणा’ के कारण ही उसने उस कोयलेवाले हो अपनी देह सौंप दी। मृणाल जैसी समझदार से यह क्या हो गया? परिणाम वही होता है जो हो सकता है। वह कोयले वाले का गर्भ लिए है। किसी तरह पता मालूम करके प्रमोद बुआ से मिलने जाता है। वह उसको कोयले वाले से छुड़ाकर अपने साथ ले जाना चाहता है। “मैं बस एक बदजात व्यभिचारिणी स्त्री हूँ।” “जरूर ले चलेगा तो सुन। मैं नहीं जाऊँगी, मैं नहीं जा सकती। तुम मुझको नहीं जानते हो। मैं पति के घर को छोड़ कर आ गई हूँ। पति है, पर दूसरे पुरुष के आसरे रह रही हूँ। ...जिनके सहारे मैं बची, उन्हीं को छोड़ देने की मुझसे कहते हो? मैं नहीं छोड़ सकती। पापिनी हो सकती हूँ, पर उसके ऊपर क्या अकृतज्ञ भी बनूँ, नहीं।”

बोध प्रश्न

- “स्वर्ग बड़े आराम की जगह है। वहाँ देवता रहते हैं।” निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।
- मृणाल कोयले वाले को छोड़कर अपने भतीजे के साथ क्यों नहीं गई?

प्रमोद लौट आता है। उसे पता चल चुका है कि उसकी बुआ उसकी नहीं सुनने वाली। वह आत्मव्यथा के द्वारा स्वयं को शुद्ध करने में लगी है शायद। जिंदगी बहती चली जाती है। प्रमोद खोज खबर लेता है तो पता चलता कि कोयले वाला कब का भाग खड़ा हुआ है। प्रमोद के रिश्ते की बात फिर चलती है तो वह राजनंदिनी नामक लड़की के घर जाता है। राजनंदिनी के घर में एक स्त्री बच्चों को ट्यूशन पढ़ा रही है। वह मृणाल है। प्रमोद अपनी बुआ को पहचान लेता है। वह अपनी बुआ से मिलने उसके घर जाता है जहाँ उसे मृणाल द्वारा बताया जाता है कि मृणाल और कोयले वाले की संतान कुछ बीमारी से और कुछ भूख से मर गई है । प्रमोद को पता चलता है कि मृणाल भटकते भटकते यहाँ आकर अब इस स्थान पर स्कूल में पढ़ाती है और घर-घर जाकर ट्यूशन भी पढ़ा देती है। प्रमोद अपनी होने वाली ससुराल वालों को बता देता है कि यह मास्टरनी उसकी बुआ है। उसके ससुर को तो नहीं पर होने वाली सास को इस पर एतराज होता है और रिश्ता बनने से पहले ही टूट जाता है। मृणाल को भी इस कारण अपनी ट्यूशन ही नहीं नौकरी भी गंवानी पड़ती है।

बोध प्रश्न

- प्रमोद का राजनंदिनी से रिश्ता बनने से पहले की क्यों टूट गया। इसका जिम्मेदार कौन था?
- इस प्रसंग से समाज की किस मानसिकता की ओर संकेत है?

बहुत हो गया। कहानी को और कितना बढ़ाया जा सकता है। जैनेन्द्र कुमार ने मृणाल की कहानी को और आगे नहीं बढ़ाया। “घटनाएँ होती हैं, होकर चली जाती हैं। हम जीते हैं, और जीते जीते एक रोज मर जाते हैं। ”वहाँ से छूट कर मृणाल उन लोगों के बीच जा बसती है जो समाज की जूठन कहे जाते हैं। प्रमोद मृणाल से पत्र व्यवहार करता है तो मृणाल उसे यही कहती है, ‘तुम न आना।” फिर भी वह जाता है। वह बीमार होती है फिर भी साथ नहीं आती। समय अपनी गति से बीतता चला जाता है। और कई वर्षों बाद उसकी मृत्यु का समाचार आता है। कैसे मर गई? जानने की कोई जरूरत नहीं है। “बुआ तुम गईं। तुम्हारे जीते जी मैं राह पर न आया। अब सुनो, मैं यह जजी छोड़ता हूँ।” बालक प्रमोद अब जज एम, दयाल हैं। वे जजी से अपना त्यागपत्र दाखिल कर देते हैं। यही उनका त्यागपत्र है। त्यागपत्र और भी हैं। और कई हैं? हैं, ना।

बोध प्रश्न

- ‘समाज की जूठन’ से किन लोगों की ओर संकेत है?
- जैनेन्द्र कुमार ने कहानी को ओर आगे नहीं बढ़ाया? क्यों?
- ‘त्यागपत्र’ देकर जज साहब किस बात का पश्चाताप और प्रायश्चित करते हैं?

6.4 पाठ सार

हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार का उपन्यास त्यागपत्र मृणाल नामक स्त्री की जीवन की दुखभरी कहानी है। कहानी सामाजिक है किन्तु आधार मनोवैज्ञानिक है। कहानी में पात्रों की संख्या सीमित है। मृणाल और उसका भतीजा प्रमोद (जज एम दयाल) ये दो प्रमुख पात्र हैं। अन्य गौण पात्र है - मृणाल की सहेली - शीला और उसका भाई, मृणाल का अधेड़ पति, मृणाल को अपने घर में रखने वाला कोयले वाला, मृणाल के भाई-भाभी आदि। कथा इस प्रकार है -

मृणाल खिलती कली सी सुंदर और स्वतंत्र विचारों वाली लड़की है। उसके माता पिता का देहांत हो चुका है और वह अपने भाई और भाभी और उनके पुत्र प्रमोद के साथ रहती है। प्रमोद की माँ मृणाल को कठोर अनुशासन में रखती है। मृणाल अपनी सहेली के घर आती जाती है और वहाँ उसके डाक्टरी पढ़ रहे भाई से प्रेम करने लगती है। भाभी को जब इसका पता चलता है तो यह मृणाल को बहुत मारती है। भाभी और भाई मिलकर कुछ महीनों में ही मृणाल का विवाह एक अधेड़ उम्र के विधुर के साथ जबरन कर देते हैं। मृणाल बिना किसी विरोध के सामाजिक मान्यताओं का पालन करते हुए पति के साथ रहने लगती है। यह सोचकर कि उसे अपने पति से अपने विवाह-पूर्व के प्रेम को अपने पति से नहीं छुपाना चाहिए, वह अपने पति को अपना और अपने प्रेमी के पत्र दिखाकर सब कुछ सच सच बता देती है। यह जानकर वह मृणाल को क्षमा करने के स्थान पर उसे घर से निकालकर एक यातनाभरी कोठरी में डाल देता है। अपने भाई भाभी से उसे आश्रय की कोई उम्मीद नहीं है। वह हारकर एक कोयले वाले का प्रस्ताव स्वीकार कर लेती है। उसके साथ रहने लगती है। वह भी इस प्रकार सामाजिक बंधनों

का परित्याग कर देती है। वह कोयले वाला भी कुछ दिन उसके साथ रहकर और उसके गर्भ में अपना बच्चा छोड़कर भाग खड़ा होता है। वह घर का सामान भी ले जाता है। गर्भवती मृणाल मिशन अस्पताल में एक कन्या को जन्म देती है। यह कन्या भी कुछ महीनों बाद कुछ भूख और कुछ बीमारी से मर जाती है। मृणाल दुखी होकर आत्महत्या नहीं करती। वह एक स्कूल में जाकर बच्चों को पढ़ाने लगती है। घर घर जाकर बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाने लगती है। प्रमोद एक बार तो अपनी बुआ से तब मिलता है जब वह कोयले वाले के साथ रहती है। पर मृणाल प्रमोद का प्रस्ताव मानकर उसके साथ घर वापिस नहीं जाती। प्रमोद के रिश्ते की बात चलती है। वह लड़की देखने जाता है उस लड़की के घर में मृणाल बच्चों को पढ़ाती है। प्रमोद उस परिवार को साफ साफ बता देता है कि उनके यहाँ ट्यूशन पढ़ाने वाली महिला उसकी बुआ है। इस बात को सुनकर लड़की की माँ रिश्ता नहीं होने देती। मृणाल का ट्यूशन और नौकरी दोनों छूट जाते हैं। उसे अब समाज के तथाकथित सभ्य लोगों की बस्तियों में रहने नहीं दिया जाता। वह एक गंदी बस्ती में रहने लगती है। वह बस्ती अपराधियों और चोर-उच्चकों की है। प्रमोद वहाँ भी जाता है। पर मृणाल को वापिस नहीं ला पाता। समय अपनी गति से बीतता जाता है।मृणाल जीवन में संघर्ष करती रहती है। कुछ वर्ष बाद प्रमोद को पता चलता है कि उसकी बुआ समाज के द्वारा दिये गए दुख सहते सहते बीमारी और गरीबी के कारण चल बसी। प्रमोद जो उस समय एक प्रतिष्ठित जज है और उसका नाम एम दयाल है, वह इस समाचार को सुनकर बहुत निराश और दुखी होता है। उसे अपने सम्पूर्ण जीवन की कथा याद आ जाती है। उसे अपनी बुआ की जीवन भर की पीड़ा का स्मरण हो आता है। पश्चाताप और प्रायश्चित करने के लिए वह अपने पद से त्यागपत्र दे देता है। वह यह प्रण भी करता है कि वह अब सादा जीवन व्यतीत करेगा। समाज की रूढ़ियों में जकड़े रहने के कारण वह भी अपनी बुआ की कोई मदद न कर सका उसका दुख उसे सदा रहा।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से :

1. ‘त्यागपत्र’ उपन्यास के कथानक के प्रमुख बिन्दुओं से परिचित प्राप्त
2. उपन्यास के प्रमुख पात्रों और उनके पारस्परिक संबंध को जान सके
3. ‘त्यागपत्र’शीर्षक के विविध निहितार्थों पर गौर कर सके
4. घटनाओं और प्रसंगों के आधार पर उनका विवेचन कर सके

6.6 शब्द सम्पदा

1. जूठन = खाने-पीने से बची हुई जूठी वस्तु, अवशिष्ट, समाज का वह वर्ग जिसे तथाकथित उच्च वर्ग ‘नीच’ या ‘नीचा’ समझकर अपमानित करता है ।
2. दुहाजू = कोई विधुर (विधवा भी) यदि दूसरा विवाह करता है तो उसे दुहाजू कहते हैं ।

3. नियति   = भाग्य, जिसका होना निश्चित हो, प्रारब्ध

4. निर्मम   = ममता रहित, निष्ठुर, कठोरता पूर्वक किया जाने वाला

5. पश्चाताप   = पछतावा, दुख

6. पापिष्ठा   = पाप करने वाली स्त्री, पर पुरुष के साथ संबंध बनाने वाली स्त्री

7. प्रायश्चित   = पाप कर्म के फल, भोग से बचने हेतु किया जानेवाला शास्त्र विहित कर्म (जैसे-दान-व्रत करके प्रायश्चित करना)। ग्लानिवश किया गया कठोर आचरण।

8. बदजात   = खोटा, नीच, कमीना, बहुत बुरा

9. बाड़= चहार दिवारी, **बाड़** ऐसा निर्मित ढांचा होता है जो किसी क्षेत्र को घेरकर बन्द कर, विशेषकर किसी घर या अन्य भवन से बाहर किसी इलाके में। इसे आमतौर पर खम्बों से बनाया जाता है, जिनके बीच में तार, फट्टे, जाल, सलाखें या अन्य रुकावटें लगाई जाती हैं।

9. विधुर   = जिस पुरुष की पत्नी मर गई हो

10. व्यभिचारिणी = (व्यभिचार: स्त्री पुरुष का अनुचित संबंध; बहुत ही निकृष्ट आचरण।) वह स्त्री जिसका आचरण अनुचित हो ।

11. स्वल्पता   = मितव्ययता, थोड़ा खर्च, किफायत

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'त्यागपत्र' उपन्यास का कथासार अपने शब्दों में लिखिए ।
2. 'त्यागपत्र'उपन्यास की कथा को अपने मित्र को एक पत्र के रूप में लिखिए ।
3. "त्यागपत्र एक स्त्री के जीवन की दुखभरी कहानी है।" उपन्यास की कथा के आधार पर इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।
4. उपन्यास के कथानक के आधार पर इसके शीर्षक 'त्यागपत्र' की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
5. "इतने वर्ष बीत जाने पर भी स्त्री विमर्श के धरातल पर यह उपन्यास सार्थक है।" इस कथन के पक्ष-विपक्ष की समीक्षा कीजिए।
6. कथानक के आधार पर मृणाल और प्रमोद के पारस्परिक संबंध की विवेचना कीजिए ।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. विवाह से पूर्व मृणाल अंतहीन आकाश की चिड़िया थी और विवाह के बाद? क्यों?
2. प्रमोद के साथ किस कारण मृणाल दोनों बार अपने मायके वापिस नहीं गई?
3. इस कथा के आधार पर भारतीय समाज की रूढ़िवादी सामाजिक और पारिवारिक मान्यताओं की समीक्षा कीजिए।

4. उपन्यास के कथा सार के आधार पर निम्नलिखित पर संक्षित टिप्पणी लिखिए –

i) त्यागपत्र – नारी जीवन की दुखपूर्ण कथा

ii) पुरुष -वर्चस्व वाले समाज में स्त्री

iii) पाप-पुण्य का प्रश्न और त्यागपत्र

iv) जीवन की सार्थकता का प्रश्न और त्यागपत्र

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. मृणाल की सहेली का नाम है – ( )

(अ) प्रियदर्शिनी (आ) शीला (इ) राजनंदिनी (ई) मीना

2. जस्टिस एम दयाल का बचपन का नाम है – ( )

(अ) विनोद (आ) प्रमोद (इ) मनोहर दयाल (ई) इनमें से कोई नहीं

3. मृणाल को घर से निकाला – ( )

(अ) उसकी भाभी ने (आ) कोयले वाले ने (इ) पति ने (ई) स्कूल के प्रधानाचार्य ने

4. “नहीं भाई। पाप –पुण्य की समीक्षा मुझसे न होगी।”किसने कहा ( )

(अ) लेखक ने (आ) जज साहब ने (इ) शीला ने अपने भाई से (ई) कोयले वाले ने

5. “तू जानता है, पति का घर क्या होता है?” मृणाल ने पूछा । ( )

(अ) स्वर्ग (आ) ससुराल (इ) नरक (ई) आनंद भवन

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. प्रमोद ने कहा, “मेरी बुआ ....नहीं थी।”

2. मृणाल ने कहा, “मैं नहीं .... नहीं होना चाहती, मैं .... होना चाहती हूँ।”

3. “प्रमोद, मैं .... नहीं कर सकती, ... करना पाप है।”

4. मैं बस एक ...., ... स्त्री हूँ ।
5. “जजी से मैंने अपना ....दाखिल कर दिया है।”

III. सुमेल कीजिए

निम्नांकित वाक्यांशों को कथानक के अनुसार उचित क्रम दीजिये-

क) आत्मपीड़न और मरण

ख) पति का शंकालु कठोर स्वभाव ,मृणाल का शारीरिक पीड़न और शोषण और घर से निष्कासन

ग) एक दुहाजू और प्रौढ़ व्यक्ति से उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह

घ) मायके के रूढ़िवादी परिवार द्वारा विवाह पूर्व प्रेम का अस्वीकार

6.8 पठनीय पुस्तकें

त्यागपत्र (1937) : जैनेन्द्र कुमार, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई। (मूल पुस्तक ईपुस्तकालय (इंटरनेट) पर उपलब्ध है।)

इकाई 7 : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : पात्र एवं चरित्र चित्रण

रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 मूल पाठ : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : पात्र एवं चरित्र चित्रण
7.3.1 पात्र परिचय
7.3.2 मुख्य पात्र मृणाल
7.3.3 मृणाल का चरित्र चित्रण
7.3.4 प्रमोद का चरित्र चित्रण
7.4 पाठ सार
7.5 पाठ की उपलब्धियाँ
7.6 शब्द संपदा
7.7 परीक्षार्थ प्रश्न
7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

प्रेमचंद के अभिन्न मित्र और उनके समय से ही उपन्यास और कहानी लेखन करके प्रसिद्ध हुए जैनेन्द्र कुमार का प्रतिनिधि उपन्यास 'त्यागपत्र', निश्चय ही 'पुरुष-सत्ता के दुर्ग-द्वार पर स्त्री की दस्तक' (रामेश्वर राय) है। इसे असंदिग्ध रूप से उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जा सकता है। पात्रों और चरित्र चित्रण की विलक्षणता के कारण इस उपन्यास की लोकप्रियता आज भी कायम है। इस उपन्यास में दो विपरीत विचारधाराओं का चित्रण करते समय पात्रों को एक दूसरे को अलग अलग धाराओं में बहता दिखाया गया है। प्रमोद और मृणाल जैसे दो मुख्य पात्रों के चरित्र चित्रण के द्वारा समाज के तथाकथित शुक्ल और कृष्ण पक्षों का प्रकाशन करके उपन्यासकार ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री के स्थान को सुनिश्चित करने की चेष्टा की है।इन दोनों पात्रों का इस उपन्यास के गौण पात्रों से संवाद कराकर ही कथानक को आगे बढ़ाया गया है। इन दोनों का परस्पर संबंध और विरोधी विचार प्रवाह इस उपन्यास की जान है। इस इकाई में आप प्रमोद और मृणाल की मनोदशा के चित्रण के साथ साथ ही अन्य पात्रों के उपन्यास के घटना क्रम में भी सम्यक विचार विमर्श करेंगे।

7.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! आप जैनेन्द्र कुमार के उपन्यास 'त्यागपत्र' के कथानक से भली-भांति परिचित हो चुके हैं। इस इकाई में आप इस उपन्यास के प्रमुख और गौण पात्रों के विषय में पढ़ेंगे। 'त्यागपत्र' उपन्यास के पात्र और चरित्र-चित्रण पर आधारित इस इकाई के अध्ययन से आप -

- उपन्यास के प्रमुख और गौण पात्रों का परिचय प्राप्त करेंगे।
- इस अध्ययन से इन पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत कर सकेंगे।
- कथानक की प्रमुख घटनाओं के आधार पर पात्रों के पारस्परिक सम्बन्धों का उदघाटन कर सकेंगे।
- आप यह भी जान सकेंगे कि 'त्यागपत्र' को क्यों एक चरित्र प्रधान उपन्यास कहा जाता है।

7.3 मूल पाठ : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : पात्र एवं चरित्र चित्रण

7.3.1 पात्र परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद के समय से उपन्यास और कहानी लेखन में अपना अलग स्थान बनाने वाले जैनेन्द्र कुमार का प्रतिनिधि उपन्यास 'त्यागपत्र' एक चरित्र प्रधान उपन्यास है। वास्तव में यहाँ कोई सुसंबद्ध कथानक नहीं है। कुछ परिस्थितियाँ हैं जिनमें इस उपन्यास के प्रमुख पात्र 'मृणाल' को इस प्रकार डाल दिया गया है कि उसका चरित्र स्वयं विकसित होता चला जाता है। मृणाल का प्रेमी, भैया-भाभी, पति आदि ऐसे पात्र नहीं है जिन्हें जैनेन्द्र ने चरित्र के रूप में विकसित किया हो। वे केवल घटना क्रम को विकसित करते हैं और चले जाते हैं। उनका कोई स्वतंत्र और स्मरणीय व्यक्तित्व नहीं बन पाता। 'हिन्दी उपन्यास कोश' के लेखक डॉ गोपाल राय के अनुसार जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों की कहानी अधिकतर एक परिवार की कहानी होती है और वे 'शहर की गली और कोठरी की सभ्यता' में ही सिमट कर व्यक्ति पात्रों की मानसिक गहराइयों में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं। 1930-40 में समाज की चिंता और उसके मानकों की चिंता किए बिना विवाह और परिवार संस्था केप्रति प्रश्न उठाना स्वयं में एक आंदोलन से कम न था।यह काम इन पात्रों ने किया।

उपन्यास का केंद्रीय पात्र तो मृणाल ही है। मृणाल का भतीजा (जस्टिस दयाल या प्रमोद) हो या मृणाल से जुड़े अन्य पात्र - ये सभी आधुनिक नारी के मन की व्यथा को रेखांकित करते प्रतीत होते हैं। इन दो पात्रों के अतिरिक्त शेष जो पात्र आए हैं, वे केवल रेखाचित्र मात्र हैं।यदि पहले हम इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों के स्थान पर गौण पात्रों को देखते हैं तो मृणाल के भाई-भाभी, मृणाल की बाल-सखा शीला और उसका डॉक्टरी में पढ़ने वाला तथा मृणाल से प्रेम करने वाला भाई, मृणाल का हृदयहीन अधेड़ पति, स्वार्थी और स्त्री को वासना के लिए उपयोग करने वाला कोयलेवाला, प्रमोद की मंगेतर और उसके रूढ़ि वादी माता-पिता आदि दिखाई देते हैं। एक एक करके ये सभी अपनी अपनी खोखली मान्यताओं और परम्पराओं को ढोने वाले हताश से लोग हैं। साथ ही कुछ अनाम से वे लोग भी हैं जो गंदी बस्ती में रहते हैं और अभद्र कहे जाते हैं। वे समाज की 'जूठन' कहे जाने वाले लोग 'भद्र' लोगों से कई गुना बेहतर हैं। जैनेन्द्र कुमार के द्वारा रचित तथाकथित 'उच्च' समाज के पात्र और तथाकथित 'निम्न' समाज के पात्र एक दूसरे से भिन्न हैं। भद्र लोग उसी प्राचीन परिपाटी पर चलकर 'लकीर के फकीर' से कुछ अधिक नहीं। वे जाति-व्यवस्था का अनुगमन, कुँवारेपन की रक्षा, माता-पिता की इच्छा के अनुसार विवाह,

पातिव्रत्य धर्म का पालन, सतीत्व जीवन का निर्वाह आदि रूढ़ियों का पालन किए जाते हैं। यदि मृणाल जैसा कोई इन सड़े-गले मूल्यों की उपेक्षा करता है तो समाज उसके विरोध में खड़ा हो जाता है। आपने यह ध्यान दिया होगा कि समाज के 'अभद्र' कहे जाने वाले इस वर्ग में इन रूढ़ियों के पालन की कोई बाध्यता नहीं। किन्तु उनके परिवेश में इंसानियत पायी जाती है। यह इंसानियत 'भद्र' समाज में ढूँढने से भी नहीं मिल पाती।

बोध प्रश्न

- 'त्यागपत्र' उपन्यास के प्रमुख और गौण पात्रकौन हैं? अलग अलग करके लिखिए।
- भद्र(कुलीन) और अभद्र (निम्न) वर्गों के क्या अर्थ हैं?
- 'भद्र' क्या करके भद्र बने रहने का ढोंग करते हैं?

7.3.2 मुख्य पात्र मृणाल

'त्यागपत्र' (1937) नामक जैनेन्द्र कुमार के इस उपन्यास में, जैसा कि आपने ध्यान दिया होगा, कोई सुसंबद्ध कथानक पकड़ में नहीं आता। लगता है उपन्यासकार ने कुछ परिस्थितियों का निर्माण किया और उनमें इस कथा के प्रमुख पात्र 'मृणाल' को अपने आप विकसित होने के लिए खुला छोड़ दिया। परिस्थितियाँ भी ऐसी कुछ अनूठी नहीं और न ही कदाचित स्पष्ट ही हैं।इस बात को ध्यान में रखते हुए हमें सर्वप्रथम 'मृणाल' के चरित्र पर ध्यान देना होगा।

उपन्यास के प्रारंभ में ही यह स्पष्ट हो जाता है कि मृणाल माँ-बाप विहीन एक कन्या है जिसके लालन पालन का दायित्व उसके भाई बहिन का है। प्रमोद मृणाल के भाई का पुत्र है और उसके प्रति मृणाल का सहज और अगाध ममत्व है। प्रमोद उसके सुख-दुख का साथी है। मृणाल हद-दर्जे की सुंदर है, प्रमोद के पिता अपनी बहिन की मोहिनी सूरत पर रीझ रीझ जाते हैं और स्वयं प्रमोद - "बुआ का तब का रूप सोचता हूँ तो दंग रह जाता हूँ। ऐसा रूप कब किसी को विधाता देता है" (त्यागपत्र, पृष्ठ 3)।

मृणाल अपनी सहेली शीला के भाई से प्रेम करती है पर यह प्रेम विवाह के रूप में नहीं बदल जाता। माता-पिता की स्नेह छाया से वंचित मृणाल भाई के घर घृणित-उपेक्षित जीवन बिताती है। प्रेम की सुगबुगाहट का पता चलते ही मृणाल के भाई की पत्नी उसे निर्ममता से पीटती है। इसके पश्चात 'लोग क्या कहेंगे' की सोचकर उसका विवाह एक बड़ी आयु वाले दुहाजू से होता है। यह व्यक्ति न तो उसे प्रेम दे पाता है और न सम्मान। उसे मन में अपनी पत्नी को लेकर एक भ्रम रहता है। वह उसे दुश्चरित्रा समझता है। विवाहित जीवन नरक तुल्य हो जाता है। पति के घर में उसे कठोर व्यवहार और बेंतों की मार मिलती है। वह अपने भाई - भावज के घर वापस आकर पति-परित्यक्ता का जीवन बिताना चाहती है किन्तु वे उसे मैके में टिकने नहीं देते। वह विवश होकर फिर से अपने ससुराल में कष्ट भोगने लगती है। और एक दिन वह भाग खड़ी होती है। वहाँ से निकलकर वह एक कोयले वाले को आत्मसमर्पण कर देती है।कोयले वाले का उसके प्रति प्रेम केवल वासना होता है। वह अपना उल्लू सीधा करता है और एक दिन उसकी

सारी कमाई लेकर भाग जाता है जबकि मृणाल उसके प्रति एक प्रकार का पत्नीत्व धर्म निभाती है। कहीं पढ़ाने लगती है। वह जीने के सभी प्रयत्न करती है किन्तु कोई न कोई बाधा आती चली जाती है। फिर वह इस तथाकथित मर्यादाप्रिय समाज को त्यागकर एक बदनाम बस्ती में रहने लग जाती है। वह जीने का प्रयत्न करती है पर उसके जीवन में सुख नहीं रहता। मृणाल की पीड़ा ही उसके जीवन की एक तपस्या है। उसकी समस्याएँ सम्पूर्ण नारी जगत की समस्याएँ हैं और उनका समाधान संसार के लिए चुनौती है। मनुष्य की संकीर्ण मनोभावना और नारी का शोषण करते हुए उसे अपनी वासना का साधन बनाए रखने की इच्छा तथा अहंकार जब तक रहेगा तब तक मृणाल सरीखे चरित्र अपनी वास्तविक गरिमा को प्राप्त न हो सकेंगे।

जैनेन्द्र कुमार ने अपने उपन्यास 'त्यागपत्र' में मृणाल का जो चरित्र प्रस्तुत किया है वैसा चरित्र या उसके समान स्त्रियाँ हमारे समाज में असाधारण नहीं हैं। मृणाल के नैतिक पतन में किसका दोष है यह जानना बहुत कठिन है। उसका विवाह उसकी मर्जी के बगैर हुआ। प्रेमचंद के उपन्यास 'सेवासदन' की नायिका सुमन का विवाह भी ऐसे व्यक्ति से कराया गया था जो उसके योग्य न था, पर उसका कारण आर्थिक विवशता थी। यहाँ ऐसी कोई विवशता या गरीबी नहीं। पुरुष के संदेह करने से सुमन और मृणाल दोनों का पतन हुआ। मृणाल ने अपने पतन को स्वेच्छा से स्वीकार किया। उसने कभी अच्छी स्थिति में अपने को ले जाने का प्रयत्न भी नहीं किया। यह भी देखा जा सकता है कि अधिकांश स्त्रियों के पतन के कारण पुरुष होते हैं। टामस हार्डी के उपन्यास 'टेस' की नायिका 'टेस' के जीवन में भी यही हुआ। मृणाल के प्रति उसके विवाह पूर्व के प्रेमी का प्रेम सच्चा होता तो उसकी कभी भी इतनी दुर्दशा न होती। शायद ही पति से तिरस्कृत होने पर भी वह सच्चे प्रेम के कारण समाज में प्रतिष्ठा और गौरव का उपभोग कर पाती। 'त्यागपत्र' में मृणाल की आत्मकुंठा और उसका आत्मपीड़न एक ऐसी मनोवृत्ति का सूचक है जो विद्रोह की आग को नहीं सह सकती। मृणाल आत्मपीड़क व्यक्तित्व का बेमिसाल साहित्यिक नमूना है। आत्मपीड़ा उसके लिए जीवन जीने का एक मार्ग ही बन गया है। मृणाल के माध्यम से जैनेन्द्र ने पाप-पुण्य की जो व्याख्या की है वह भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' (1934) का स्मरण दिलाता है। जैनेन्द्र कुमार का मानना है कि 'पीड़ा में ही परमात्मा बसता है। मेरे उपन्यास आत्मपीड़न के साधन हैं। प्रमोद के माध्यम से भी यही चिंता व्यक्त की गई है, "मानव चलता जाता है और बूंद-बूंद इकट्ठा होकर उसके भीतर भरता जाता है। वही सार है। वही जमा हुआ दर्द मानव की मानसमणि है। उसके प्रकाश में मानव का गतिपथ उज्जवल हो।"

ऐसा प्रतीत होता है कि जैनेन्द्र कुमार के अनुसार विवाह स्त्री के लिए सामाजिक बंधन ही नहीं आध्यात्मिक और आत्मिक बंधन भी है। वह पुरुष को तन ही नहीं मन भी देकर पूर्ण होती है, इसलिए मृणाल मन दिये बिना प्रेम करते हुए स्वयं को अपूर्ण समझती चली जाती है। उसके चरित्र में गज़ब का आकर्षण और दृढ़ता है। पहली नज़र में वह परंपरागत लगती है पर गौर से देखने से उसकी मजबूती का पता चलता है। वह परिस्थितियों का विरोध तो नहीं करती किन्तु उनके अनुकूल व्यवहार करने लगती है। उसकी ईमानदारी ही उसका दुर्गुण हो जाती है। वह पुरुषवादी समाज का खोखलापन उघाड देती है। वह पुरुषसत्तात्मक और पितृसत्तात्मक मूल्यों के

वजूद को नकार देती है। वह चिड़िया बन उड़ नहीं पाती क्योंकि समाज उसके पर काट डालता है। पर वह पिंजरे में कैद भी होकर नहीं रह पाती। उपन्यास की टेक्स्ट में मृणाल मर जाती है, ठीक वैसे ही जैसे प्रेमचंद के 'गोदान' में होरी, किन्तु पाठक के मन में उसके द्वारा भोगी गई गहरी यातना कभी नहीं मरती। उसकी पीड़ा का जिम्मेदार कौन है?

बोध प्रश्न

- मृणाल के चरित्र की चार विशेषताएँ बताइए।
- मृणाल की पीड़ा का जिम्मेदार कौन है?

7.3.3 मृणाल का चरित्र चित्रण

मृणाल के चरित्र का मूल्यांकन और इस औपन्यासिक पात्र का चरित्र चित्रण इसी संदर्भ में किया जा सकता है। हिंदी उपन्यासों की नायिकाओं में उसका निश्चित रूप से उल्लेखनीय स्थान है। मृणाल का विद्रोह समाज को तोड़ना फोड़ना, विवाह संस्था का तिरस्कार और अनैतिकता की यातना भोग रहे व्यक्ति का विद्रोह है और उसका चरित्र पारंपरिक स्त्री-नायिकाओं के समक्ष चुनौती बनकर खड़ा होता है। पारंपरिक रूप से यदि मृणाल के चरित्र का विस्तृत विश्लेषण किया जाए तो उसे निम्न बिंदुओं के द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

अपूर्व सुंदरी - मृणाल के सौंदर्य पर उपन्यास के प्रारंभ में ही जैनेन्द्र कुमार ने अपने एक मुख्य पात्र प्रमोद से कहलवाया है, 'बुआ का तब का रूप सोचता हूँ तो दंग रह जाता हूँ। एस रूप कब किसको विधाता देता है? पिताजी तो बुआ की मोहनी सूरत पर रीझ रीझ जाते थे। मुझे उसे देखकर कहानी की परियों का ध्यान हो आता और मैं मुख भाव से बुआ की ओर आकृष्ट हो जाता।' (पृष्ठ 3) ।

चंचल स्वभाव - मृणाल के स्वभाव की चंचलता पर प्रमोद बचपन से ही कुर्बान है। स्कूल में मृणाल अपनी मास्टरनी को 'छकाती' है। 'ठहाका' मारकर हँसती है। वह शैतान जरूर है पर शैतानी नहीं करती, वह तो दूसरों की शैतानी को अपनी कहकर उनके बदले 'दंड' प्राप्त करके खुश होती है। वह एक बार सचमुच का कसूर करके देखना चाहती है। उसकी नटखट शीला से दोस्ती का आधार यही तो है। पढ़ने में विशेष मन न होने पर भी स्कूल जाने और अपनी कॉपी किताब को सजाने का उसे विशेष चाव रहा। प्रमोद अपनी बुआ के लिए इसी लिए लिखता है, 'स्वभाव बड़ा हँसमुख था और निर्द्वंद।' निर्द्वंद तो इतनी कि पूछिये मत, "मैं बुआ नहीं होना चाहती। बुआ! छी! देख चिड़िया कितनी ऊंची उड़ जाती है। मैं चिड़िया होना चाहती हूँ। उसके छोटे छोटे पंख होते हैं। पंख खोल कर वह आसमान में जिधर चाहे उड़ जाती है।" (पृष्ठ 9)। बस माँ के सामने सकुचाई रहती थी।पतंग उड़ाने के प्रसंग में मृणाल का यह कहना कि 'चल रे, पतंग से बालक गिर जाते हैं' उस मनोव्यथा की ओर संकेत करता है जैसे भीतर बस हवा हो, और मन हल्का फुल्का बस उड़ उड़ आना चाहता हो।" (पृष्ठ 8)

अनूठी प्रेमिका - मृणाल अपनी सहेली के भाई से प्रेम करती है। उसका प्रेम सोलहवें सावन का अल्हड़ प्रेम था। इसलिए तो वह कभी चिड़िया बनना चाहती थी, कभी पतंगों के पेंच देखती और कभी कति पतंग को। प्रेम का भेद खुलने पर उसकी बेदर्दी से पिटाई होती है, पर वह उफ तक नहीं करती। उसका विवाह कर दिया जाता है और वह एक विधुर दुहेजू के साथ चली जाती है। ईमानदार इतनी है कि अपने विवाह-पूर्व प्रेम के विषय में अपने पति को बता देती है।प्रेमी से प्राप्त पत्र और अपने द्वारा लिखे गए उसके उत्तर को भी दिखा देती है। पति के द्वारा मृणाल का परित्याग इसी कारण तो होता है। "मृणाल का कौल झूठा नहीं होता" वह बोल देती है तो उसे निभाती है। पति ने छोड़ दिया तो भी उसने उसे अपना 'सत्य' बताया अवश्य।

संघर्षशील जीवन - मृणाल का समस्त जीवन संघर्षों का रोजनामचा है। पिता और माता के प्रेम से बाल्यकाल में ही वंचित हो गई मृणाल ने अपने भाई और भाभी का आसरा अवश्य प्राप्त किया किन्तु ममता उसे केवल अपने भतीजे प्रमोद से मिली। उसने अपनी भाभी द्वारा दी गई यातनाएँ और प्रताड़नाएं भोगी। पति ने पतिता कहकर घर से निकल जाने को मजबूर किया। कोयले वाला भी अंत में धोखा ही देता है और जब वह बदनाम बस्ती में जाती है तो कुछ दिन में ही अपने सेवा भाव से उनका आसरा पा जाती है। पर रहती वह सदा ऊहापोह में ही । उसकी इस मानसिकता के लिए जैनेन्द्र कुमार के शब्द हैं, "ज्यों ज्यों जाने का दिन आता उनकी निगाह कुछ बंद सी होती जाती है। जैसे सामने उन्हें और कुछ नहीं दिखता। एसी अपेक्षित पूछती हुई सी निगाह से देखती मानो प्रश्न रोककर भी उत्तर मांगती हो कि मैं कुछ चाहती हूँ, पर अरे कोई बताएगा कि क्या?"

छलना के विरुद्ध - चाहे मृणाल के जीवन में कितने ही कष्ट क्यों न आए फिर भी वह सदा अपने आप से और दूसरों से सत्यनिष्ठ रहना छाती है। वह समाज की बनी बनाई परिपाटी को तोड़ना नहीं चाहती। वह जो निर्णय लेती है उस पर टिके रहती है, "ब्याह के बाद मैंने बहुत सोचा। सोचकर अंत में यही पाया कि मैं चल नहीं कर सकती, छल पाप है। हुआ जो हुआ, ब्याहता को पतिव्रता होना चाहिए।" कहानी के केंद्र में मृणाल के चरित्र की मूल चेतना है - मैं समाज को तोड़ना-फोड़ना नहीं चाहती हूँ। समाज टूटा तो फिर हम किसके भीतर बिगड़ेंगे? इसलिए मैं इतना ही कर सकती हूँ कि समाज से अलग होकर उसकी आकांक्षाओं में स्वयं ही टूटती रहूँ।" अपने निर्णय पर जमे रहने और स्वतंत्र निर्णय लेने के कारण मृणाल को जीवन पर्यंत दुख भोगने पड़े । समाज ने उससे पग पग पर बदले लिए किन्तु वह अपने दृढ़ निश्चय से टस से मस नहीं होती।

स्त्री आदर्श पर आस्था - मृणाल के जीवन में जो भी बदलाव आए और वह समाज की रूढ़ियों के कारण कितना भी कष्ट पायी किन्तु उसका स्त्री धर्म के प्रति विश्वास अटल है। वह त्याग, दया, ममता, बलिदान, श्रद्धा और विश्वास को स्त्री का धर्म मानती है। वह स्त्री-धर्म का यथासंभव पालन करना चाहती है। जब उसका ब्याहता पति उसे त्याग देता है तो वह उसे अपने पति की आज्ञा मानकर शीरोधार्य करती है। वह अपने पति से किसी प्रकार की कोई आर्थिक सहायता भी नहीं लेना चाहती क्योंकि वह मानती है, 'जिसको तन दिया उससे पैसा कैसे लिया

जा सकता है यह मेरी समझ में नहीं आता। धन देने की जरूरत मैं समझ सकती हूँ। दान स्त्री का धर्म है नहीं तो उसका और क्या धर्म?'

आधुनिक और फेमिनिस्ट विचारधारा - मृणाल आधुनिक और प्रगतिशील नारी है जिसने नारी के परंपरागत गृहस्थ स्वरूप के मिथक को ध्वस्त किया है। वह तथाकथित सभ्य समाज और अभिजात्य वर्ग की पोल खोलकर रख देती है। बदनाम बस्ती के सामान्य जन जीवन और जन-सामान्य को अपने लाभ के लिए छोड़ना नहीं चाहती। प्रमोद के समझाने पर कहती है, 'प्रमोद, तुमने महाभारत तो पढ़ा होगा। युधिष्ठिर जब स्वर्ग गए तो कुत्ते को नहीं छोड़ा।... यह कुत्ते नहीं हैं और इनका मुझ पर बड़ा उपकार है।"

आलोचक निर्मला जैन ने आधी शताब्दी पूर्व कहा था, "त्यागपत्र की मृणाल, भाग्यहीना नहीं, अपने भविष्य की स्वयं नियंता है। उसका परित्यक्त होना भर पुरुष का अत्याचार है, शेष सब उसका सोचा-समझा, करा-धरा है।" मृणाल के चरित्र का दुर्बल पक्ष यह है कि वह अपने पति से कह देती है कि आप चाहें तो मुझे अपने से दूर कर सकते हैं। पर बात इतनी सी नहीं है। वह आत्मपीड़ा इसलिए सहती है कि समाज का भला होता रहे। मृणाल के चरित्र का मूल्यांकन करना आज भी कठिन है। वह शिक्षित है, अपना भला बुरा जानती है। उसकी दुर्गति का एक कारण तो उस समय की सामाजिक परिस्थितियाँ हैं। जैनेन्द्र कुमार ने इस चरित्र के माध्यम से कहा कि मृणाल की दुर्गति का कारण पुरुष सत्तात्मक समाज है। स्त्री का शोषण करने वाले, उसे अपनी वासना और हवस का शिकार बनाने वाले यदि अंदर से नहीं बदलेंगे तो कुछ नहीं बदलेगा। 'पर' के लिए 'स्व' का उत्सर्ग करने वाली मृणाल का हिंदी साहित्य की अनूठी नायिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान है। यह जैनेन्द्र कुमार का अनूठा कारनामा है कि बहुत प्रामाणिक न होते हुए वे मृणाल के चरित्र को इतनी गहराई से रेखांकित कर सके। यही नहीं उसके माध्यम से वे कुछ सार्वभौम प्रश्नों को भी उठा सके।

बोध प्रश्न

- मृणाल का विद्रोह किस रूप में प्रकट होता है?
- मृणाल के चरित्र की चार प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

7.3.4 प्रमोद का चरित्र चित्रण

परंपरा और आधुनिकता के बीच जूझता चरित्र प्रधान उपन्यास 'त्यागपत्र' मनुवादी हिन्दू व्यवस्था पर बौखलाहट और क्रोध पैदा करने वाला उपन्यास है। यह तथाकथित 'भद्र समाज' की खोखली, तर्कशून्य और अमानवीय मान्यताओं का कलात्मक भाषा शैली में प्रस्तुतीकरण है। जस्टिस दयाल इन मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हैं। प्रमोद (जस्टिस दयाल) इस उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र है। वह इस उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र मृणाल का भतीजा है। प्रमोद एक प्रकार से उपन्यासकार का प्रतिनिधि है। लगता है वह प्रमोद नहीं स्वयं लेखक है। पर वह है बेचारा। जैनेन्द्र के उपन्यासों के प्रमुख पात्र बड़े बेचारे दिखाई देते हैं। कई बार इसी कारण उपन्यास के अंत में पात्र हार मानकर रह जाते हैं। जैनेन्द्र कुमार का यह

उपन्यास भी दार्शनिकता और चिंतन की प्रचुरता से आप्लावित हैं। जैनेन्द्र के मत में आत्म-पीड़ा द्वारा समाज को सुधारा जा सकता है। गांधीवादी अहिंसक और आत्मपीड़क विचारधारा की छाप है। विश्वंभर मानव ने जैनेन्द्र के मूल दर्शन को एक वाक्य में इस प्रकार व्यक्त किया है, 'जो है सो है।' इस दर्शन का मुखर प्रवक्ता प्रमोद है।

जैनेन्द्र कुमार ने आत्मकथा की शैली में प्रमोद को प्रस्तुत किया है। सर एम दयाल (जो पहले बालक प्रमोद था) एक प्रांत के चीफ जज हैं और त्यागपत्र दे देते हैं। 'त्यागपत्र' देने का कारण है उनकी अपनी बुआ मृणाल जिनके लिए वे खुद कुछ न कर पाए। इसी का पश्चाताप करने के लिए उनका यह त्यागपत्र है। पाप और पुण्य की समीक्षा न कर पाने पर भी वे इतना अवश्य कहना चाहते हैं कि उनकी बुआ 'पापिष्ठा' नहीं थीं।

उपन्यास का नायक और मुख्य पुरुष-पात्र या नायक प्रमोद अपनी बुआ के मरने की खबर सुनकर दुखी है। उसकी बुआ (मृणाल) इस उपन्यास की नायिका है। मृणाल की मृत्यु जिस परिस्थिति में हुई है वह समाज की दृष्टि से पाप माना जाता है परंतु प्रमोद जज होते हुए भी उसे पाप की संज्ञा नहीं दे पाता। इस प्रकार यह उपन्यासकार एक दुखी जीवन की दर्दनाक कहानी है। समग्रतः कहा जा सकता है कि जस्टिस दयाल या कहें कि प्रमोद का चरित्र मृणाल के चरित्र में व्याप्त घनीभूत पीड़ा को और भी अधिक गहराई से रेखांकित करता है। प्रमोद इस उपन्यास का सूत्रधार है, उपन्यासकार का प्रतिनिधि पात्र है। लेखक का ध्येय उसके चरित्र को प्रस्तुत करना न था। इसलिए उसके चरित्र का सम्पूर्ण विकास न करके उसकी परिकल्पना मात्र प्रस्तुत की गई है। प्रमोद के चरित्र में नाटकीयता अधिक है और स्वाभाविकता कम। उसके चरित्र में संयोग तत्वों की प्रधानता भी अधिक है। आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने प्रमोद और मृणाल के चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन करके लिखा है, "प्रमोद की उच्चाभिलाषा, उसकी सहानुभूतिपूर्ण आदर्शवादिता और जजी भी मृणाल की विद्रोही ज्वाला और ज्योति के समक्ष निष्प्राण और अर्थहीन है। मृणाल के समर्पण और बलिदान की पुकार है, प्रमोद में एक थोथे गौरव का वृथा संसार।"

प्रमोद के चरित्र का विकास तो इस उपन्यास में पूरी तरह नहीं हो पाया है लेकिन उपन्यासकार के द्वारा उसकी परिकल्पना सार्थक ढंग से हुई है। प्रमोद के चरित्र में नाटकीयता अधिक है। वह बहुत से प्रसंगों में उसी प्रकार अविश्वसनीय प्रतीत होता है जैसे मृणाल। वह मृणाल की सहायता करने के लिए उन्हीं परिस्थितियों में सामने आता है, जिनमें लेखक को कोई पते की बात कहनी होती है। उसके चरित्र में संयोग तत्वों की प्रधानता अधिक है।

पारंपरिक रूप से प्रमोद के चरित्र की विशेषताओं को निम्नवत प्रस्तुत किया जा सकता है-

सम्पूर्ण कथा का प्रत्यक्षदर्शी कथा-वाचक बालक प्रमोद और सर एम दयाल चीफ जस्टिस जो बाद में अपने पद से त्यागपत्र देकर संन्यासी बनकर रह जाते हैं इस कथा के मुखर दर्शक हैं। कहना न होगा कि जैनेन्द्र कुमार ने इस उपन्यास का ताना बाना अर्थात मृणाल की कथा को

प्रमोद के माध्यम से बुनकर प्रस्तुत किया है। प्रमोद का अपनी बुआ मृणाल से प्रेम और बुआ का अपनी सहेली के भाई के प्रति प्रेम, फिर अनमेल विवाह, उनका गृह त्याग और कोयलेवाले से संबंध और अंत में बदनाम बस्ती में आवास का प्रत्यक्षदर्शी रहा यह पात्र अनेक दृष्टियों से स्मरणीय है।

तटस्थ दर्शक - 'त्यागपत्र' उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र, उपन्यासकार का चहेता और उपन्यास का सूत्रधार कथावाचक एम.दयाल चीफ जस्टिस है। उनका ही बाल्यकाल का नाम प्रमोद है प्रमोद इस कथा का सूत्रधार भर है। वह कुछ करता नहीं है, बस तटस्थ रहकर देखता भर है। उसके चरित्र में बचपन में बचपना, किशोरावस्था में भावुकता और वयस्क होने पर दार्शनिकता दिखाई देती है। डॉ नगेन्द्र के शब्दों में प्रमोद "अपनी बुआ मृणाल के बढ़ते हुए दर्द का तापमापक है।"

अति-भावुक किशोर - 'त्यागपत्र' उपन्यास में मृणाल और प्रमोद (बुआ और भतीजा) के व्यक्तिगत सम्बन्धों में कई बार पाठक को कैशोर्य भावुकता दिखाई देती है। मृणाल के 'बिछुओं' को पकड़कर जिद करके वह क्या संकेत देता है, समझ नहीं आता? उनका व्यक्तिगत संबंध राम रतन भटनागर के शब्दों में "अवैध प्रेम का संबंध है यद्यपि लेखक ने इसे छिपाने की पूरी चेष्टा की है।इस प्रेम के आरंभ में कैशोर्य की रहस्यमयता अस्पष्टता और भावुक द्राविकता है। (जैनेन्द्र - साहित्य और समीक्षा)। पढ़ लिखकर वह जब बुआ के घर जाता है और कोयले वाले के साथ मृणाल को रहते देखता है तो वह अब बड़ा हो जाने के कारण उसे सहारा देना चाहता है। उस अवसर पर उस पुराने टूटे फूटे घर में झाड़ू लगाकर प्रमोद बता देना चाहता है कि वह साथ निभाना चाहता है और उसके लिए प्रस्तुत है। "मैं सहायता का मन लेकर आया था" कहकर वह कुछ कहना चाहता है, पर 'प्रतिष्ठा' की बात कहकर उसे मृणाल टाल देती है। प्रेम की अवैधता के साथ ही मृणाल का उच्चादर्श प्रमोद की भावुकता को नियंत्रित करके रखता है। मृणाल-प्रमोद की मौन-स्थिति राधा-कृष्ण की स्थिति जैसी है। कहा जाना चाहिए कि बुआ के पत्नीत्व और समाज-सेवा के सूक्ष्म भाव को भतीजे प्रमोद के कभी मौन और कभी मुखर किन्तु रहस्य-पूर्ण संबंध ने व्यर्थ कर दिया है। यदि आप बहुत ध्यान से उपन्यास को पढ़ते हैं तभी आप इस रहस्य को भेद पा सकेंगे। तभी आपको इस वायवी-संबंध की व्यर्थता का आभास होगा। पाठक के मन में प्रश्न उठता है कि प्रमोद इस प्रकार स्वयं को केवल छलता रहता है।

अति भीरु - प्रमोद चिंतनशील अवश्य है, पर है बहुत डरपोक और भीरु प्रकृति का युवक। बचपन में अपनी माँ से मृणाल को पिटते देखता है, कुछ नहीं करता। वह सच का पल्ला पकड़कर अपने और अपनी बुआ के भाई-भतीजे वाले संबंध को अपनी होने वाली पत्नी के परिवार को बताता तो है, पर कहीं न कहीं उसका यह साहस दिखावटी लगता है। वह शायद मृणाल को कुछ संकेत देना चाहता है कि वह अब भी किसी की प्रतीक्षा में है। लगता यह भी है कि प्रमोद बड़ा होकर भी 'लोग क्या कहेंगे' की 'आंतरिक भीरुता' को छोड़ नहीं पाया।

अध्ययन-शील-मृणाल का मन पढ़ाई में कम लगता है किन्तु प्रमोद आरंभ से ही पढ़ाकू है। उसका मन चाहे 'मृणाल' में अटका रहा किन्तु वह पढ़ लिखकर बी.ए. करता है। (बी.ए. का

इम्तिहान नजदीक था और मैं पोजीशन लाना चाहता था। बुआ की याद को को मन में गहरी बिठाने से बचना चाहता था। ... यह ख्याल तो चेतना में बंधा था, बिखरा नहीं था।" कानून पढ़ता है। वकील और जज बनता है। यह भी उल्लेखनीय है कि लेखक के अनुसार उन्हें इस उपन्यास की पाण्डुलिपि अँग्रेजी में आत्मकथा के रूप में प्राप्त हुई थी। इससे लेखक प्रमोद से रचनात्मक और सर्जनात्मक व्यक्तित्व को भी रेखांकित करता है।

उपन्यास के अंत तक आते आते हमारी सहानुभूति और प्रेम मृणाल के प्रति जितना प्रगाढ़ हो जाता है, प्रमोद के प्रति उतनी ही झुंझलाहट होती है। प्रमोद बुआ के प्रति तब भी 'प्रेम' भाव रखता है और पाठक प्रमोद के मन की इस हीनता को देखकर यही विचार करता रह जाता है कि "क्या उसमें बुआ के प्रति कहीं 'रतिभाव' तो नहीं है? विद्वान समीक्षकों का विचार है कि 'त्यागपत्र' में प्रमोद के मन में जो व्यर्थता उभारी गई है (जो त्यागपत्र के मूल में है) उसे भी जैनेन्द्र में ही ढूंढा जा सकता है।" (राम रतन भटनागर)।

बोध प्रश्न

- प्रमोद के चरित्र की चार प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
- प्रमोद के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?
- प्रमोद के भीरुता और निडरता का एक एक उदाहरण खोजकर लिखिए।
- 'त्यागपत्र' के प्रमोद और जैनेन्द्र कुमार के जीवन और व्यक्तित्व में क्या कुछ समानता है?

7.4 पाठ सार

जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित उपन्यास 'त्यागपत्र' के प्रमुख पात्र मृणाल और प्रमोद हैं और गौण पात्रों में प्रमोद के माता पिता, मृणाल की सहेली शीला और उसका भाई, मृणाल का पति और मृणाल को आसरा देने वाला कोयले वाला आदि है। मृणाल अपूर्व सुंदरी, चंचल और प्रेमी स्वभाव की लड़की है। वह अपनी सहेली शीला के भाई से प्रेम करती थी और अपनी यह सच्चाई अपने पति से कह देती है। उसकी यह बात उसको कहीं का नहीं रखती। उसका संघर्षशील व्यक्तित्व और दूसरी ओर उसके भतीजे प्रमोद का अनिश्चल स्वभाव कहानी को आगे बढ़ाते हैं। वास्तव में प्रमोद के चरित्र के माध्यम से जैनेन्द्र कुमार जीयन, समाज और व्यक्ति के आपसी संबंधों की व्याख्या करता है। प्रमोद के व्यक्तित्व और चरित्र को पढ़कर आपको कई बार झुंझलाहट होगी और कई बार आप मृणाल के चरित्र के अनेक पहलुओं को जानकर खिन्नता होगी। उनके प्रति पाठक का लगाव पैदा करने में उपन्यासकार ने सफलता प्राप्त की है। इस इकाई में अन्य गौण (मुख्य दो पात्रों के अतिरिक्त पात्र) पात्र बस इतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने वे मृणाल और प्रमोद के चरित्र को उभारते हैं। देखा जाए तो चरित्र एक ही है और वह मृणाल का चरित्र है जिसे उद्घाटित करने के लिए 'त्यागपत्र' लिखा गया है।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से आपने -

- उपन्यास के प्रमुख और गौण पात्रों का परिचय प्राप्त किया।
- इस अध्ययन से इन पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत कर सके।
- कथानक की प्रमुख घटनाओं के आधार पर पात्रों के पारस्परिक सम्बन्धों का उदघाटन कर सके।
- आप यह भी जान सके कि 'त्यागपत्र' को क्यों एक चरित्र प्रधान उपन्यास कहा जाता है और कौनसा चरित्र प्रधान है।

7.6 शब्द सम्पदा

1. असंदिग्ध = संदेह रहित, निश्चित, पक्का
2. आत्मकुंठा = कुंठ+आ = **कुंठा** मतलब खीज, चीढ़ या निराशा, स्वयं कुंठाग्रस्त होना।
3. आत्मपीड़न = स्वयं को दुख पहुंचाना
4. ऊहापोह = अनिश्चय की स्थिति में मन में उत्पन्न होनेवाला तर्क-वितर्क
5. निर्द्वंद = बिना किसी भय या डर के
6. प्रताड़ना = डांट–फटकार, कष्ट पहुँचाने या सताने की क्रिया।

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. त्यागपत्र उपन्यास के नारी पात्र मृणाल का चरित्र चित्रण कीजिए।
2. त्यागपत्र उपन्यास के प्रमुख पुरुष पात्र प्रमोद का चरित्र चित्रण प्रस्तुत कीजिए।
3. त्यागपत्र के गौण पात्र रूढ़िवादी और परंपरागत हैं - इस कथन पर विचार कीजिए।
4. मृणाल-प्रमोद की स्थिति राधा कृष्ण की स्थिति जैसी है। इस कथन के आधार पर उनके चरित्रों का मूल्यांकन कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. मृणाल के जीवन से क्या संदेश मिलता है?
2. 'त्यागपत्र' में कोयले वाले का व्यवहार मृणाल के प्रति कैसा रहा?
3. प्रमोद ने जज के पद से त्यागपत्र क्यों दिया? इससे उसके चरित्र के बारे में क्या पता चलता है?
4. मृणाल अपने आप को क्यों कष्ट देती है?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. मृणाल की सहपाठी कौन थी? ( )
   (अ) मीना (आ) शीला (इ) प्रमोद (ई) आनंदी
2. एम दयाल और प्रमोद का आपस में क्या संबंध है? ( )
   (अ) पिता-पुत्र (आ) भाई-भाई (इ) भानजा-भतीजा (ई) इनमें से कोई नहीं
3. त्यागपत्र देने का क्या कारण था? ( )
   (अ) कुछ न कर पाने की विवशता (आ) समाज का मृणाल के प्रति दृष्टिकोण
   (इ) मृणाल की मृत्यु (ई) ये सभी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. …………. और …………. त्यागपत्र उपन्यास के दो प्रमुख पात्र हैं।
2. मृणाल के प्रेम की खबर पाकर उसका विवाह …………. से कर दिया जाता है।
3. प्रमोद …………. के कारण अपने पद से त्यागपत्र देता है।
4. त्यागपत्र उपन्यास का पात्र कुछ करता नहीं है, बस …………. की तरह देखता रहता है।
5. "मेरी बुआ …………. नहीं थी" एम दयाल ने त्यागपत्र देते हुए कहा ।

III. सुमेल कीजिए

1. प्रमोद	(अ) खोखली मान्यताओं को ढोने वाली
2. मृणाल	(आ) स्त्री को वासना के लिए उपयोग करने वाला स्वार्थी
3. भाभी	(इ) लकीर के फकीर
4. कोयले वाला	(ई) पढ़ने में विशेष मन नहीं
5. भद्र लोग	(उ) अध्ययनशील

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. जैनेन्द्र कुमार, त्यागपत्र
2. गोविंद मिश्र, भारतीय साहित्य के निर्माता जैनेन्द्र कुमार
3. राम रतन भटनागर, जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा
4. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश भाग-2
5. डॉ देवराज उपाध्याय, जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

इकाई 8 : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : परिवेश एवं भाषा शैली

रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 मूल पाठ : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : परिवेश एवं भाषा शैली
8.3.1 'त्यागपत्र' औपन्यासिक परिवेश
8.3.2 'त्यागपत्र' की विभिन्न अर्थ छवियाँ
8.3.3 जैनेन्द्र की भाषा शैली
8.3.4 शिल्प विधान
8.3.5 संवाद योजना
8.4 पाठ सार
8.5 पाठ की उपलब्धियाँ
8.6 शब्द संपदा
8.7 परीक्षार्थ प्रश्न
8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

पिछली दो इकाइयों में आपने मुख्यरूप से मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में पढ़ा। उनके 1937 में प्रकाशित उपन्यास 'त्यागपत्र' के कथानक, पात्र और चरित्र चित्रण को भी आपने देखा और विचार किया। यह भी स्पष्ट हो गया कि यह उपन्यास वस्तुतः चरित्र प्रधान उपन्यास है जिसमें मृणाल का चरित्र केंद्र में है। इसी चरित्र की कथा के समुचित विकास के लिए प्रमोद को कथावाचक के रूप में उपस्थित किया गया है। कोई सुसंबद्ध कथानक नहीं है फिर भी कथा प्रवाह, वर्णन शैली और परिवेश के कारण उपन्यास अत्यन्त मर्मस्पर्शी बन गया है और पाठक के मन पर उसका अमिट प्रभाव पड़ता है। जैनेन्द्र ने छोटे उपन्यास ही लिखे हैं और 'त्यागपत्र' भी कलेवर में छोटा सा ही है। किन्तु इसमें परिवेश का विस्तार न होते हुए भी काल क्रम का का समुचित विस्तार है। मृणाल के माध्यम से स्त्री जीवन के विविध पक्षों को प्रकाशित करने के लिए जैनेन्द्र कुमार ने इमेजों, सूत्रों या संकेतों से काम लिया है। इससे परिवेश का कुछ तो विस्तार ही हुआ है। मानव जीवन की सम्पूर्ण नियति को इस उपन्यास का संक्षिप्त परिवेश प्रस्तुत करने में समर्थ है। इस इकाई में इन सब बिन्दुओं पर विस्तारपूर्वक विचार किया जाएगा।

8.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित 'त्यागपत्र' उपन्यास के परिवेश और भाषा शैली की विशेषताओं पर व्यापक रूप से विचार करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

- उपन्यास के क्षेत्र में परिवेश और भाषा शैली के महत्व को समझ सकेंगे।
- इस उपन्यास के परिवेश पर विचार करते हुए उसके महत्व और सीमाओं को जान सकेंगे।
- भाषा शैली की दृष्टि से लेखक के भाषा-कौशल को रेखांकित कर सकेंगे।
- परिवेश निर्माण में भाषा शैली के योगदान को जान लेंगे।
- 'त्यागपत्र' की विभिन्न अर्थ छवियों और उनके महत्व को समझ लेंगे।

8.3 मूल पाठ : त्यागपत्र (जैनेन्द्र) : परिवेश एवं भाषा शैली

8.3.1 'त्यागपत्र' औपन्यासिक परिवेश

जैनेन्द्र कुमार की उपन्यास-कला की सबसे बड़ी विशेषता उनके उपन्यासों का लघुत्व है। वे प्रेमचंद के समान अनेक कथा-सूत्रों को लेकर नहीं चलते। उनके पात्रों की संख्या प्रत्येक उपन्यास में सीमित रहती है। इस विशेषता के कारण कई बार इनके उपन्यासों में दुर्बोधता आ जाती है। पाठक को कहानी के सूत्र खोजने में कभी कभी बहुत ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। यह याद रखने की बात है कि प्रारम्भ में उपन्यास 'लघुकाय' ही हुआ करते थे। पंडित गौरी दत्त शर्मा का उपन्यास 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) आकार में अत्यंत लघु है। बंगला के शरच्चंद्र के उपन्यास भी कलेवर में लघु ही थे।जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों की दूसरी सीमा उनमें प्राकृतिक चित्रपटी का अभाव है। उनके अधिकांश उपन्यासों में हमें किसी भी प्राकृतिक दृश्य की पृष्ठभूमि नहीं मिलती। उनके उपन्यासों के पात्र नगरों और ग्रामों की तंग गलियों और गली कूँचों से बाहर नहीं जाते। रवीन्द्र नाथ टैगोर और शरतचंद्र के बंगला भाषा में लिखे उपन्यासों के पाठ से प्रेरित होकर जैनेन्द्र कुमार ने अपने उपन्यासों में समाज के प्रति विद्रोह का स्वर तो अवश्य करते हैं किन्तु अंत में कहीं कहीं वे समझौता करते दिखाई देते हैं।

त्यागपत्र एक छोटे आकार का उपन्यास है। इसे कोई लघु उपन्यास भी कह सकता है। जैनेन्द्र कुमार ने प्रेमचंद के समय से लिखना शुरू किया था। 1929 में जब जैनेन्द्र का पहला उपन्यास 'परख' प्रकाशित हुआ था, तब प्रेमचंद ने उसकी सकारात्मक समीक्षा की थी। पर जैनेन्द्र ने अपनी राह खुद बनाई, प्रेमचंद के बनाए रास्ते पर वे नहीं चले। कथा-संगठन, पात्र-योजना और विषयवस्तु को जैनेन्द्र ने प्रेमचंद से अलग करके प्रस्तुत किया। जैनेन्द्र ने कथा की क्रमबद्धता को अधिक महत्व नहीं दिया। उनका कहना था, "मैंने जगह -जगह कहानी के तार की कड़ियाँ तोड़ दी हैं। वहाँ पाठक को थोड़ा कूदना पड़ता है। कहीं एक साधारण भाव को वर्णन से फुला दिया है, कहीं लंबा रिक्त छोड़ दिया है।" उदाहरण के लिए 'त्यागपत्र' में बस इतना भर

बताया गया है, "हम लोगों का असली घर पछाँह की ओर था। पर स्थान का नाम 'युक्त प्रांत के इन-उन जिलों' कह कर टाल दिया गया है।

जैनेन्द्र कुमार ने अपनी कृतियों में मनोवैज्ञानिकता, चिंतन और दर्शन पर अधिक बल दिया है। जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में विवरणात्मकता और कल्पना-प्रधानता के साथ साथ मनोवैज्ञानिक तत्व की प्रचुरता है। उनकी चिंतनशीलता से उन्हें अपने उपन्यासों में सूक्ष्म-कथानक सूत्रों और चरित्र विशेष के आंतरिक विश्लेषण को समन्वित करने में सफलता प्राप्त हुई है। इन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का भी गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। पारिवारिक समस्याओं का भी चित्रण यहाँ हुआ है। व्यक्तिगत चरित्रों की कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याओं जैसे वासना, अहं भावना, अवचेतन तथा अतृप्ति को प्रमुखता से इनके उपन्यासों में विश्लेषित किया गया है।

डॉ गोपाल राय का कहना है कि जैनेन्द्र कुमार 'शहर की गली और कोठरी की सभ्यता' में ही सिमटकर व्यक्ति पात्रों की मानसिक गहराइयों में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं। यह कथाकार के सीमित परिवेश पर सारगर्भित टिप्पणी है। वे अपने समय (1930-40) में स्त्री की स्वतन्त्रता का प्रश्न उठा रहे थे जब सामाजिक परिवेश उसके लिए तैयार न था। यह देखा जा सकता है कि आज भी, अर्थात 'त्यागपत्र' के लिखे जाने के 80-90 वर्ष बाद भी, स्त्री की दशा में आमूल चूल परिवर्तन नहीं हो सका है। उस समय लेखक ने प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ दिया था, आज भी इनका उत्तर हमारे पास नहीं है। भविष्य दृष्टा की तरह लेखक अपने समाज और परिवेश को प्रस्तुत करते हुए भी यह मानकर चलते हैं कि स्त्री स्वतंत्रता हाल-फिलहाल दुर्लभ है और कभी इस पर गंभीरता से विचार भी होगा और समाधान भी निकलेंगे।

'त्यागपत्र' की एक बड़ी सीमा उसका परिवेश भी है। इस उपन्यास का परिवेश उतना व्यापक नहीं है कि उसे किसी काल विशेष का प्रतिबिंब कहा जा सके। लगभग एक शताब्दी बीत जाने पर भी यह कथा आज की भी हो सकती है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही उस पारिवारिक परिवेश की ओर संकेत है जिसमें विवाह से पूर्व मृणाल का जीवन बीता, "इतना ही हम समझे कि मृणाल जितनी कुशल थीं, उतनी कोमल नहीं थीं। मुझसे कोई चार-पाँच बड़ी होंगी। मेरी माता के संरक्षण में मेरी ही भांति बुआ भी रहती थीं। वह संरक्षण ढीला न था। आज भी मेरे मन में उस अनुशासन की कड़ाई के लाभालाभ पर विचार चला करता हैं।" आज भी कई परिवारों में अनुशासन वैसा ही है।

कहा जा सकता है कि परिवेश की दृष्टि से 'त्यागपत्र' उपन्यास जैनेन्द्र के अन्य उपन्यासों की तरह ही बाहरी परिवेश से अधिक भीतरी परिवेश की उथल-पुथल की चिंता करता है। उन्होंने समाज व्यवस्था में स्त्री-पुरुष के स्थान और सम्बन्धों में स्त्री की दयनीय दशा का चित्रण किया है। मृणाल के माध्यम से स्त्री पर परिवार और समाज के बंधनों का चित्रण है और किसी प्रकार के सुधार की ओर संकेत किए बिना ही उपन्यास का अंत हो जाता है। इसलिए यह 'कालातीत' कृति है। इसके सरोकार सदा के लिए हैं। 'त्यागपत्र' के लगभग समस्त कार्य-व्यापार किसी भी छोटे बड़े उत्तर भारतीय नगर में घटे माने जा सकते हैं। वे बस्तियाँ और गली मुहल्ले

किसी भी नगर के हो सकते हैं। हाँ, कभी कभी किसी बात या चर्चा से कुछ अनुमान सा हो जाता है। उदाहरण के लिए, मिठाई में 'घेवर' का जिक्र, नगरों में 'हरिद्वार' का उल्लेख। स्वयं जैनेन्द्र कुमार ने उपन्यास के पहले अनुच्छेद में ही कह दिया है कि कहानी में से स्थानों और व्यक्तियों के नाम और कुछ ऐसे ही ऐहिक विवरण अनिवार्य न होने के कारण बदल या कम कर दिया गए हैं। जब भी कुछ कहने को होते हैं, यह कहकर आगे बढ़ जाते हैं, "खैर उस बात को छोड़ें।"

विचार और चिंतन उपन्यास के परिवेश का निर्माण करते हैं। मृणाल देशकाल में जीने वाली वास्तविक स्त्री के स्थान पर जैनेन्द्र की वैचारिक निर्मिति अधिक है। वह उनके अमूर्त सिद्धान्त की जीती जागती मूर्ति है। प्रेमचंद जहां परिस्थितियों और परिवेश से कथा बुनते हैं, जैनेन्द्र कुमार विचारों और धारणाओं से। मृणाल जीवन से नहीं विचार से संचालित है, प्रमोद किंकर्तव्यविमूढ़ है। जिस समय यह उपन्यास लिखा जा रहा था, बाहर स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था, लेकिन उस परिवेश के स्थान पर यहाँ कुछ और ही चल रहा है। समाज यहाँ राजनीति से प्रबल है। समाज के नैतिक पाखंड और जर्जर होती मान्यताएँ इस उपन्यास के परिवेश का निर्माण करते हैं।

बोध प्रश्न

- परिवेश की दृष्टि से 'त्यागपत्र' की दो सीमाएँ क्या हैं?
- कथा की क्रमबद्धता का क्या अर्थ है?
- जैनेन्द्र बार बार यह क्यों कहते हैं, खैर इस बात को यहीं छोड़ें।

8.3.2 'त्यागपत्र' की विभिन्न अर्थ छवियाँ

'त्यागपत्र' उपन्यास में 'त्याग' शब्द की कई अर्थ छवियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। उपन्यास का शीर्षक बहुत सावधानी से चुना गया है। यह वह कहानी है जो एक जज के अपने पद से 'इस्तीफ़ा' देने का 'पत्र' तो है ही, यह उस उपन्यास की ओर भी संकेत है जिसमें यह कथा है। त्याग- (1) एक जज का अपने पद से त्याग (2) एक पति द्वारा अपनी पत्नी का त्याग (3) समाज द्वारा एक स्त्री का त्याग। मृणाल नामक स्त्री सूत्रधार सरीखे प्रमोद नामक पात्र की 'बुआ' है। वह उपन्यास की नायिका है। वह वस्तुतः एक 'त्यागिन' बन जाती है। जैनेन्द्र कुमार बहुत चतुराई से अपने उपन्यास के 'प्रारम्भिक' में अपने इस बहुआयामी मंतव्य को संकेत में और बहुत संक्षेप में बता देते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के जर्मन 'नोवेला' की तर्ज पर 'प्रारम्भिक' में एक साथ ही उपन्यास को प्रामाणिकता और आधिकारिकता प्रदान करते हुए जैनेन्द्र कुमार उपन्यास की पांडुलिपि को जज एम दयाल द्वारा हस्ताक्षरित बताते हैं। प्रामाणिकता को पुख्ता करने के लिए उसे अँग्रेजी में लिखा कहते हैं और साथ ही आत्म-कटाक्ष करते हुए इस उपन्यास को उस पाण्डुलिपि का उल्था घोषित करते हैं। वह इसे 'एक कहानी ही कहिए' कहकर प्रस्तुत करके पाठक को चेता भी देते हैं। वह उपन्यास के पाठकों से दो अपेक्षाएँ भी करते हैं - पाठक त्यागपत्र देने वाले जज की अंतर्दृष्टि और बुद्धिमत्ता का संज्ञान ले और बालक (प्रमोद) और उसके पश्चात उसके युवा चरित्र (एम दयाल) के दृष्टिकोण को समझता रहे। इस प्रकार अपने भाषा कौशल,

वर्णन कौशल और सांकेतिक चतुराई से उपन्यासकार अपने पाठक को अपने बस में कर लेते हैं। वे समझने लगते हैं कि प्रमोद की हार्दिक अभिलाषा है कि मृणाल जिस नारकीय वातावरण में रह रही है उससे 'त्यागपत्र' दे दे, उसे 'त्याग' दे। वह एक सभ्य, सुसंस्कृत और तथाकथित संस्कारी स्त्री के समान उसके प्रतिष्ठित समाज में सुखपूर्वक रहे। पर वह टस से मस नहीं होती। वह तो जिस स्थान पर भी रहती है उस स्थान को और वहाँ के लोगों को 'स्वर्ग' तुल्य मानती है। मृणाल कहती है – मुझे ऐसा लगता है कि इन लोगों में जिन्हें दुर्जन कहा जाता है उनमें कई तह पार करके वह भी तह रहती है कि उसको छू सको तो दूध सी श्वेत सद्भावना का सोता ही फूट निकलता है। स्पष्ट है कि वह हर स्थान पर सब कुछ देख लेती है। उसने अपनी मनस्थिति ऐसी बना ली है।

बोध प्रश्न

- 'त्यागपत्र' के एक से अधिक कितने 'अर्थ' यहाँ आपको समझ आते हैं?
- 'एक कहानी ही कहिए' का क्या अर्थ है। लेखक यह क्यों कहता है?
- क्या 'त्यागपत्र' केवल एक कहानी मात्र है? क्यों? क्यों नहीं?

8.3.3 जैनेन्द्र की भाषा शैली

भाषा-शैली उपन्यास का एक प्रमुख तत्व है। भाषा के माध्यम से ही रचनाकार विचार सम्प्रेषण करता है। प्रत्येक साहित्यकार की भाषा शैली में भिन्नता होती है। एक ही लेखक भी अपनी अलग अलग रचनाओं में अपनी शैली परिवर्तित करता है। 'त्यागपत्र' में आत्मकथात्मक और मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग है। डायरी शैली का भी संकेत है। भाषा के संबंध में जैनेन्द्र कहते हैं, "शब्द जब मुझसे जाकर उतना अपने को नहीं जितना मेरे भाव को कहते हैं तब साफ हो जाता है कि शब्द और भाषा की चिंता अपनी खातिर अनावश्यक है। गलत या सही आदमी होता है, भाषा स्वयं गलत या सही नहीं हो सकती। उसका भाव तो सुधी और सहृदय पाठक के पास है।" (साहित्य और कला, पृष्ठ 228)।

हिंदी उपन्यासों की भाषा शैली में नवीन प्रयोग कर्ताओं में जैनेन्द्र कुमार का नाम अग्रगण्य है। उपन्यास की विषय वस्तु, कथा शिल्प, भाषा शैली सभी दृष्टियों से उन्होंने नवीन प्रयोग किए। वे मनोविश्लेषणात्मक शिल्पविधि के रचनाकार माने जाते हैं क्योंकि उन्होंने नए सिरे से सामाजिक प्रश्नों, स्त्री पुरुषों के परस्पर सम्बन्धों, नैतिक मूल्यों तथा व्यक्ति चरित्रों के अध्ययन का बीड़ा उठाया। उन्होंने व्यक्ति के अंतर्मन में उठने वाली विविध मनोवैज्ञानिक समस्याओं को छुआ ही नहीं बल्कि उन्हें आधिकारिक ढंग से अपने रचे पात्रों और चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत भी किया। इसलिए उनको विद्वानों ने व्यक्तिमुखी रचनाकार कहा है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में, "जैनेन्द्र की साहित्य सृष्टि व्यक्तिमुखी है। उनका संबंध सामाजिक जीवन के व्यापक स्वरूपों से कम ही है। वे व्यक्तिक मनोभावों और स्थितियों के चित्रकार हैं। जैनेन्द्र सामाजिक जीवन से दूर जाकर जिस साहित्य की सृष्टि करते हैं, उसमें व्यक्ति के मानसिक

संघर्ष और उसकी परिस्थितिजन्य समस्याएँ प्रमुख रूप से आती हैं।" दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि वे व्यक्ति के जीवन खंडों के सूक्ष्म विश्लेषण एवं चित्रण की ओर उन्मुख रहें है।

त्यागपत्र उपन्यास के आधार पर जैनेन्द्र कुमार की भाषा शैली और शिल्प के विषय में कहा जा सकता है कि कथानक की विश्वसनीयता में कहीं कहीं शंका के बावजूद अपने शिल्प और कथन की आत्मीयता से लेखक प्रभाव पैदा करते हैं। उपन्यास का आरंभ भावमय, आत्मीय और नाटकीय है। अंत भी 'पुनश्च' के साथ आता है और कथा को स्वाभाविकता के साथ ही विश्वसनीयता प्रदान करता है। कथा में संकेत शैली का बार बार उपयोग करने से विलक्षण रहस्यमयता आ गई है। उपन्यास में कोई घटना और कथोपकथन निरर्थक नहीं। चिंतन युक्त वार्तालाप और वर्णन का समुचित सामंजस्य है।

बोध प्रश्न

- 'त्यागपत्र' आत्मकथा है तो किसकी और कैसे?
- जैनेन्द्र कुमार शिल्प की आत्मीयता को कैसे प्रगट करते हैं?

8.3.4 शिल्प विधान

प्रख्यात विद्वान डॉ नगेन्द्र ने जैनेन्द्र के रचना और शिल्प विधान पर विचार करते हुए लिखा है कि 'त्यागपत्र' का कौशल अपनी विदग्धता के बल पर अपने मेधावी शिल्प की दुहाई देता है और 'नारी' का कौशल अपने को छिपाकर अपने स्नेहार्द शिल्पी की सिफ़ारिश करता है। डॉ नगेंद्र के इस कथन के आलोक में उपन्यास को देखने से ज्ञात होता है कि 'त्यागपत्र' आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया विश्लेषणात्मक शिल्पविधि का एक ऐसा उपन्यास है जो एक बार तो आपको घटनाशून्य प्रतीत होगा किन्तु जैसे ही आप उसकी आत्मा - मृणाल - के मानसिक स्तर को छू लेते हैं तो आपको जैनेन्द्र के घटना संयोजन का पता चलता है। पता चल जाता है कि प्रत्येक घटना एक मार्मिक दृश्य है जो पाठकों पर एक ओर तो प्रहार करता है दूसरी ओर उनकी संवेदनशीलता को उभारकर उन्हें द्रवीभूत कर देता है। उपन्यास के शिल्प विधान में पूर्वदीप्ति विधि (फ्लैश बैक टेकनीक) के प्रयोग से अनूठापन आ गया है। इस विधि के द्वारा उपन्यासकार ने प्रधान पात्र मृणाल के जीवन की घटनाओं को अतीत में जाकर दिखाया है। इससे उपन्यास का प्रारम्भ करके अंत तक ले जाकर मूल कथा से अंत का संबंध जोड़कर दिखाया गया है। कथा का आरंभ भाव-मय और आत्मीय के साथ ही नाटकीय भी है।

प्रारम्भिक

> सर एम. दयाल जो इस प्रांत के चीफ़ जज थे और जजी त्यागकर इधर कई वर्षों से हरिद्वार में विरक्त जीवन बिता रहे थे, उनके स्वर्गवास का समाचार दो महीने हुए पत्रों में छापा था। पीछे उनके कागजों में उनके हस्ताक्षर के साथ एक पाण्डुलिपि पाई गई जिसका संक्षिप्त सार इतस्ततः पत्रों में छप चुका है। उसे एक कहानी ही कहिए। मूल लेख अँग्रेजी में है। उसी का हिन्दी उल्था यहाँ दिया जाता है। कहानी में

से स्थानों और व्यक्तियों के नाम और कुछ ऐसे ही ऐहिक विवरण अनिवार्य न होने के कारण बदल या कम कर दिये गये हैं।

कथा-समाप्ति के समय 'पुनश्च' के अंतर्गत एम. दयाल के अपने 'त्यागपत्र' पर हस्ताक्षर करने की सूचना है। कथा में संकेत शैली का बार बार उपयोग होने के कारण विलक्षण रहस्यमयता आ गई है। संकेत शैली के कारण संवाद योजना में छोटे छोटे वाक्यों और सरल शब्दों द्वारा प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। कथानक कभी विश्वसनीय लगता है तो कभी शंका भी होती है पर मुख्य पात्रों की चारित्रिक उदात्ता और व्याप्त वेदना ने उपन्यास के परिवेश को अप्रभावित नहीं रहने दिया है।

बोध प्रश्न

- कथा के प्रारम्भ द्वारा जैनेन्द्र कुमार कैसे और क्या स्थापित करते हैं?
- संकेत शैली के प्रयोग से क्या लाभ हुआ है?

8.3.5 संवाद योजना

जैनेन्द्र कुमार संवादों के माध्यम से मन के भावों को व्यक्त करने में सिद्धहस्त हैं। भाषा का ऐसा जादूगर आपको न मिलेगा। भाषा की अमित संभावनाओं का सर्वाधिक रचनात्मक उपयोग करते हुए वे कुछ ऐसा कहलवा देते हैं कि पाठक अवाक रह जाता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है -

"मैंने पूछा, तुम सच सच बताओ, वहाँ जाना चाहती हो या नहीं?"

बुआ ने कहा, "सच बताऊँ?"

"हाँ, बिलकुल, सच-सच बताओ।"

बुआ ने हँसकर कहा, क्यों सच-सच बता दूँ?"

मैंने नाराज होकर कहा, नहीं बताओगी?

बोलीं, अच्छा, सच-सच बताती हूँ। मैं तेरे साथ रहना चाहती हूँ। रखेगा? फिर एकाएक मुझे अपने से चिपटाकर बोलीं, एक बात बता। तुझे बेंत खाना अच्छा लगता है?"

मैंने कहा - बेंत?"

बोली, "सच-सच कहती हूँ, प्रमोद। किसी और से नहीं कहा, तुझे कहती हूँ। बेंत खाना मुझे अच्छा नहीं लगता है। न यहाँ अच्छा लगता है न वहाँ अच्छा लगता है।"

इन संवादों में मृणाल ने अपने ऊपर किए जा रहे अत्याचार की परोक्ष प्रस्तुति की है। बुआ-भतीजे का प्रेम है, बेतकल्लुफ़ी है, बेबाकी है। ऊपर से आनंद पर अंदर से पीड़ा है। सब कुछ

संकेत में है। कह सकते हैं कि जैनेन्द्र ने हिंदी उपन्यास को एक समर्थ और व्यंजनाधर्मी भाषा दी जो अपनी गद्यात्मकता के बावजूद कवित्वशक्ति सम्पन्न है।

व्याकरणिक भाषा प्रयोग - 'भी' और 'तो' का बलार्थ प्रयोग जैनेन्द्र की रचनात्मक भाषा का उदाहरण है। इस तराश को बाद में अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह और रघुवीर सहाय ने परवान चढ़ाया। 'त्यागपत्र' उपन्यास से एक उदाहरण प्रस्तुत है - "हम लोगों का असली घर पछाँह की ओर था। पिता प्रतिष्ठावाले थे और माता कुशल गृहणी थीं। जैसी कुशल थीं वैसी कोमल भी होतीं तो -? पर नहीं, उस 'तो-?' के मुँह में नहीं बढ़ना होगा।"

दार्शनिक शब्दावली का अनूठा प्रयोग - इस उपन्यास में दार्शनिक शब्दावली का अनूठा प्रयोग है। ईश्वर, लीला, शरण, पतिव्रता, स्त्री-धर्म, समर्पण, पुरुष की सेवा, करुणा आदि शब्दों का प्रयोग प्रेमचंद का समकालीन और प्रगतिशील आंदोलन के संस्थापकों के सम्मेलन (1936) में भाग लेने वाला कर रहा है, यह हैरान होने की ही नहीं मार्के की बात भी है। उदाहरण के लिए, मृणाल के भाई उसे समझते हुए कह रहें हैं, "थोड़ी बहुत रगड़ झगड़ होती ही है, पर पति के घर के अलावा स्त्री को ओर क्या आसरा है। यह झूठ नहीं है मृणाल कि पत्नी का धर्म पति है, घर पति-गृह है। उसका धर्म, कर्म और मोक्ष भी वही है। समझती तो हो, बेटा।" कोयले वाले की सहायता को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करने के बाद मृणाल कहती है, "मुझे उस समय उस पर बड़ी करुणा आई।" वह समाज की 'मंगलाकांक्षा' में टूटने के लिए तैयार है।

घटनाओं की जगह लंबे लंबे दार्शनिक आलाप - जैनेन्द्र के उपन्यासों में लंबे लंबे दार्शनिक वक्तव्य होते हैं। कुछ लोग इसे उनकी कमजोरी समझेंगे किन्तु यही इनकी विशेषता है। इनके द्वारा लेखक जीवन में काम आने वाले विचार देता है। इनके बिना जैनेन्द्र का कथा संसार फीका लगेगा।

जैनेन्द्र और प्रेमचंद की वर्णन शैली में अंतर - जैनेन्द्र की कथा भाषा शैली प्रेमचंदीय शैली से भिन्न है। कथा के निर्वाह के लिए प्रेमचंद घटना के वर्णन पर बहुत ध्यान देते थे। जैनेन्द्र ऐसा नहीं करते। इसलिए प्रेमचंद के उपन्यासों का आकार बड़ा है, जैनेन्द्र के उपन्यास छोटे रह गए हैं। उदाहरण के लिए, 'त्यागपत्र' उपन्यास में मृणाल की बेंत से निर्मम पिटाई के बाद जैनेन्द्र पूरी घटना को विस्तार नहीं देते। दो एक वाक्यों में कहकर आगे बढ़ जाते हैं। "वह दिन था कि फिर बुआ की हँसी मैंने नहीं देखी। इसके पाँच छह महीने बाद बुआ का विवाह हो गया।" जैनेन्द्र चाहते तो इन महीनों की कथा-व्यथा कहते, पर वे घटना-प्रधानता को उपन्यास का दोष मानते रहे, "वह उपन्यास किसी काम का नहीं, जो इतिहास की तरह घटनाओं का बखान करता चला जाता है।"

बोध प्रश्न

- जैनेन्द्र की कथा भाषा शैली से प्रेमचंद की भाषा शैली किस प्रकार से भिन्न है?
- "जैंसी कुशल गृहणी थीं वैसी ही कोमल भी होतीं तो? यहाँ 'तो' का अर्थ क्या है? विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।

8.4 पाठ सार

जैनेन्द्र कुमार के उपन्यास 'त्यागपत्र' के आधार पर उनके परिवेश और भाषा-शैली पर विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि रचनाकार पात्रों की अधिक चिंता करता है और परिवेश की कम। न उसे प्रकृति चित्रण करने और न ही विस्तृत विवरण देने में कोई रुचि है। वह व्यर्थ का नखशिख वर्णन भी नहीं करता। 'त्यागपत्र' शीर्षक की अर्थ-गर्भिता इसका उदाहरण है। जैनेन्द्र घटनाओं को विस्तार नहीं देते और न ही पाठक को अपने वाग्जाल में फँसाने की कोई चेष्टा करते हैं। 'जो है सो है' उनका दर्शन तो है ही, उनकी शैली और शिल्प का सरल सूत्र भी है। अपने परिवेश से भाषा प्रयोग को उठाने के कारण लेखक भाषा प्रयोग के प्रेग्मेटिक धरातल को स्पर्श करते चलते हैं। घटनाओं की जगह लंबे लंबे दार्शनिक आलाप देकर वास्तव में लेखक अपने पाठकों से यह कहते चलते हैं कि यह कथा तो माध्यम भर है। वे जीवन और जगत की वास्तविकता से हमें परिचित कराते चलते हैं। उनके लिए यही साहित्य का उद्देश्य भी है। प्रेमचंद के मित्र होते हुए भी जैनेन्द्र कुमार ने अपनी कथन-शैली पर उनका प्रभाव नहीं पड़ने दिया। पर उनके भाषा प्रयोग ने बाद के लेखकों को नई राह दिखाई। अज्ञेय का गद्य और समशेर बहादुर सिंह का पद्य इसका प्रमाण है।

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपने 'त्यागपत्र' के निम्नलिखित पक्षों का अध्ययन किया -

- उपन्यास के क्षेत्र में परिवेश और भाषा शैली का महत्व।
- इस उपन्यास के परिवेश पर विचार करते हुए उसके महत्व और सीमाओं की जानकारी।
- भाषा शैली की दृष्टि से लेखक के भाषा-कौशल का रेखांकन।
- 'त्यागपत्र' की विभिन्न अर्थ छवियों और उनके महत्व पर विचार

8.6 शब्द सम्पदा

1. अवचेतन (सब-कांशस) = जो चेतना में न होने पर भी थोड़ा प्रयास करने से चेतना में लाया जा सके।
2. अव्यय = वह व्याकरणिक शब्द जिसका कुछ 'व्यय' न हो अर्थात खर्च न हो। अव्यय शब्द अपना रूप कभी बदलता नहीं। हाँ, ना, अरे, जब, तब और तो आदि अव्यय हैं। इनके प्रयोग से वाक्य में अनोखापन आ जाता है। गौर करें - मैं जाता हूँ और मैं जाता तो हूँ।
3. आमूल-चूल = पूरी तरह से
4. इतस्त = इधर उधर, यहाँ वहाँ

5. उल्था = अनुवाद, बदलाव

6. ऐहिक = सांसारिक, दुनियावी

7. किंकर्तव्यविमूढ़ = जो यह न समझ सके कि अब क्या करना चाहिए, भौंचक्का, दुविधा भरी स्थिति।

8. जर्जर = जीर्ण-शीर्ण, पुराना

9. नियति = भाग्य, जो भगवान को मंजूर हो

10. पछाँह = पश्चिम की ओर का

11. पाखंड = आडंबर, ढकोसला

12. मर्म स्पर्शी = दिल को छू लेने वाली

13. सारगर्भित = महत्वपूर्ण, प्रभावकारी

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'त्यागपत्र का परिवेश उपन्यास की सीमा नहीं उसकी समकालीनता का प्रमाण है।' इस कथन की उपयुक्तता पर विचार कीजिए।
2. पठित उपन्यास से उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए कि जैनेन्द्र कुमार ने कथा-भाषा प्रयोग में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।
3. 'त्यागपत्र' उपन्यास के शीर्षक के आधार पर उसकी भाषा और परिवेश पर टिप्पणी कीजिए।
4. 'शहर की गली और कोठरी की सभ्यता' पद से 'त्यागपत्र' उपन्यास की किस विशेषता या सीमा का उल्लेख किया गया है, स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. पारिवारिक परिवेश की दृष्टि से 'त्यागपत्र' की विवेचना कीजिए।
2. स्त्री, परिवार और समाज के सम्बन्धों की दृष्टि से 'त्यागपत्र' पर विचार व्यक्त कीजिए।
3. 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा शैली पर एक सारगर्भित टिप्पणी लिखिए।

4. पठित उपन्यास के आधार पर जैनेन्द्र कुमार के भाषा प्रयोग का विवेचन कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. 'त्यागपत्र' उपन्यास के परिवेश की सीमा है – ( )

(अ) आकार में लघु (आ) प्राकृतिक चित्रण का अभाव

(इ) गली मुहल्लों में संकुचित (ई) ये सभी

2. त्यागपत्र एक 'कालातीत' कृति है, इसमें कालातीत का अर्थ है – ( )

(अ) बीता हुआ समय (आ) सदा के लिए

(इ) एक विशेष काल के लिए (ई) काल के अतीत के लिए

3. जैनेन्द्र कुमार की भाषा शैली का अनुकरण निम्नलिखित लेखक ने किया ।

(अ) अज्ञेय (आ) शमशेर बहादुर सिंह (इ) ये सभी (ई) रघुवीर सहाय

4. 'त्यागपत्र' की शैली है ।

(अ) आत्मकथात्मक (आ) भावनात्मक (इ) प्रेरणात्मक (ई) ये सभी

5. इनमें से कौन हिंदी का साहित्यकार नहीं है ।

(अ) शरतचंद्र (आ) गौरी दत्त (इ) इनमें से कोई नहीं (ई) गोपाल राय

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. कलेवर की दृष्टि से त्यागपत्र को कोई .... उपन्यास भी कह सकता है।

2. .... और .... परिवेश का निर्माण करते हैं।

3. कथा के निर्वाह के लिए जैनेन्द्र घटना के .... का बहुत ध्यान नहीं रखते।

4. त्यागपत्र उपन्यास .... शैली में लिखा गया है ।

5. जैनेन्द्र ने हिंदी उपन्यास को एक .... और .... भाषा दी ।

III. सुमेल कीजिए

1. जैनेन्द्र की कथा भाषा शैली	(अ) आकार की लघुता
2. दार्शनिक शब्दावली	(आ) घटना का विस्तारपूर्वक वर्णन
3. जैनेन्द्र का जीवन दर्शन	(इ) मरण, माया, ईश्वर, लीला, शरण
4. प्रेमचंदीय शैली	(ई) चरित्र चित्रण की प्रधानता

5. त्यागपत्र (उ) जो है सो है

8.8 पठनीय पुस्तकें

1. त्यागपत्र, जैनेन्द्र कुमार

2. जैनेन्द्र : साहित्य और समीक्षा, डॉ राम रतन भटनागर

3. भारतीय साहित्य के निर्माता जैनेन्द्र कुमार, गोविंद मिश्र

4. जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा, राम रतन भटनागर

5. हिन्दी साहित्य कोश भाग-2, धीरेन्द्र वर्मा

6. जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, डॉ देवराज उपाध्याय

इकाई 9 : कहानी : परिभाषा, स्वरूप और तत्व

रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना
9.2 उद्देश्य
9.3 मूल पाठ : कहानी : परिभाषा, स्वरूप और तत्व
9.3.1 कहानी का अर्थ
9.3.2 कहानी की परिभाषा
9.3.3 कहानी का स्वरूप
9.3.4 कहानी के तत्व
9.3.5 कहानी का महत्त्व
9.4 पाठ सार
9.5 पाठ की उपलब्धियां
9.6 शब्द सम्पदा
9.7 परीक्षार्थ प्रश्न
9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

साहित्य की दो प्रमुख विधाएं होती हैं - पद्य एवं गद्य। मानव जीवन जब तक सरलता से आवेष्टित था, तब तक उनके मन के सहज भाव पद्य की निर्झरिणी बनी बहती रहती थी। जैसे - जैसे मानव विकास की उचाईयों की ओर बढ़ता गया, उसके मन के भावों के गहन गुम्फन ने अपने भावों को प्रकट करने के अलग-अलग राहों का अन्वेषण करना शुरू किया। इन्हीं रूपों में गद्य की विविध विधाओं का विकास हुआ। वैसे तो मानव के जन्म के साथ ही कहानी का अस्तित्व माना जाता है। प्रायः समस्त सभ्य अथवा असभ्य समाज में कहानी की पुरातन परंपरा रही है। प्राचीन काल में वेदों, उपनिषदों में उल्लेखित विविध ऐतिहासिक, पौराणिक कहानियों को आख्यानक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसे - पुरुरवा-उर्वशी, सनत्कुमार-नारद, दुष्यंत-शकुंतला, नल-दमयंती, ययाति, नहुष, गंगावतरण आदि कहानी के काव्यगत रूप ही हैं। लोककथाओं, दंतकथाओं, चम्पू काव्य आदि में कोई न कोई कहानी अवश्य ही समाहित रहती है। हिंदी कहानी का विकास बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ। यह अंग्रेज़ी के 'शॉर्ट स्टोरी' तथा बांग्ला के 'गल्प' विधा के अर्थ में हिंदी में विकसित हुई। आरम्भ में हिंदी कहानी विधा के लिए सरस्वती पत्रिका में 'आख्यायिका' पद का प्रयोग किया गया, जिसका इंदु, वैश्योपकारक, सुदर्शन आदि पत्रिकाओं ने भी अनुसरण किया। 'मर्यादा' पत्रिका में बांग्ला के 'गल्प' पद को अपनाया गया। जबकि हिंदी के प्रखर आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'छोटी कहानी' पद का प्रयोग किया है। कहानी के स्वरूप को विभिन्न विद्वानों ने विविध प्रकार से परिभाषित किया है। किसी ने इसे एक बैठक में पढ़ी जाने वाली रोचक विधा कहा, तो किसी ने आकस्मिक घटनाओं की

संघटना को आवश्यक माना। कहानी के प्रमुख तत्वों की विवेचना करते हुए कथावस्तु, पात्र, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल को अपरिहार्य माना गया है। कहानी के चार प्रमुख अंग माने जाते हैं आरम्भ, आरोह, चरम स्थिति एवं अवरोह। यह भिन्न-भिन्न उदेश्यों से आवेष्टित होकर कभी पाठक का मनोरंजन करती है तो कभी सीख और सूचना देती है। प्रस्तुत पाठ में कहानी की इसी कहानी का विवेचन किया जायेगा।

9.2 उद्देश्य

- कहानी के अर्थ की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- कहानी के विधागत स्वरूप को जानेंगे।
- कहानी के तत्वों पर दृष्टिपात करेंगे।
- कहानी के महत्त्व को समझेंगे।

9.3 मूल पाठ : कहानी : परिभाषा, स्वरूप और तत्व

9.3.1 कहानी का अर्थ

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में हिंदी में गद्य विधा के नवीनतम रूप कहानी का जन्म हुआ। वैसे तो कहानी का लोक कथा रूप सदियों से आम जनता में सदैव व्याप्त रहा। हिंदी कहानी का अर्थ जानने के लिए कहानी और कथा के अंतर को जानना आवश्यक है। कहानी में क्षण में घटित होने वाली संवेदना को प्रस्तुत करने के लिए किसी न किसी कथा का स्वयं ही प्रवेश हो जाता है। अर्थात कहानी में 'कार्य-व्यापार-शृंखला' का संतुलन अपरिहार्य होता है। हिंदी कहानी अंग्रेजी के 'शार्ट स्टोरी' तथा बंगला के 'गल्प' के हिंदी संस्करण के रूप में सामने आया। कहानी कहने - सुनने की आदिम परंपरा में मानव सदैव इसका प्रयोग करता आ रहा है, किन्तु यह काव्यात्मक स्वरूप में ही अब तक प्रचलन में थी। भारत में कहानियां विविध विषयों को लेकर काव्यात्मकता के साथ जन-जन में प्राचीन काल से ही प्रचलित थीं। इसे धार्मिक, सामाजिक, काल्पनिक, नैतिक तथा राजा-रानी आदि की मनोरंजक कथाओं को साहित्य तथा लोकगीतों में देखा जा सकता है। 'सरस्वती' पत्रिका में कहानी के लिए 'आख्यायिका' शब्द का प्रयोग हुआ, जिसे 'सुदर्शन', 'इंदु', 'वैश्योपकारक' आदि ने भी अपनाया। 'मर्यादा' पत्रिका में बंगला के 'गल्प' के अनुकरण पर कहानी के लिए 'गल्प' का प्रयोग किया जा रहा था ।

बोध प्रश्न

- कहानी का अर्थ बताइए।
- 'सरस्वती' पत्रिका में कहानी के लिए किस शब्द का प्रयोग किया गया है?

9.3.2 कहानी की परिभाषा

कहानी विधा को विविध विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है, जिसे अधोलिखित रूप में देखा जा सकता है -

प्रेमचंद के अनुसार 'कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिसमें गायक महफ़िल शुरू होते ही अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूर्ण कर देता है, जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता।'

एडगर एलिन पो के अनुसार 'कहानी वह छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, जो पाठक पर समन्वित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए लिखी गई हो, जिसमें उस प्रभाव को उत्पन्न करने में सहायक तत्वों के अतिरिक्त और कुछ न हो और जो अपने आप में पूर्ण हो।'

प्लेटो के अनुसार 'शरीर के लिए भोजन तथा व्यायाम और मस्तिष्क के लिए कहानी तथा संगीत अति आवश्यक है।'

एडीसन के अनुसार 'जब हमें शिक्षा दीक्षा या उपदेश देना हो, तब हमें कहानी की रचना करनी चाहिए । कहानी शिक्षण का साधन एवं प्रभावशाली माध्यम है।'

एच जी वेल्स के अनुसार 'कहानी गागर में सागर होती है। अतः लेखक उसमें एक उद्देश्य को लेकर चलता है तथा जैसे ही उद्देश्य चरमावस्था तक पहुँचता है। कहानी समाप्त हो जाती है।'

इस प्रकार कहानी विधा को परिभाषित करते हुए विद्वानों ने कभी उसे ध्रुपद की तान कहा तो कभी एक बैठक में पढ़ी जाने वाली छोटी रचना कहा, किन्तु उसके स्वरूप और महत्त्व की उपादेयता को सभी ने एकमत से माना। कहानी शिक्षा, उपदेश, मनोरंजन आदि सभी विषयों के लिए एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में विकसित हुई।

बोध प्रश्न

- प्लेटो ने मस्तिष्क के लिए क्या आवश्यक माना है?
- कहानी को ध्रुपद की तान किसने कहा है?

9.3.3 कहानी का स्वरूप

मानव ने कहने-सुनने की परंपरा को जब मौखिक से लिखित रूप में ढालना शुरू किया तो वह कविता की सरल भावधारा में प्रवाहित होने लगी। मानव ने जैसे-जैसे जीवन के विकास की गति तीव्र की, उनके जीवन में विषमताओं ने भी उसी तीव्रता से डेरा जमाना शुरू किया। ऐसी ही विषमताओं के परत को खोलने के कार्य में साहित्यकार अलग-अलग गद्य विधाओं के माध्यम से निमग्न रहने लगे। हिंदी गद्य की कहानी विधा में आदर्श, यथार्थ से आवेष्टित मानवतावाद को सदैव पुष्ट किया जाता रहा है। कहानी के स्वरूप की चर्चा करते हुए जयशंकर प्रसाद कहते हैं - 'सौन्दर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा रस की सृष्टि करना ही कहानी का उद्देश्य है। हिंदी कथासम्राट प्रेमचन्द कहते हैं - 'कहानी एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा विन्यास सब उसी भाव को पुष्ट करते हैं।' पाश्चात्य

विद्वान एच.जी.वेल्स कहानी के स्वरूप को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं - 'कहानी को आकार में अधिक से अधिक इतना बड़ा होना चाहिए कि वह सरलता से बीस मिनट में पढ़ी जा सके।' इसी भाव को हडसन भी मानते हुए कहते है कि - 'कहानी उसी को कहेंगे जो एक बैठक में सरलता से पढ़ी जा सके।' आर. फ्रांसिस फोस्टर कहते हैं - 'कहानी जीवन की महत्वपूर्ण घटना एवं विषम परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण और मनुष्य के भीतर स्थित आधारभूत गुणों को प्रदर्शित करती है।' कहानी का विषय यथार्थ, आदर्श, कल्पना, अतिकल्पना तथा सत्य का उद्घाटन आदि कोई भी हो सकता है। उसमें राजा-रंक, सामान्य जन अथवा पशु-पक्षी आदि कोई भी मुख्य पात्र के रूप में चित्रित किया जा सकता है। यही कारण है कि कहानी का यह स्वरूप वैदिक काल से आज तक गतिमान बना हुआ है। मानव की अनुभूतियों तथा संघर्षों को कहानीकारों ने समसामयिकता के धरातल पर जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। कहानी का स्वरूप मानव की अनुभूतियों, विद्रोहों, संघर्षों तथा कठिन समस्याओं से अनुस्यूत होकर आकार ग्रहण करता है। कहानी शिक्षा, सूचना, मनोरंजन तथा ज्ञान से आगे बढ़ते हुए मानव जीवन की त्रासदी के विरेचन का उत्तम माध्यम बन चुकी है। कहानियों में युगानुरूप बोध, तर्क, चिंतन तथा समस्याओं से मुक्ति पथ अन्वेषित करने का प्रयत्न कहानीकार करते हैं। हिंदी में कहानी की मूल प्रतिस्थापना का विकसित स्वरूप कम ही देखने में आता है। यही कारण है कि आलोचक हिंदी कहानी के स्वरूप को अलग-अलग दृष्टिकोण से व्याख्यायित करते हैं। कहानी का स्वरूप युगानुरूप परिवर्तित होता रहा है। प्रेमचंद से पूर्व हिंदी कहानी मनोरंजन, शिक्षा, उपदेश तथा कल्पना के आकाश में विचरण कर रही थी। प्रेमचन्द ने हिंदी कहानी को धरा पर उतारकर उसे जन-जन तक पहुँचाया। प्रेमचंदोत्तर युग में हिंदी कहानीकार प्रगतिशीलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए प्रयोगवाद के छत पर पहुँच कर नए-नए प्रयोगों के साथ नई कहानी का रूप गढ़ने लगे। जीवन विकास की जटिलताओं ने कहानी को मनोवैज्ञानिक गुम्फन की दुनियां में पहुँचाया तो मानवतावादी दृष्टिकोण ने हिंदी कहानी को दलित, स्त्री तथा आदिवासी विमर्शों की ओर मोड़ा। इस प्रकार हिंदी कहानी का स्वरूप सतत परिवर्तनशील रहा।

बोध प्रश्न

- कहानी को बीस मिनट में पढ़ी जाने वाली रचना किसने माना?
- किसके अनुसार कहानी में सौन्दर्य की एक झलक का चित्रण किया जाता है?

9.3.4 कहानी के तत्व

कहानी विधा की रचना इन प्रमुख तत्वों के आधार पर किया जाता है -

9.3.4.1 कथावस्तु

कहानी की कथावस्तु प्रायः संक्षिप्त होनी चाहिए। कहानी के कथानक में आरम्भ, विकास, कौतुहल, चरमसीमा एवं अंत का अलग-अलग पड़ाव होता है। लेकिन ये कथानक के अनिवार्य तत्वों के परिचायक नहीं हैं। क्योंकि प्रत्येक कहानी में इन समग्र तत्वों की अन्विति हो, यह

आवश्यक नहीं है। अधिकतर कहानियों में कथानक संघर्ष की स्थिति तक पहुंचकर कौतुहल जगाते हुए चरम स्थिति से होते हुए अपने अंत तक पहुंचकर समाप्त हो जाता है।

9.3.4.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में घटना और समाज से अधिक व्यक्ति को प्रधानता दिया जाता है। वर्तमान हिंदी कहानी में बुध्दिवादी तत्वों की प्रधानता के कारण यथार्थ एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर चरित्र-चित्रण पर अधिक बल दिया जा रहा है। कहानी में पात्रों के संघर्ष को विशेष महत्त्व दिया जाता है। कहानी अपने रूप आकार की संक्षिप्तता के कारण पात्र के सबसे अधिक प्रभावशाली क्षण को ही प्रस्तुत कर पाती है। पात्र केन्द्रित कहानी में यथार्थ जगत का सहज चित्रण कहानी को पाठक के पर्याप्त नजदीक पहुँचा देता है। कहानीकार वर्णनात्मक अथवा प्रत्यक्ष शैली द्वारा पात्र के चरित्र को उद्घाटित करता है। पात्र अपने एकाकी अथवा परस्पर वार्तालाप एवं क्रियाओं द्वारा अपने गुण-दोषों के साथ कहानी में चित्रित होते हैं। पात्रों के चरित्र की सशक्तता कहानी को प्रभावी स्वरूप प्रदान करता है।

9.3.4.3 देशकाल वातावरण

यद्यपि कहानी में देशकाल, वातावरण के विकास के लिए विशेष स्थान नहीं होता तथापि पात्र की मनःस्थिति को समझने में इनका चित्रण सहायक होता है। उदाहरण के लिए जयशंकर प्रसाद की कहानी 'पुरस्कार' में 'मधुलिका' की मनःस्थिति का चित्रण वातावरण के माध्यम से ही जीवंत बन पड़ा है। मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक कहानियों में भौतिक वातावरण का सजीव चित्रण पाठक और श्रोता को कहानियों के जीवंत चित्रण से सम्बध्द करता है।

9.3.4.4 संवाद या कथोपकथन

कहानी एक ऐसी विधा होती है, जिसमें लंबे-चौड़े संवाद के लिए कोई स्थान नहीं होता है। प्रेमचन्द के 'बड़े भाई साहब' में बड़े भाई के लम्बे-लम्बे भाषण में भी चुटीलापन दृष्टिगत होता है। प्रायः कहानी में नाटकीयता तथा रोचकता का सृजन छोटे-छोटे संवादों के माध्यम से किया जाता है। इसीलिए संवादों से शुरू होने वाली कहानियां पाठकों पर अधिक प्रभाव डालती हैं। कहानियों के संवाद देशकाल, परिस्थितियों एवं पात्रानुसार होनी चाहिए। जब कहानी में संवाद रोचक, प्रवाहमय एवं तर्कयुक्तता के साथ प्रस्तुत किये जाते हैं तो कहानी की गति सहज रूप में प्रवाहित होती है।

9.3.4.5 भाषा शैली

कहानीकार को कहानी कला में निपुण होने के लिए यह आवश्यक है कि उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार हो। अल्प में अधिक कहने की कला कहानी को प्रभावी स्वरूप प्रदान करता है। कहानी की सहजगम्यता के लिए कहानीकार विषयानुसार शैली का चयन कर सकता है, जैसे आत्मकथात्मक, रक्षात्मक, डायरी, पत्रात्मक, नाटकीय आदि ।

9.3.4.6 उद्देश्य

कहानी अपने आरंभिक दौर में मनोरंजन, उपदेश प्रधान हुआ करती थीं। किन्तु बदलते युग एवं परिवेश ने उसे विविध समस्याओं, दृष्टिकोणों से सम्बध्द करते हुए जीवन मूल्यों की नयी स्थापनाओं की ओर मोड़ दिया। यही कारण है कि कहानी में निर्मिती एवं एकता का होना अति आवश्यक माना जाता है। कहानी जब पाठक से सीधे जुड़ जाती है तो कहानीकार की सर्जना उद्देश्यपूर्ण हो जाती है।

बोध प्रश्न

- कहानी के कितने तत्व होते हैं?
- कहानी की कथावस्तु आकार में कैसी होनी चाहिए?
- कहानी के पात्रों की मनःस्थिति को समझने के लिए किसका चित्रण प्रभावी माना जाता है?
- कहानीकार का उद्देश्य कब सार्थक माना जाता है?

9.3.5 कहानी का महत्त्व

कहानी कहने-सुनने की परंपरा मानव जीवन के विकास से सम्बध्द है। क्योंकि सीखने-सिखाने की यह एक प्रभावशाली प्रक्रिया है। मानव समाज को शिक्षित करने में कहानियां अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कहानियों के माध्यम से बाल मनोविज्ञान की जिज्ञासा का रोचक निराकरण किया जाता है। जहाँ बालपन में मौखिक कहानियों, चित्रों के माध्यम से बच्चों को शिक्षित किया जाता है, वहीँ समाज के शिक्षित एवं अशिक्षित समाज की संवेदनात्मकता को पुष्ट करने में भी कहानियों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जीवन की उलझनों को सुलझाने का सरल, संक्षिप्त एवं प्रभावी माध्यम के रूप में कहानी विधा बेजोड़ है। विश्व के सभी देशों में कहानी विधा को किसी न किसी रूप में अवश्य ही प्रयोग किया जाता रहा है। कई बार मनुष्य जीवन में सीधे-सीधे हर बात को कहने से बचने का प्रयत्न करता है, क्योंकि प्रत्येक अभिव्यक्ति अच्छी ही हो यह आवश्यक नहीं। कुछ अभिव्यक्तियाँ अप्रिय, कटु, वीभत्स, असभ्य भी होती हैं, ऐसी अभिव्यक्तियों को भी कहानी के माध्यम से बड़ी सरलता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहानी किसी भी विषय को अभिव्यक्ति का सरलतम रूप प्रदान करती है।

कहानी पढ़ते या सुनते समय पाठक अथवा श्रोता की जिज्ञासा अपने चरम पर पहुँच जाती है। ये कहानियां जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्बध्द होती है। यथार्थ जगत, कल्पना जगत, समाज, धर्म, राजनीति, मनोविज्ञान, आर्थिक, नैतिक तथा विविध जीवन मूल्यों को लेकर कहानियों का सर्जन किया जाता है। कहानी मानव समाज के जितने निकट होती है वह पाठक या श्रोता को उतनी ही उत्कंठित करती हुई उनकी संवेदनाओं को पुष्ट करती है। विश्व की महान विभूतियों की कहानियां जब मानव जीवन के आरंभिक चरणों में अर्थात बाल्यकाल में सुनाई जाती है, तो उसका व्यक्तित्व के विकास पर अमिट प्रभाव पड़ता है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के विकास काल में भी कहानियों का महत्त्व यथावत बना हुआ है । मानवीय मस्तिष्क के दाहिने हिस्से के विकास के लिए आधुनिक चिकित्सा शास्त्र भी कला, सौन्दर्य, प्रेम एवं सम्पूर्णता के

भावों के विकास के लिए कहानी जैसी विधाओं के महत्त्व को दर्शाते है। वर्तमान तनावयुक्त जीवन के उलझनों को सुलझाने का कार्य कहानियों के माध्यम से भलीभांति हो सकता है।

9.4 पाठ सार

कहानी में क्षण में घटित होने वाली संवेदना को प्रस्तुत करने के लिए किसी न किसी कथा का स्वयं ही प्रवेश हो जाता है। अर्थात कहानी में 'कार्य-व्यापार-शृंखला' का संतुलन अपरिहार्य होता है। हिंदी कहानी अंग्रेजी के 'शार्ट स्टोरी' तथा बंगला के 'गल्प' के हिंदी संस्करण के रूप में सामने आया। कहानी कहने-सुनने की आदिम परंपरा से आज तक मानव सदैव इसका प्रयोग करता आ रहा है, किन्तु यह काव्यात्मक स्वरूप में ही अब तक प्रचलन में था। हिंदी कहानी का विकास बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ। यह अंग्रेज़ी के 'शॉर्ट स्टोरी' तथा बांग्ला के 'गल्प' विधा के अर्थ में हिंदी में विकसित हुई। आरम्भ में हिंदी कहानी विधा के लिए सरस्वती पत्रिका में 'आख्यायिका' पद का प्रयोग किया गया। मानव ने जैसे-जैसे जीवन के विकास की गति तीव्र की, उनके जीवन में विषमताओं ने भी उसी तीव्रता से डेरा जमाना शुरू किया। ऐसी ही विषमताओं के परत को खोलने के कार्य में साहित्यकार अलग-अलग गद्य विधाओं के माध्यम से निमग्न रहने लगे। हिंदी गद्य की कहानी विधा में आदर्श, यथार्थ से आवेष्टित मानवतावाद को सदैव पुष्ट किया जाता रहा है।

कहानी का स्वरूप मानव की अनुभूतियों, विद्रोहों, संघर्षों तथा कठिन समस्याओं से अनुस्यूत होकर आकार ग्रहण करता है। कहानी शिक्षा, सूचना, मनोरंजन तथा ज्ञान से आगे बढ़ते हुए मानव त्रासदी के विरेचन का उत्तम माध्यम बन चुकी है। कहानियों में युगानुरूप बोध, तर्क, चिंतन तथा समस्याओं से मुक्ति पथ अन्वेषित करने का प्रयत्न कहानीकार करते हैं। हिंदी में कहानी की मूल प्रतिस्थापना का विकसित स्वरूप कम ही देखने में आता है। यही कारण है कि आलोचक हिंदी कहानी के स्वरूप को अलग-अलग दृष्टिकोण से व्याख्यायित करते हैं। कहानी का स्वरूप युगानुरूप परिवर्तित होता रहा है। कहानी के कथानक में आरम्भ, विकास, कौतुहल, चरमसीमा एवं अंत का अलग-अलग पड़ाव होता है। कहानी में पात्रों के संघर्ष को विशेष महत्त्व दिया जाता है। यद्यपि कहानी में देशकाल वातावरण के विकास के लिए विशेष स्थान नहीं होता तथापि पात्र की मनःस्थिति को समझने में इनका चित्रण सहायक होता है। अल्प में अधिक कहने की कला कहानी को प्रभावी स्वरूप प्रदान करता है। कहानी जब पाठक से सीधे जुड़ जाती है तो कहानीकार की सर्जना उद्देश्यपूर्ण हो जाती है। कहानी मानव समाज के जितने निकट होती है वह पाठक या श्रोता को उतनी ही उत्कंठित करती हुई उनकी सम्वेदनाओं को पुष्ट करती है। विश्व की महान विभूतियों की कहानियां जब मानव जीवन के आरंभिक चरणों में सुनाई जाती है तो उसका व्यक्तित्व के विकास पर अमिट प्रभाव पड़ता है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के विकास काल में भी कहानियों का महत्त्व यथावत बना हुआ है। कहानी की कहानी मानव सभ्यता के विकास से अपरिहार्य रूप से जुड़ी हुई है। यही कारण है कि विविध विद्वानों, आलोचकों ने कहानी को सार्वकालिक विधा के रूप में प्रतिस्थापित किया है।

9.5 पाठ की उपलब्धियां

पाठ की निम्नलिखित उपलब्धियां हैं -

1. हिंदी कहानी के अर्थ को भली-भांति परिभाषित किया गया है।
2. कहानी के स्वरूप को विवेचित किया गया है।
3. कहानी के तत्वों को विस्तार से बताया गया है।
4. वर्त्तमान युग में कहानी के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

9.6 शब्द सम्पदा

1. अधोलिखित = निचे लिखा हुआ या निम्नलिखित
2. अनुकरण = अनुकूल आचरण या तदनुसार
3. अनुस्यूत = ग्रंथित या पिरोया हुआ
4. अन्विति = एकता या संगति
5. अन्वेषण = खोजना या शोध करना
6. अपरिहार्य = जिसका परिहार न हो या अनिवार्य
7. अल्प = थोड़ा या तुच्छ
8. आख्यानक = कथा या कहानी
9. आवेष्टित = ढाका या घिरा हुआ
10. उत्कंठित = तीव्र अभिलाषा या बेचैनी
11. कौतुहल = किसी विषय को जानने की इच्छा या जिज्ञासा
12. गुम्फन = गूंथना या गांठना
13. तर्कयुक्तता = तर्कसंगत या युक्तिपूर्ण
14. तान = विस्तार या गायन में स्वर का खिंचाव
15. दृष्टिपात = अवलोकन या अवलोचन
16. ध्रुपद = गीतों की विशिष्ट शैली जिसमें स्वर और लय का विचलन न हो
17. निमग्न = लीन या मग्न
18. निराकरण = दूर करना या हटाना

19. निर्झरिणी = झरने के जल से बहने वाली नदी या पहाड़ी नदी

20. पुरातन = प्राचीन या पुराना

21. पुष्ट = दृढ़ता या मजबूती

22. यथावत = ज्यों का त्यों या अच्छी तरह से

23. विरेचन = विकारों को दूर करना

24. वीभत्स = घृणित या गन्दा

25. संक्षिप्त = कम या थोड़े में

26. संघटना = साहित्य में नाटिका का संयोग या मिला हुआ

27. सम्बध्द = जुड़ा हुआ या संलग्न

28. सहजगम्यता = साधारणतया या समान्यतया

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कहानी विधा का परिचय देते हुए विविध विद्वानों की परिभाषाएं दीजिए।
2. कहानी के स्वरूप को चित्रित कीजिए।
3. कहानी के तत्वों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
4. कहानी के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. कहानी शब्द के उद्भव पर प्रकाश डालिए।
2. कहानी की कोई दो परिभाषा लिखिए।
3. कहानी के किन्हीं दो तत्वों को बताइए।
4. कहानी के महत्व को संक्षिप्त में समझाइए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. इनमें से किस पत्रिका में कहानी के लिए ‘आख्यायिका’ शब्द का प्रयोग किया गया? (   )

   (अ) प्रतीक (आ) हंस (इ) सरस्वती

2. कहानी के लिए अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द इनमें से क्या है? (   )

   (अ) लिटिल स्टोरी (आ) शार्ट स्टोरी (इ) मिनी स्टोरी

3. कहानी का स्वर्णिम काल किसे माना जाता है? (   )

   (अ) भारतेंदु युग (आ) द्विवेदी युग (इ) प्रेमचन्द

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. .... के अनुसार कहानी गागर में सागर होती है।
2. ....की दो प्रमुख विधाएं होती हैं – पद्य एवं गद्य।
3. बंगला में कहानी के लिए ....शब्द का प्रयोग किया गया है।
4. ....के अनुसार शरीर के लिए भोजन तथा व्यायाम और मस्तिष्क के लिए कहानी की आवश्यकता होती है।

III. सुमेल कीजिए

1. सरस्वती	(क) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. पुरस्कार	(ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी
3. छोटी कहानी	(ग) कथासम्राट
4. प्रेमचन्द	(घ) मधुलिका

9.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी कहानी : रचना और परिस्थिति, सुरेन्द्र चौधरी
2. आज की कहानी, विजयमोहन सिंह
3. नयी कहानी : पुनर्विचार, मधुरेश
4. कथा-साहित्य के सौ बरस, सं० विभूति नारायण राय

इकाई 10 : हिंदी कहानी : उद्भव और विकास

रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना
10.2 उद्देश्य
10.3 मूल पाठ : हिंदी कहानी : उद्भव एवं विकास
10.3.1 हिंदी कहानी का उद्भव
10.3.2 हिंदी कहानी का विकास
10.3.2.1 प्रेमचंद पूर्व युग
10.3.2.2 प्रेमचन्द युग
10.3.2.3 प्रेमचंदोत्तर युग
10.3.2.3.1 प्रगतिवादी कहानियां
10.3.2.3.2 मनोवैज्ञानिक कहानियां
10.3.2.3.3 स्वातंत्र्योत्तर कहानियां
10.3.2.3.4 नयी कहानी
10.4 पाठ सार
10.5 पाठ की उपलब्धियां
10.6 शब्द सम्पदा
10.7 परीक्षार्थ प्रश्न
10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों ! कहानी विधा से परिचय मानव का आदिम काल से ही रहा है। मानव सभ्यता के भाषिक विकास के साथ ही लोक कथा उनके जीवन का अभिन्न अंग रहा है। मानव के जन्म के साथ ही कहानी का अस्तित्व माना जाता है। प्रायः समस्त सभ्य अथवा असभ्य समाज में कहानी की पुरातन परंपरा रही है। प्राचीन काल में वेदों, उपनिषदों में उल्लेखित विविध ऐतिहासिक, पौराणिक कहानियों को आख्यानक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। मानव जिज्ञासा के अंतर्गत कहने-सुनने के इसी भाव को कथा, लोक कथा का नाम दिया जाता रहा है। हिंदी कहानी का विकास बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ। हिंदी कहानी का वर्तमान स्वरूप अंग्रेजी के 'शार्ट स्टोरी' के आधार पर विकसित हुआ है। इसका प्रयोग बांग्ला के 'गल्प' विधा के अर्थ में हिंदी में हुआ है। आरम्भ में हिंदी कहानी विधा के लिए 'सरस्वती' पत्रिका में 'आख्यायिका' पद का प्रयोग किया गया, जिसका 'इंदु', 'वैश्योपकारक', 'सुदर्शन' आदि पत्रिकाओं ने भी अनुसरण किया। 'मर्यादा' पत्रिका में बांग्ला के 'गल्प' पद को अपनाया गया। जबकि हिंदी के प्रखर आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'छोटी कहानी' पद का प्रयोग किया है। कहानी गद्य विधा की महत्वपूर्ण विधा है। इसमें समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है, हिंदी कहानी के क्षेत्र में

होने वाले ये परिवर्तन कहानी आन्दोलन के नाम से जाने जाते है। प्रस्तुत पाठ में हिंदी कहानी के इसी उद्भव एवं विकास का विवेचन किया जाएगा।

10.2 उद्देश्य

प्रिय विद्यार्थियों ! प्रस्तुत पाठ के अध्ययन से आपको हिंदी कहानी के उद्भव एवं विकास की समग्र जानकारी दी जाएगी। इस पाठ के अध्ययन से आप -

- हिंदी कहानी की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- हिंदी कहानी के उद्भव को जानेंगे।
- हिंदी कहानी के क्रमिक विकास को जान सकेंगे।
- प्रेमचंद पूर्व युग की हिंदी कहानियों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रेमचंद युग तथा प्रेमचन्द युग के बाद की हिंदी कहानियों की जानकारियों से अवगत होंगे।
- हिंदी भाषा की प्रमुख कहानियों एवं कहानीकारों के नाम से परिचित हो सकेंगे।

10.3 मूल पाठ : हिंदी कहानी का उद्भव एवं विकास

10.3.1 हिंदी कहानी का उद्भव

विश्व कथा साहित्य में संस्कृत कथा साहित्य की परिनिष्ठित परंपरा रही है। यद्यपि हिंदी भाषा का विकास संस्कृत से हुआ है तथापि हिंदी कथा साहित्य का विकास संस्कृत से न होकर पाश्चात्य कथा साहित्य के आधार पर हुआ है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल 'गद्यकाल' के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि हिंदी गद्य साहित्य की विविध विधाओं का सर्जन आधुनिक काल से ही विधिवत आरम्भ हुआ। ब्रज भाषा में भक्तिकालीन कवियों की 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' तथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' को कुछ आलोचकों द्वारा हिंदी कहानी परंपरा का आरम्भ माना जाता है। हिंदी के आरंभिक गद्यकारों की गद्य विधाओं को कहानी के तत्वों, विषयों तथा स्वरूप आदि के स्तर पर विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सदा सुखलाल के 'सुख सागर', लल्लूलाल के 'प्रेम सागर', सदल मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' तथा इंशा अल्ला खां के 'रानी केतकी की कहानी' को इस श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। अतः हिंदी कहानी का उद्भव भारतेंदु युग से माना जा सकता है। हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के अभूतपूर्व योगदान को देखते हुए उन्हें कथा सम्राट की उपाधि से विभूषित किया गया। प्रेमचंद के नाम पर ही कहानी के विकास के काल को विभाजित किया गया है, जैसे पूर्व प्रेमचंद युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचंदोत्तर युग आदि।

आरम्भ में हमारा परिचय दादी-नानी की परिकथा, काल्पनिक तथा शिक्षाप्रद कहानियों से हुआ। मौखिक कथाओं ने जब सहित्य जगत में प्रवेश किया तो वह कहानी के नाम से जानी जाने लगी। आरम्भिक काल के राजा-रानी, भगवान-भूत, राक्षस-देवता, पशु-पक्षी, जादू-टोने, मूर्ख-विद्वान आदि की कथाओं ने जन मन के सभी आयु वर्ग का मनोरंजन तो किया ही साथ ही यह शिक्षा का प्रमुख स्रोत भी बन कर उभरा। आरम्भिक कहानियों की परंपरा अधिकांशतः

कल्पना पर आधारित थी। किन्तु कुछ कहानियों में ऐतिहासिक तथ्यों का भी समावेश होता था, जो वर्त्तमान कहानियों का प्राचीन स्वरूप मानी जा सकती हैं। प्राचीन कहानियां प्रायः घटनाप्रधान होती थीं। जिसमें कथाकार कोई निश्चित उद्देश्य के साथ कहानी को आगे लेकर चलता था तथा अपने उद्देश्य की पूर्ति होते ही कहानी को चरम तक पहुंचा देता था। वर्तमान हिंदी कहानियों में चमत्कार, कल्पना के स्थान पर यथार्थ का बाहुल्य होता है। क्योंकि कहानीकार कहानी को पाठक तथा श्रोता के जीवन जगत से उठा कर उसे यथार्थ स्वरूप प्रदान करते हैं। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होते हुए भी एक नए समाज की परिकल्पना को भी स्वयं में समेटे रहता है। उन्नीसवीं सदी के बदलते समाज को प्रस्तुत करने में कहानी विधा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान सामाजिक परिवर्तनों की भाँति ही कहानी विधा के स्वरूप में भी आशातीत परिवर्तन देखने को मिलते हैं। प्राचीन काल में वेदों, उपनिषदों में उल्लेखित विविध ऐतिहासिक, पौराणिक कहानियों को आख्यानक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया। जैसे - पुरुरवा-उर्वशी, सनत्कुमार-नारद, दुष्यंत-शकुंतला, नल-दमयंती, ययाति, नहुष, गंगावतरण आदि कहानी के काव्यगत रूप ही हैं। लोककथाओं, दंतकथाओं, चम्पू काव्य आदि में कोई न कोई कहानी अवश्य ही समाहित रहती है। किन्तु वर्तमान हिंदी कहानी का उद्भव अट्ठारहवीं तथा उन्नीसवीं सदी के मध्य हुआ।

बोध प्रश्न

- प्राचीन कहानियों में किस तत्व की प्रधानता होती थी?
- हिंदी कथा सम्राट किसे कहा जाता है?

10.3.2 हिंदी कहानी का विकास

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल गद्य विधाओं की विविधमुखी सर्जनाओं के कारण गद्य काल के नाम से अभिहित किया जाता है। अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा ने भारतीयों के मन-मस्तिष्क को एक खुला आकाश दिया। हिंदी के साहित्यकारों ने अंग्रेजी की विविध विधाओं का अनुकरण करते हुए हिंदी में हिन्दुस्तानी संस्कृति को लेकर गद्य विधाओं का प्रणयन किया। हिंदी कहानी का विकास बंगला के गल्प तथा अंग्रेजी के शार्ट स्टोरी के आधार पर हुआ है। हिंदी की आरंभिक कहानियां अनुदित रूप में अधिक मिलती हैं, उस समय तक रूसी, फ़्रांसीसी, अंग्रेजी भाषा में कहानियों का पर्याप्त विकास हो चुका था। 'रानी केतकी की कहानी' तथा 'नासिकेतोपाख्यान' में कहानी के वर्तमान तत्वों के आधार पर सर्वथा अभाव देखा जा सकता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र की कहानी 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' तथा राधाचरण गोस्वामी की 'यमलोक की यात्रा' में भी कहानी के सम्पूर्ण तत्वों का अभाव पाया गया है। हिंदी की पहली कहानी 'सरस्वती' पत्रिका में सन् 1900 में प्रकाशित पंडित किशोरी लाल गोस्वामी की कहानी 'इंदुमती' को माना जाता है। हिंदी कहानी के विकास को भलीभांति जानने के लिए कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद की कहानी कला को आधार बनाना होगा। क्योंकि प्रेमचन्द ने हिंदी कहानी को अपनी अलग-अलग शैलियों से पुष्ट किया। प्रेमचंद के द्वारा रचित तीन सौ से भी अधिक

कहानियों ने हिंदी कहानी को समृध्दि प्रदान की। प्रेमचंद के द्वारा हिंदी कहानी कला को कल्पना के आकाश से उतार कर यथार्थ की धरती पर प्रतिष्ठापित किया गया, इसीलिए हिंदी कहानी के विकास को प्रेमचंद को केंद्र में रखकर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है -

1. प्रेमचंद पूर्व युग : सन् 1901 से सन् 1914 ई.

2. प्रेमचन्द युग : सन् 1915 से सन् 1936 ई.

3. प्रेमचन्दोत्तर युग : सन् 1936 से वर्तमान युग तक

कहानी की विविध विशेषताओं के आधार पर हिंदी कहानी की विविध धाराओं का विवेचन यहाँ किया जा रहा है ।

10.3.2.1 प्रेमचंद पूर्व युग : सन् 1901 से सन् 1914 ई.

आलोचकों के बीच हिंदी की प्रथम कहानी को लेकर पर्याप्त मतभेद दिखाई देता है। क्योंकि कहानी कला के मानदंडों के आधार पर मुंशी इंशा अल्ला खां की 'उदयभान चरित' तथा 'रानी केतकी की कहानी' को पहली कहानी नहीं माना जाता है। भले ही रचनाकाल की दृष्टि से उक्त दोनों कहानियों को पहली कहानी कहा जाय, किन्तु कहानी कला की दृष्टि से ये आधुनिक कहानी कला से मेल नहीं खाती हैं। राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की कहानी 'राजा भोज का सपना', किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती', आचार्य रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' तथा बंग महिला की 'दुलाईवाली' आदि को आरम्भिक हिंदी की प्रयोगशील कहानियों में परिगणित किया जाता है। आधुनिक कहानी कला के आधार पर माधव सप्रे की सन् 1903 में प्रकाशित 'टोकरी भर मिटटी' को आलोचक हिंदी की प्रथम कहानी मानते हैं। प्रेमचन्द से पूर्व हिंदी कहानियों में निम्नलिखित विशेषताओं को देखा जा सकता है -

1. प्रेमचाद पूर्व युग की हिंदी कहानियों का स्वरूप प्रायः अलौकिक होता थी, वे यथार्थ जगत से बहुत दूर होती थीं।
2. भाषा की दृष्टि से इस युग की कहानियों की भाषा खड़ी बोली के प्रौढ़ स्वरूप से दूर होती थी।
3. इस युग की कहानियों में आदर्श का प्राचुर्य होता था।
4. प्रेमचंद पूर्व युग के कहानीकारों की प्रयोगधर्मिता के कारण कहानियों में नए-नए प्रयोगों को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- 'राजा भोज का सपना' कहानी के लेखक का नाम क्या है?
- बंगमहिला की कहानी का नाम लिखिए।

10.3.2.2 प्रेमचन्द युग : सन् 1915 से सन् 1936 ई.

हिंदी कहानी लोक में प्रेमचंद का अवतरण अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रेमचंद के कहानी संग्रह आरम्भ में नवनिधि, सप्तसरोज, प्रेमपचीसी, प्रेमद्वादशी, प्रेमतीर्थ, प्रेमपूर्णिमा तथा सप्तसुमन आदि नामों से प्रकाशित हुए। कुछ समय के उपरांत प्रेमचंद की समस्त कहानियां 'मानसरोवर' के आठ भागों में प्रकाशित हुई। प्रेमचंद के साथ ही कई हिंदी के कहानीकार भी कहानी रचना में निमग्न थे। जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, वृन्दावन लाल वर्मा, गोपालराम गहमरी, रायकृष्ण दास, पदुमलाल पुन्नालाल वख्शी, पंडित ज्वालाप्रसाद शर्मा, गंगाप्रसाद श्रीवास्तव प्रभृति कहानीकारों की कहानियां हिंदी की अलग-अलग पत्रिकाओं में बढ़-चढ़ कर प्रकाशित होती थी। इस युग के कुछ प्रमुख कहानीकारों के योगदान को आलोचकों ने हिंदी कहानी का आधार स्तम्भ माना है। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी को आधुनिक हिंदी कहानी कला की दृष्टि से सर्वोत्तम एवं पूर्ण कहानी की श्रेणी में रखा जाता है। इसके अतिरिक्त गुलेरी जी ने सुखमय जीवन, बुध्दू का कांटा कहानी की रचना की। जयशंकर प्रसाद की कहानियों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक भावधारा की प्रधानता उनकी पुरस्कार, ममता, इंद्रजाल, छाया, आकाशदीप, आंधी आदि कहानियों में दृष्टव्य है। प्रेमचन्द हिंदी कहानी के पर्याय बन गए। प्रेमचंद की कहानी कला ने हिंदी कहानी जगत में कीर्तिमान स्थापित किए। उनकी कहानियों में उत्तर भारतीय समाज बोलता हुआ दिखाई देता है। सदियों से पद्दलित, दमित, उपेक्षित समाज के पिछड़े वर्ग की पीड़ा को प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में स्थान दिया है। उन्होंने मात्र तद्युगीन समस्याओं को ही अपने कथा साहित्य का विषय नहीं बनाया बल्कि मानव में अन्तर्हित देवत्व को भी सामने लाते हुए आदर्शवादी कहानियों के द्वारा समस्या के समाधान का मार्ग भी प्रशस्त किया। इनकी प्रमुख कहानियों में पञ्च परमेश्वर, आत्माराम, बड़े घर की बेटी, शतरंज के खिलाड़ी, रानी सारंधा, ईदगाह, बूढी काकी, पूस की रात, कफन, मुक्तिपथ आदि ने हिंदी कहानी को विविधमुखी दृष्टि से कहानी के क्षेत्र में प्रतिष्ठा दिलाई। समाज की रूढ़ियों पर प्रेमचंद ने अपनी विविध कहानियों के माध्यम से न केवल कुठाराघात किया। बल्कि उनसे मुक्ति का मार्ग भी उन्होंने अपनी रचनाओं में चित्रित किया। यद्यपि प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों की भाषा खड़ी बोली हिंदी को बनाया तथापि उनकी भाषा में उर्दू के शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है। प्रेमचंदकालीन आम जनता की भाषा भी उर्दू मिश्रित हिंदी थी, यही कारण है कि विषय एवं भाषा की दृष्टि से कहानी के पाठकों एवं श्रोताओं को प्रेमचंद अपने आस-पास के लेखक प्रतीत हुए।

विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक की कहानियों में आदर्श एवं यथार्थ का मिश्रण देखा जा सकता है। ताई, रक्षाबंधन, माता का हृदय, चित्रशाला, कल्लौल, कलामंदिर आदि लगभग तीन सौ से अधिक कहानियों का प्रणयन करते हुए हिंदी कहानी साहित्य को पुष्ट किया। सुदर्शन की घटनाप्रधान कहानियों में मानवीय संवेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति पाठकों को सहज ही आकर्षित करती है। इनकी हार की जीत, आशीर्वाद, कवि का प्रायश्चित, न्यायमंत्री आदि कहानियां पनघट, सुदर्शन सुधा, तीर्थयात्रा आदि कहानी संग्रहों में संकलित है। बाबू गुलाबराय ने प्रेमचंद, सुदर्शन तथा कौशिक को हिंदी कहानी साहित्य के प्रेमचन्द स्कूल के बृहद्त्रयी की

संज्ञा से अभिहित किया है। प्रेमचंद की ही परंपरा में आचार्य चतुरसेन की सफेद कौवा, सिंहगढ़ विजय, दुखवा मै कासे कहूं मोर सजनी, वृन्दावनलाल वर्मा की 'शेरशाह का न्याय, कटा-फटा झंडा, शरणागत, भगवती प्रसाद वाजपेयी की निंदिया लागी, मिठाईवाला, खाल, बोतल, मैना, सियारामशरण गुप्त, उषादेवी मित्रा, रामवृक्ष बेनीपुरी प्रभृति कहानीकारों ने हिंदी कहानी की विकास यात्रा को पंख लगा दिए। प्रेमचंदयुगीन कहानियों की विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं में देखा जा सकता है -

1. इस युग की कहानियां आदर्श तथा यथार्थ की मिश्रित स्वरूप है।
2. भाषिक स्तर पर हिंदी के सुष्ठु प्रयोग को प्रेमचंद युगीन कहानियों में देखा जा सकता है।
3. मानव अंतर्मन को उद्घाटित करने वाली कहानियां देखी जा सकती है।
4. तद्युगीन स्वतंत्रता संग्राम की विचारधाराओं का प्रभाव कहानियों में देखा जा सकता है।
5. सामाजिक पिछड़ेपन तथा अशिक्षा को इस युग की कहानियों में प्रमुख स्वर दिया गया है।
6. राजनीतिक, आर्थिक बदहाली के विरूध्द स्वर प्रेमचंद्युगीन कहानियों में देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- 'सप्तसुमन' किसके कहानी संग्रह का नाम है?
- 'कटा-फटा झंडा' किसकी कहानी का नाम है?

10.3.2.3 प्रेमचंदोत्तर युग : सन् 1936 से वर्तमान युग तक

प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानियों का परिप्रेक्ष्य भारत की स्वतंत्रता के बाद का परिदृश्य है। इस काल में भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व में परिवर्तन की प्रक्रिया अति तीव्र हो गयी थी। एक ओर प्रेमचंद की यथार्थवादी, प्रगतिवादी विचारों के साथ कहानियां लिखी जा रही थीं, तो दूसरी ओर प्रसाद की भाववादी मनोवैज्ञानिक कहानियों में स्वतंत्रता के बाद के जीवन संघर्ष को दर्शाया गया है। आलोचकों ने प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानियों को प्रगतिवादी तथा मनोवैज्ञानिक कहानियों के नाम विवेचित किया है।

10.3.2.3.1 प्रगतिवादी कहानियां

जिन कहानियों में यथार्थ एवं सामाजिक जीवन का प्रत्यक्ष दर्शन हो, वे प्रगतिवादी कहानियां कही जाती है। सन् 1936 में जब प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई, तो इस संघ के कहानीकार अधिकांशतः यथार्थ जगत की कहानियां ही प्रस्तुत करते थे। प्रगतिशील कहानीकारों में विष्णु प्रभाकर, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, अमृतलाल नागर, उपेन्द्रनाथ अश्क, रमाप्रसाद थिल्डीयाल पहाड़ी, यशपाल आदि ने आर्थिक शोषण, धार्मिक अन्धविश्वासों तथा

सामाजिक कुरीतियों को कहानियों के केंद्र में रखा। कहानी कला के तत्वों के सर्जन के समय कहानीकार की पूरी दृष्टि पात्रों के सामाजिक संबंधों पर केन्द्रित हो जाती है।

प्रगतिशील कहानीकारों पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों को लेकर यशपाल ने महाराजा का इलाज, परदा, उत्तराधिकारी, काला आदमी, फूलों का कुरता, धर्मयुद्ध, सच बोलने की भूल, चार आना, धर्मरक्षा आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया। मानववादी विचारधाराओं, सामाजिक विषमताओं तथा निम्नवर्गीय मानव जीवन की बदहाली को उपेन्द्रनाथ अश्क ने डाची, आकाशचारी, अंकुर, खाली डिब्बा, एक उदासीन शाम, नासूर आदि कहानियों में चित्रित किया है। रमाप्रसाद थिल्डीयाल पहाड़ी की कहानियों में उन्मुक्त प्रेम का दर्शन किया जा सकता है, हिरन की आँखें, तमाशा, मोर्चा तथा राजरानी इनकी उल्लेखनीय कहानियां हैं।

पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र की कहानियां उनके नाम के ही अनुसार उग्र भाव से सिक्त है, देशभक्त, उसकी माँ, दोज़ख की आग आदि कहानियों में तद्युगीन राजनीतिक तथा सामाजिक विकृतियों का सजीव चित्रण देखा जा सकता है। सुधारवादी दृष्टिकोण के साथ कहानीकार बिष्णु प्रभाकर ने कई सशक्त कहानियां लिखी हैं, गृहस्थी मेरा बेटा, रहमान का बेटा, अभाव, जज का फैसला, धरती अब भी घूम रही है, ठेका आदि कहानियों में व्यक्ति, परिवार तथा सामाजिक व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। स्वतंत्रता के बाद के आर्थिक संकट तथा पारिवारिक, सामाजिक टूटन को अमृतलाल के गरीब के हाय, निर्धन कयामत का दि, गोरखधंधा, दो आस्थाएं आदि कहानियों में देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- ‘उसकी माँ’ कहानी के लेखक का क्या नाम है?
- अमृतलाल की दो कहानियों के नाम लिखिए।

10.3.2.3.2 मनोवैज्ञानिक कहानियां

हिंदी के मनोवैज्ञानिक कहानीकारों ने कहानियों में मानव मन को केंद्र में रखकर समाज की मूल इकाई मानव का, उनकी पीड़ा, त्रासदी तथा मानसिक अंतर्द्वंद्व का चित्रण करते हुए मनोवैज्ञानिक कहानियों का सर्जन करते हुए व्यक्ति को महत्त्व देना आरम्भ किया। मानव के मनोवैज्ञानिक सत्य तथा चरित्र की विशिष्टता को प्रमुख मानते हुए अज्ञेय, जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, भगवतीचरण वर्मा आदि कहानीकारों ने कहानियाँ लिखा।

जैनेन्द्र कुमार ने मानव मन की उलझनों, समस्याओं, मानसिक दबावों तथा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का विश्लेषण खेल, पाजेब, जान्हवी, समाप्ति, नीलम देश की राजकन्या, जय संधि, मास्टर, एक रात आदि कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। मानव के अंतर्द्वंद्वों तथा उनके जीवन के रहस्यों से पर्दा हटाते हुए अज्ञेय ने अपने चिन्तनशील शैली में गैंग्रीन, पगोडा वृक्ष, पुरुष का भाग्य, रोज़, कोठरी की बात आदि के अतिरिक्त अज्ञेय ने अमरवल्लरी, शरणागत, विपथगा, परंपरा आदि ऐतिहासिक विषयों से सम्बन्धित कहानियां भी लिखा। मनोवैज्ञानिक

कहानीकारों में इलाचंद जोशी का नाम भी अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। मध्यवर्गीय समाज को लेकर पतिव्रता या पिचाशी, रोगी, चरणों की दासी, मेरी डायरी के दो नीरस पृष्ठ, परित्यक्ता, जारज, अनाश्रित, होली तथा धन का अभिशाप आदि कहानियां इलाचंद ने लिखी।

बोध प्रश्न

- 'पगोड़ा वृक्ष' कहानी के लेखक कौन हैं?
- 'होली' कहानी के लेखक कौन हैं?

10.3.2.3.3 स्वातंत्र्योत्तर कहानियाँ

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि स्तरों पर तीव्रगामी परिवर्तन हुए। स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी कहानियों में विविध समस्याओं को चित्रित किया गया है। निम्नवर्गीय संचेतना का उदय, उच्च वर्गीय जीवन में विसंगतियां, कुंठा, नगरीय जीवन में अकेलापन, बेरोजगारी, नौकरीपेशा नारी के जीवन की समस्याएं, राजनीतिक गिरावट, पारिवारिक टूटन आदि विषयों पर खूब कहानियां लिखी गयी। स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों में राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, महीपसिंह, श्रीकांत वर्मा, ज्ञानरंजन, सुरेश सिन्हा, हरिशंकर परसाई, लक्ष्मीनारायण लाल, गिरिराज किशोर, फणीश्वर नाथ रेणु, उषा प्रियंवदा, कमल जोशी, रघुवीर सहाय, हिमांशु जोशी, अमरकांत, मन्नू भंडारी, निर्मल वर्मा, मार्कंडेय, विजयमोहन सिंह, रवीन्द्र कालिया, इब्राहीम शरीफ प्रभृति का नाम उल्लेखनीय है ।

10.3.2.3.4 नयी कहानी

हिंदी कहानी विधा के क्षेत्र में नयी कहानी एक आन्दोलन के रूप में सामने आयी। नयी कहानी आन्दोलन ने आलोचकों में तर्क-वितर्क को जन्म दिया। नयी कहानी अपने स्वरूप, कथ्य एवं उद्देश्य के स्तर पर पर्याप्त वैविध्यपूर्ण है। पुराने मूल्यों, विश्वासों के स्थान पर नए मूल्यों की प्रतिस्थापना करते हुए नयी जीवन दृष्टि की व्याख्या नयी कहानियों में देखी जा सकती है। भाषा, बिम्ब, उपमान, प्रतिमान तथा शैली आदि प्रत्येक स्तर पर नयी कहानियों में नवीनता के दर्शन होते हैं। इन कहानियों में ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश के स्तर पर विषयों को लेकर कहानियां लिखी जा रही हैं। फणीश्वर नाथ रेणु की 'ठुमरी', 'लाल पान की बेगम', 'तीसरी कसम', 'रसप्रिया', शिवप्रसाद सिंह की 'नीच जात', 'अँधेरा हँसता है', 'मुरदा सराय', 'धरा', शैलेश मटियानी की 'प्रेतमुक्ति', 'माता', 'भस्मासुर', 'दो मूर्खों का एक सूर्य', शेखर जोशी की 'तर्पण', रामदरश मिश्र की 'एक आँख एक जिंदगी, लक्ष्मी नारायण लाल की 'माघ मेले का ठाकुर' तथा मार्कंडेय की 'हंसा जाई अकेला' आदि आंचलिक कहानियों ने नयी कहानी का नया स्वरूप गढ़ा ।

नयी कहानी आन्दोलन से जुड़े कहानीकार नगरीय जीवन के बनावटीपन, दिखावे की जिंदगी, परिवारिक सम्बन्धों का बिखराव, वैयक्तिक टूटन, कामकाजी नारी जीवन की समस्याएं, श्रमशील मानव के अधिकारों की सजगता, स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में कडुवाहट तथा

जीवन मूल्यों का विघटन आदि विषयों को लेकर कहानीकारों ने नयी कहानी का नए स्वरूप की रचना की। मोहन राकेश की 'वासना की छाया', 'काला रोजगार', 'मिस्टर भाटिया', 'मलवे का मालिक', निर्मल वर्मा की 'परिंदे', 'पराये शहर में', 'अंतर', 'लवर्स', मन्नू भंडारी की गीत का 'चुम्बन', 'मछलियाँ', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 'खून का रिश्ता', रमेश बख्शी की 'आया गीत गा रही थी', 'अलग-अलग कोण', रघुवीर सहाय की 'प्रेमिका', 'सेब', श्रीकांत वर्मा की 'शव यात्रा', 'दूसरे के पैर' आदि उल्लेखनीय नयी कहानियां हैं।

नयी कहानियो में छोटे कस्बों को भी पर्याप्त स्थान मिला। कमलेश्वर की 'मुर्दों की दुनिया', 'चार घर', धर्मवीर भारती की 'सावित्री न0 दो', 'धुआँ', 'कुलटा', 'गुलकी बन्नों', 'अगला अवतार', कृष्णा सोवती की 'यारों के यार', अमरकांत की डिप्टी कलेक्टरी, दोपहर का भोजन, जिंदगी और जोक, विष्णु प्रभाकर की 'धरती अब धूम रही है', मनहर चौहान की 'घर घुसरा', हृदयेश की 'डेकोरेशन पीस', हिमांशु जोशी की 'एक बूँद पानी' आदि उल्लेखनीय है।

नयी कहानी आन्दोलन में व्यंग्यात्मक ढोंग, भ्रष्टाचार, झूठी प्रतिष्ठा आदि पर भी कहानियां लिखी गयी। हरिशंकर परसाई की 'निठल्ले की डायरी', 'पोस्टर एकता', 'सड़क बन रही है', शरद जोशी की 'रोटी और घंटी का सम्बन्ध' आदि महत्वपूर्ण है। नयी कहानी आन्दोलन के बाद हिंदी कहानी में 'समांतर कहानी', 'सचेतन कहानी', 'अकहानी' आदि आन्दोलन जर्मन-फ़्रांस कहानी आंदोलनों के प्रभावस्वरूप हुआ। इन आंदोलनों के अग्रणी कहानीकार महीपसिंह, कमलेश्वर, रवीन्द्र कालिया, ज्ञानरंजन, गंगाप्रसाद विमल प्रभृति रहे हैं। इस प्रकार हिंदी कहानी समय-समय पर युगानुरूप परिवर्तित होती हुई विकास पथ पर सदैव अग्रसर रही।

बोध प्रश्न

- 'मुर्दों की दुनियां' के लेखक कौन हैं?
- छोटे कस्बों की कहानियां किस कहानी आन्दोलन में चित्रित हुई हैं?

10.4 पाठ सार

हिंदी कहानी का विकास बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ। हिंदी में कहानी का वर्तमान स्वरूप अंग्रेजी के 'शार्ट स्टोरी' के आधार पर विकसित हुई है। इसका प्रयोग बांग्ला के 'गल्प' विधा के अर्थ में हिंदी में हुआ। आरम्भ में हिंदी कहानी विधा के लिए 'सरस्वती' पत्रिका में 'आख्यायिका' पद का प्रयोग किया गया, जिसका 'इंदु', 'वैश्योपकारक', 'सुदर्शन' आदि पत्रिकाओं ने भी अनुसरण किया। 'मर्यादा' पत्रिका में बांग्ला के 'गल्प' पद को अपनाया गया। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल गद्यकाल के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि हिंदी गद्य साहित्य की विविध विधाओं का सर्जन आधुनिक काल से ही विधिवत आरम्भ हुआ। ब्रज भाषा में भक्तिकालीन कवियों की 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' तथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' को कुछ आलोचकों द्वारा हिंदी कहानी परंपरा का आरम्भ माना जाता है। हिंदी के आरंभिक

गद्यकारों की गद्य विधाओं को कहानी के तत्वों, विषयों तथा स्वरूप आदि के स्तर पर विश्लेषण करने पर पता चलता है।

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होते हुए भी एक नए समाज की परिकल्पना को भी स्वयं में समेटे रहता है। उन्नीसवीं सदी के बदलते समाज को प्रस्तुत करने में कहानी विधा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान सामाजिक परिवर्तनों की भाँति ही कहानी विधा के स्वरूप में भी आशातीत परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हिंदी कहानी का विकास बंगला के 'गल्प' तथा अंग्रेजी के 'शार्ट स्टोरी' के आधार पर हुआ। हिंदी की आरंभिक कहानियां अनुदित अधिक मिलती हैं, उस समय तक रूसी, फ़्रांसीसी, अंग्रेजी भाषा में कहानियों का पर्याप्त विकास हो चुका था। प्रेमचंद के द्वारा हिंदी कहानी कला को कल्पना के आकाश से उतार कर यथार्थ की धरती पर प्रतिष्ठापित किया गया, इसीलिए हिंदी कहानी के विकास को प्रेमचंद को केंद्र में रखकर तीन भागों में विभाजित किया गया। प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचंदोत्तर युग, प्रगतिशील, स्वातंत्र्योत्तर युग, मनोवैज्ञानिक, नयी कहानी, समांतर कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी आदि के रूप में हिंदी कहानी अपनी विकास यात्रा के विविध पड़ावों को पार करती रही। स्त्री कहानीकारों में सत्यवती मलिक, महादेवी वर्मा, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, तारा पाण्डेय, रामेश्वरी शर्मा, शकुंतला माथुर, शिवानी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, गीतांजलिश्री, नीलाक्षी सिंह, अलका सारावगी, मेहरून्निसा परवेज, मनीषा कुलश्रेष्ठ प्रभृति के नाम उल्लेखनीय हैं। समयानुसार विविध विमर्शों को समेटते हुए हिंदी कहानी कुंदन की भाँति चमकती हुई हिंदी साहित्य भंडार को परिपुष्ट कर रही है।

10.5 पाठ की उपलब्धियां

पाठ की निम्नलिखित उपलब्धियां हैं -

1. हिंदी कहानी के उद्भव की भलीभांति जानकारी प्राप्त हुई।
2. हिंदी कहानी के विकास क्रम की क्रमवार जानकारी प्राप्त हुई।
3. हिंदी कहानी की युगगत प्रवृत्तियों से अवगत हुए।
4. परिवर्तित परिवेशानुसार हिंदी कहानी के स्वरूप परिवर्तन एवं उपादेयता की जानकारी प्राप्त हुई।
5. वर्त्तमान युग में हिंदी कहानी आन्दोलन पर प्रकाश डाला गया है।

10.6 शब्द सम्पदा

1. अंतर्द्वंद्व = आतंरिक संघर्ष
2. अन्तर्हित = अंदर समाया हुआ
3. अभूतपूर्व = जो पहले न हुआ हो, अनोखा

4. अवगत = जाना हुआ

5. आख्यानक = कहानी, सूचित करना

6. कीर्तिमान = यशस्वी, विख्यात

7. कुंदन = सोने सा शुद्ध, निर्मल

8. कुठाराघात = घातक चोट

9. दृष्टव्य = दिखाई देने योग्य

10. निमग्न = लीन, मग्न

11. परिगणित = जिसका उल्लेख हो चुका हो

12. परिदृश्य = चारों ओर दिखने वाला दृश्य

13. परिनिष्ठित = पूर्णतया, कुशल

14. प्रतिबिम्ब = परछाई, प्रतिमूर्ति

15. प्राचुर्य = अधिकता

16. बदहाली = दुर्दशा

17. मानदंड = पैमाना

18. विधिवत = नियम के अनुरूप

19. समग्र = सब, पूरा

20. समृध्दि = अत्यधिक संपन्न

21. सुष्ठु = अत्यंत, अच्छी तरह

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हिंदी कहानी विधा के उद्भव पर प्रकाश डालिए।

2. हिंदी कहानी की विकास यात्रा को विवेचित कीजिए।

3. नयी कहानी आन्दोलन को विश्लेषित कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. कहानी शब्द के उद्भव पर प्रकाश डालिए।

2. प्रेमचंद युगीन कहानियों के प्रमुख विषय बताइए।

3. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों एवं कहानीकारों के नामोल्लेख कीजिए।

4. हिंदी के मनोवैज्ञानिक कहानियों की विशेषता बताइए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. 'टोकरी भर मिट्टी' कहानी का प्रकाशन वर्ष क्या है? ( )

(अ) 1900 (आ) 1903 (इ) 1911

2. 'इंदुमती' कहानी के लेखक कौन हैं? ( )

(अ) किशोरीलाल गोस्वामी (आ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (इ) भारतेंदु हरिश्चंद्र

3. कहानी का स्वर्णिम काल किसे माना जाता है? ( )

(अ) स्वातंत्र्योत्तर युग (आ) प्रेमचन्द पूर्व युग (इ) प्रेमचन्द युग

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. आरम्भिक कहानियों की परंपरा अधिकांशतः........................ पर आधारित थी।

2. 'ताई', 'रक्षाबंधन', 'माता का हृदय' कहानियों के लेखक का नाम ....है।

3. प्रेमचंद की समस्त कहानियां .... के आठ भागों में प्रकाशित हुई।

4. 'न्यायमंत्री' कहानी के लेखक ....हैं ।

III. सुमेल कीजिए

1. इंद्रजाल (क) हरिशंकर परसाई

2. पोस्टर एकता (ख) जयशंकर प्रसाद

3. एक बूँद पानी   (ग) प्रेमचंद

4. रानी सारंधा   (घ) हिमांशु जोशी

10.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी कहानी और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी

2. संकल्प (प्रेमचंद विशेषांक), डॉ बच्चन सिंह, जनवरी-मार्च 2006, हिंदी अकादमी , हैदराबाद

3. साहित्य सहचर, आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

4. हिंदी साहित्य का उद्भव तथा विकास, आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

5. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास, बाबू गुलाबराय

इकाई11 : निबंध : परिभाषा ,स्वरूप और तत्व

रूपरेखा

11. 1प्रस्तावना
11.2उद्देश्य
11.3 मूलपाठ
)क (निबंध : परिभाषा
)ख (निबंध : स्वरूप
)ग (निबंध के तत्व
)घ (निबंध की विशेषता
11.4पाठ -सार
11.5पाठ की उपलब्धियाँ
11.6शब्द संपदा
11.7परीक्षार्थ प्रश्न
11.8पठनीय पुस्तकें

11.1प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जान चुके हैं कि हिंदी साहित्य को दो विधाओं में वर्गीकृत किया गया है, गद्य एवं पद्य। हिंदी साहित्य का भंडार बहुत समृद्ध है। गद्य तथा पद्य की लगभग सभी विधाओं का प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन हुआ है।

आधुनिककाल में काव्य के साथ- साथ गद्य विधा का भी खूब विकास हुआ। यह आधुनिक युग की उपज है। गद्य साहित्य में अनेक रचनात्मक विधाओं का समावेश है जैसे कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, डायरी, जीवनी, रिपोर्ताज, यात्रा-वृतांत, आत्मकथा ,रेखाचित, संस्मरण तथा निबंध। निबंध साहित्य की नई विधा है। हिंदी में निबंध का आरंभ वीं शताब्दी के 19 उतरार्द्ध में माना जाता है। निबंध गद्य लेखन की विशेष विधा है जो किसी विषय पर विचारपूर्वक क्रमबद्ध रूप से लिखी गई हो। निबंध में किसी विषय विशेष का वर्णन किया जाता है। निबंध विधा के विकास के लिए विकसित तथा सुनिश्चित गद्य परंपरा का होना आवश्यक है। भारतेंदुकाल से ही एक नई साहित्यिक विधा के रूप में हिंदी में‘ निबंध ’विधा का सूत्रपात हुआ।

11.2उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप‘ निबंध ’के विधागत स्वरूप का अध्ययन करेंगे। इस अध्ययन से आप निम्नलिखित बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे -

- निबंध शब्द की उत्पत्ति तथा उसके स्वरूप के बारे में जानेंगे।
- निबंध विधा की विवेचना के बारे में समझेंगे।

- निबंध सम्बंधित परिभाषाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- निबंधों के तत्वों को जानेंगे।
- निबंध की विशेषताओं के बारे में प्रकाश डालेंगे।
- निबंध की शैली को समझ सकेंगे।

11.3मूल पाठ : निबंध : परिभाषा ,स्वरूप और तत्व

)क (निबंध: परिभाषा

साहित्य अर्थात सबका हित। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। चूँकि भावों की अभिव्यक्ति के लिए तथा व्यक्ति से समष्टि का साधन बनने के लिए साहित्य की विभिन्न विधाओं की आवश्यकता होती है अर्थात आकर्षक शैली में सरस भावों की अभिव्यक्ति ही साहित्य कहलाता है। साहित्य का उद्देश्य हमारी अनुभूतियों की तीव्रता को बढ़ाता है। साहित्य का मुख्य लक्ष्य है समाज का मार्गदर्शन करना होता है। साहित्य में अनेक विधाओं का समावेश होता है। उनमें से निबंध का भी प्रमुख स्थान है। संस्कृत में निबंध का समानार्थी शब्द 'प्रबंध' है। प्रबंध के अतिरिक्त लेख, संदर्भ, रचना और प्रस्ताव आदि शब्द भी निबंध के पर्याय के रूप में प्रचलित हैं। निबंध में लेखक को अपने विचार तथा विषय को अभिव्यक्त करने में स्वतंत्रता रहती है।

हिंदी शब्द सागर के अनुसार निबंध वह व्याख्या है ,जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो। निबंध शब्द की मूल उत्त्पति लेटिन भाषा के) 'इग्जागियम' Exagium (से हुई है और इसका भाव अंग्रेजी के वेइंग के निकट माना जाता है।

इसी प्रकार निबंध शब्द अंग्रेजी भाषा के' कम्पोजीशन या ऐस्से 'का समानार्थी है। जिसका अर्थ है' प्रयत्न'। फ्रेंच भाषा में इसका पर्यायवाची' ऐसाई 'है। पाश्चात्य साहित्य के अनुरूप हिंदी में भी निबंध लेखन का आरंभ गद्य भाषा तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ। प्रथम निबंधकार मोंतेन के अनुसार निबंध में निबंधकार के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होनी चाहिए - 'अपने निबंधों में मैं स्वयं को चित्रित करता हूँ और अपनी पुस्तकों में खुद ही विषय हूँ।'

इसी प्रकार भारतीय विद्वानों ने भी निबंध को परिभाषित किया है -

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध के बारे में कहा है कि" यदि पद्य कवियों की कसौटी है , तो निबंध गद्य की कसौटी है। "भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता है। इस प्रकार हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान तथा आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गद्य साहित्य में निबंध को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। निबंध गद्य की सीमित रचना है। इसमें विषय के विवेचन की स्पष्टता होती है तथा सजीवता भी आवश्यक होती है। निबंध की इन विशेषताओं के कारण ही

बाबू गुलाबराय ने निबंध की परिभाषा में निबंध के सभी लक्षणों तथा तत्वों का समावेश किया है। निबंध" उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर

किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन कर एक विशेष निजीपन, स्वछंदता, सौष्ठव और सजीवता के साथ ही आवश्यक संगति और सुसंबद्धता के साथ किया गया हो। ”

शिवदास सिंह चौहन के अनुसार‘ निबंध गद्य का अत्यंत शक्तिशाली रूप-विधान है।’

जयनाथ नलिन के अनुसार‘ निबंध स्वाधीन चिंतन और निश्छल अनुभूतियों का सरस, सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन है। ’

अंग्रेजी निबंध के जनक बेकन निबंध को विकीर्ण चिंतन कहते हैं‘। उनके अनुसार निबंध “ विचारों का वह संक्षिप्त विवरण है जिसमें बुद्धि तत्व की प्रधानता होती है।”

पंडित श्यामसुंदर दास ने निबंध के बारे में कहा है,‘ निबंध वह लेख है जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक और पांडित्यपूर्ण ढंग से विवेचन किया गया हो।’

डॉ“ जानसन के अनुसार .निबंध मस्तिष्क का स्वच्छन्दसूक्ष्म और एक मुक्तक प्रयास है ,। ”

उपरोक्त विवेचन से कह सकते हैं कि निबंध गद्य की वह लघु रचना है ,जिससे लेखक अपने व्यक्तिगत भावों, विचारों एवं अनुभूतियों को निष्पक्ष रूप से सरल शैली में तथा स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करता है। निबंध एक सुव्यवस्थित और सयंत गद्य रचना है। निबंधकार एक साथ दार्शनिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और साहित्यकार की सम्मिलित प्रतिभा से युक्त दृष्टि जीवन और जगत पर डालता है।

बोध प्रश्न

- निबंध शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
- निबंध को अंग्रेजी में क्या कहते हैं तथा इसकी उत्पति किस भाषा से हुई है ?
- साहित्य का मुख्य लक्ष्य क्या है?
- आचार्य शुक्ल   ने निबंध के बारे में क्या कहा है ?

)ख (निबंध : स्वरूप

निबंध का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। यह गद्य की विशेष विधा है जो किसी विषय पर विचारपूर्वक एवं क्रमबद्ध रूप से लिखी गई हो। संस्कृत में ’निबंध‘ शब्द का अर्थ होता है ’बाँधना‘ अर्थात भावाभिव्यक्ति हेतु किसी भी विचारों का संघठित रूप निबंध कहलाता है। निबंध को गद्य की कसौटी कहा गया है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों से ही सबसे अधिक संभव होता है।

निबंध कई प्रकार के हो सकते हैं - विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक, व्यंग्य एवं ललित।

निबंधकार कलात्मक प्रयास के स्थान पर अपनी स्वयं की मौलिक सोच को विस्तार देता है अतः निबंध एक ऐसी कलाकृति बन जाता है जिसके नियम लेखक द्वारा ही अस्वीकृत होते हैं।

इसी प्रकार सहज ,सरल एवं आडम्बरहीन आत्माभिव्यक्ति के लिए एक परिपक्क और विचारशील गंभीर व्यक्तित्व की अपेक्षा होती है। यदि उसके कृतित्व में परिपक्कता का अभाव सा दिखता है, परंतु पाठक के साथ लेखक की निकटता और आत्मीयता साहित्य रूप की दृष्टि से हिंदी में निबंध विधा आधुनिक युग की देन है। निबंध का क्षेत्र वैविध्यपूर्ण है, विषय और शैली की दृष्टि दोनों से।

बोध प्रश्न

- निबंध कैसी विधा है ?
- निबंधकार को निबंध लेखन के समय किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?
- निबंध के कितने प्रकार होते हैं?

)ग(निबंध के मूल तत्व

किसी भी विधा को समझने के लिए उसके तत्वों को समझना आवश्यक होता है जिससे हम उस विधा को अन्य विधाओं से अलग कर सकते हैं। मुख्य रूप से निबंध के प्रमुख तत्व - लेखक का व्यक्तित्वहै वैचारिक और भावात्मक आधार तथा भाषाशैली होती ,। निबंधकार का व्यक्तित्व उसके लेखन में स्पष्ट झलकता है, जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्लआचार्य हजारी प्रसाद , द्वेदी के निबंधों में इनके व्यक्तित्व को साफ देखा जा सकता है।

वैचारिक और भावात्मक तत्वों के आधार पर देखा जाए तो इनमें लेखक अपने विचार व्यक्त करता है जो इसे विचारप्रधान या भावप्रधान बनाते हैं।

साहित्य में भाषा शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। निबंध की भाषा विषय के अनुरूप होनी चाहिए। वाक्य रचना की दृष्टि से निबंध की दो प्रमुख शैलियाँ हैं - व्यास शैली तथा समास शैली।

व्यास शैली में रचनाकार विस्तारपूर्वक अपनी बात समझाता है। इसमें लंबे वाक्य होते हैं। निबंधकार इसमें उदाहरणों द्वारा विषय को स्पष्ट करता है। विषय को विस्तारपूर्वक समझना इस शैली की प्रमुख विशेषता है।

समास शैली के अंतर्गत लेखक छोटे छोटे -वाक्यों में अपने विचारों को स्पष्ट करता है। इसे समझने के लिए पाठक को बुद्धि पर जोर डालना पड़ता है। इस शैली में लिखे निबंधों को समझने के लिए व्याख्या की आवश्यकता होती है।

इसके अतिरिक्त निबंध के तत्व उस विधा के मूल उपकरण होते हैं। जिसमें उस विधा की रचना होती है ।विषय का चयन सरलता, रोचकता, सुबोधता तथा प्रसाधन क्षमता को निबंध का प्रमुख तत्व स्वीकार किया गया है। विषय का चयन तथा मौलिक ढंग से उसका प्रस्तुतीकरण, आकार-प्रकार की मर्यादा का निर्धारण आदि में निबंधकार की कार्यकुशलता मानी जाती है। तत्वों से ही विधा विशेष की रचना होती है।

अनुभूति और अभिव्यक्ति वे तत्व हैं जिससे लेखन विषय या घटना को अनुभूत करके किसी न किसी माध्यम से अभिव्यक्त करता है। अनुभूति का सम्बंध हृदय से होता है। जीवन में

अनेक दृश्य होते हैं जो कोई न कोई अनुभव दे जाते हैं। रचनाकार इस अनुभव को अपनी कल्पना द्वारा रचनात्मक रूप देता है तो यह व्यापक अनुभूति बन जाता है। यही भाव निबंध का रूप ले लेते हैं। अनुभूति ही रचनाकार को सम्वेदनशील बनाती है। जो जितना सम्वेदनशील होता है, वह उतना ही उच्च कोटि का निबन्धकार होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि साहित्य के निर्धारित तत्व हैं अनुभूति, विचार, कल्पना एवं शैली। इन तत्वों के समावेश से ही निबंध को निर्मित किया जा सकता है।

निबंध के तत्वों का क्रम

विचार

वैचारिक निबंध विश्लेषणात्मक होते हैं। विचारात्मकता निबंध का अनिवार्य अंग है। इसमें विषय की प्रधानता होती है अत :विचार तत्व निबंध में प्रमुख स्थान रखता है। जीवन की किसी भी घटना को देखकर किसी न किसी तरह की प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। इस प्रतिक्रिया के दौरान अनेक विचार उठते हैं तथा इन्हीं के धरातल पर निबंध का सर्जन होता है। विचारों और भावों के समावेश में विचार ही प्रधान होते हैं। विचारशून्य निबंध तो शब्दों का जाल मात्र ही होता है। अत :निबंध का प्रथम तत्व 'विचार' ही है।

निबंधकार अपने मौलिक विचारों को शैली विशेष में ढालता है। स्वतंत्र विचारों को एक रूप देने के लिए उसे शैलीबद्ध करता है ,परिणामस्वरूप विचार निबंध का रूप ले लेता है। अत :स्पष्ट है कि निबंध का दूसरा तत्व शैली है।

शैली

निबंध की रचना मात्र अनुभूति एवं विचारों से नहीं होती। भाव एवं विचार कितने भी पुष्ट हों पर उत्कृष्ट शैली के अभाव में निबंध रचना असंभव है। निबंध का आरंभ कैसे हो, बीच में क्या हो रहा ,वर्णन किस प्रकार किया जाए? ऐसे किसी निर्देश और नियम को मानने के लिए निबंधकार बाध्य नहीं होता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि निबंध एक रचना है और निबंधकार एक व्यक्ति साधारण व्यक्ति। निबंधकार अपनी प्रेरणा और विषय वस्तु की संभावनाओं के अनुसार अपने व्यक्तित्व और रचना का समर्थन करता है इसी कारण निबंध में शैली का विशेष महत्व है। निबंधकार का व्यक्तित्व,उसकी प्रवृतियाँ ,रुचियाँ,आस्थाएँ शैली द्वारा प्रकट होती है। वर्तमान में अनेक शैलियाँ देखने को मिलती हैं। जैसे समासशैली, व्यास शैली, प्रवाह शैली तथा व्यंग्य-विनोद शैली आदि ।

शैली लेखक के व्यक्तित्व का प्रबल पक्ष है। जो उसकी अभिव्यक्ति को जीवंत एवं सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध होती है। निबंध की शैली से ही पता चलता है कि निबंधकार कौन है क्योंकि प्रत्येक निबंधकार की निजी शैली होती है। निबंध को पढ़ते ही पता चल जाता है कि यह निबंध विद्यानिवास मिश्र का है या फिर आचार्य हजारी प्रसाद द्वेदी का या फिर हरिशंकर परसाई का। शैली की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए डॉ .गंगाप्रसाद गुप्त ने लिखा है शैली"

निबंधों के लिए प्राण है। यदि शैली पर लेखक का पूर्ण अधिकार है तो नि:संदेह वह उच्चकोटि का निबंधकार होगा। "

अत :स्पष्ट है कि शैली का सच्चा एवं उत्कृष्ट प्रयोग निबंध रचना में ही दृष्टिगोचर होता है।

कल्पना

कल्पना का स्थान निबंध लेखन में तीसरा है। जब विचारों को शैलीबद्ध किया जाता है , तो कल्पना का भी योगदान रहता है। कल्पना तत्व शैली के सहायक तत्व के रूप में काम करता   है। कल्पना से अप्रस्तुत की योजना होती है। भाषा की रचनात्मकता का श्रेय कल्पना तत्व को ही जाता है, जो कि प्रस्तुति को बिम्ब, ध्वनि, प्रतीक, शब्द सौन्दर्य तथा अप्रस्तुतों की योजना द्वारा रचती है ।

अनुभूति

निबंधकार विश्लेषण करता है। तर्क की कसौटी पर विषय को कसता है अत :भावना का स्थान प्रमुख न रहकर गौण रह जाता है। किंतु यह भी दृष्टव्य है कि साहित्य भावना से अछूता नहीं रह सकता। अत :विचार, शैली और कल्पना के उपरांत निबंध में अनुभूति का महत्वपूर्ण स्थान आता है। इसका स्थान अंतिम होता है। अत :अनुभूति निबंध में विशेष महत्व रखती है। इसके अभाव में निबंध लेख बनकर रह जाएगा।

अनुभूति का सम्बंध हृदय से है। इस अनुभव को लेखक कल्पना द्वारा रचनात्मक रूप देता है। तो व्यापक होकर अनुभूति बन जाती है। अनुभूति हमें संवेदनशील बनाती है और यह भी श्रेष्ठ निबंधकार का उदाहरण है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपरोक्त तत्वों की सहायता से निबंध की रचना संभव है। सर्वप्रथम विचार ही निबंधकार को निबंध के सर्जन हेतु प्रेरित करते हैं। इन विचारों को शैली का रूप दिया जाता है जिसके माध्यम से ही निबंधकार विचारों को प्रस्तुत कर पाता है। इस प्रस्तुतिकरण में भाषा का विशेष महत्व होता है। भाषा की रचनाधर्मिता के लिए ही कल्पना का आश्रय लिया जाता है। तर्क-वितर्क के कारण अनुभूति का स्थान अंतिम होते हुए भी मुख्य है।

बोध प्रश्न

- निबंध के मूल तत्व कौन-कौन से होते हैं?
- निबंध रचना का कौनसा अंग अनिवार्य है?
- निबंध रचना में शैली के स्थान को रेखांकित कीजिए।
- व्यास शैली और समास शैली में अंतर लिखिए।

)घ (निबंध की विशेषताएँ

निबंध साहित्य की सृजनात्मक विधा है। ललित अत्रि जी के अनुसार - “नए युग में जिन नवीन ढंग के निबंधों का प्रचलन हुआ है वे व्यक्ति की स्वाधीन चिंता की उपज है। अर्थात निबंध में निबंधकार की स्वच्छंदता का विशेष महत्व रहता है। नए युग में जिन नवीन ढंग से निबंधों का प्रचलन हुआ है वह व्यक्ति की स्वाधीन चिंता की उपज है। इस प्रकार निबंध में निबंधकार की स्वच्छंदता का विशेष महत्व है।

आचार्य शुक्ल लिखते हैं निबंध लेखक अपने मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छंद गति से इधरउधर फूटी हुई सूत्र शाखाओं पर बिचरता चलता है। यही उसकी अर्थ संबंधी विषय - व्यक्तिगत विशेषता है। एक ही बात को लेकर किसी का मन किसी संबंध सूत्र पर दौड़ता है किसी का किसी पर इसी का नाम है एक ही बात को भिन्न दृष्टि से देखना। व्यक्तिगत विशेषता का मूल आधार यही है। ऐसा कहा जाता है कि निबंध एक ऐसी कलाकृति है जिसके नियम लेखक द्वारा उचित होते हैं। निबंध में सहज सरल आडंबर ही ढंग से व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है।

“हिंदी साहित्यकोश के अनुसार लेखक बिना किसी संकोच के अपने पाठकों को अपने जीवन अनुभव सुनाता है और उसे आत्मीयता के साथ उनमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है। इसी आत्मीयता के फलस्वरूप निबंध लेखक पाठकों को अपने पांडित्य से अभिभूत नहीं करना चाहता।” निबंध से पाठक को उसके परिवेश की सटीक एवं स्पष्ट जानकारी मिलती है।

इस प्रकार निबंध के दो विशेष गुण देखे जा सकते हैं - व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, सहभागिता का आत्मीय या अनौपचारिक सत्र।

अत :उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि -

- निबंध विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। निबंध वह लेख है जिसमें किसी गहन विषय पर विचार किया जाता है।
- निबंध आधुनिक युग की महत्वपूर्ण एवं सफल विधा है।
- निबंध में निबंध का किसी भी विषय को अपने निजी चिंतन एवं अनुभूति से संपन्न का अभिव्यक्त करता है।
- निबंध में निबंधकार विषय को क्रमबद्ध, सुंदर, सुगठित एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत करता है।

हिंदी के प्रमुख निबंधकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र,बालमुकुंद गुप्त, हजारी प्रसाद द्वेदी, नंददुलारे वाजपेयी ,रामचंद्र शुक्ल ,सरदार पूर्ण सिंह ,विद्यानिवास मिश्रत, कुबेरनाथ राय, महादेवी वर्मा आदि आते हैं। तुम चंदन हम पानी, नया दौर, आँगन का पंछी, बंजारा मन आदि विद्यानिवास मिश्र के प्रमुख निबंध हैं। चिंतामणी शुक्ल जी का निबंध है। हजारी प्रसाद द्वेदी जी के निबंधों में अशोक के फूल, आपने मेरी रचना पढ़ीदेवदारु एवं , साहित्यकार का दायित्व आदि आते हैं।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि निबंध गद्य की नई तथा प्रमुख विधा है ।

बोध प्रश्न

- निबंध के गुणों पर प्रकाश डालिए।
- निबंध के बारे में आप क्या जानते हैं?
- निबंध की विशेषता के बारे में आचार्य शुक्ल ने क्या कहा है?

11 4.पाठ का सार

निबंध आधुनिक गद्य साहित्य की प्रचलित एवं लोकप्रिय विधा है।वीं शताब्दी के 19 उत्तर काल मेंगद्य के विकास के साथ ही‘ निबंधों ’का भी विकास हुआ। इसे अंग्रेजी में‘ एस्से ’ कहा जाता है। गद्य साहित्य में निबंध की श्रेष्ठता को रेखांकित करते हुए शुक्ल जी ने निबंध को ‘गद्य की कसौटी ’कहा गया है। निबंध की उत्पति भारतेंदुकाल में हुई। निबंध में गहन विषय पर विचारपूर्वक विवेचन किया जाता है। निबंध गद्य की लघु रचना है, जिसमें विचारों और भावों को प्रभावशली ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है। निबंध में निबंधकार किसी विषय को कारण क्रमबद्ध, सुंदर, सुगठित एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत करता है।

निबंधकार निबंध में किसी विषय को क्रमबद्ध, सुंदर, सुगठित एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत करता है।

निबंध के कई प्रकार होते हैं। विचारात्मक, भावात्मक, व्यंग्य एवं ललित। निबंध रचना में अनुभूति, विचार, कल्पना एवं शैली का महत्व होता है । निबंध में विचारों और भावों का समावेश प्रमुख रूप से होता है।

11 5.पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए -

1. निबंध गद्य साहित्य है।
2. ‘निबंध ’शब्द अंग्रेजी भाषा के कम्पोजीशन‘ या ऐस्से ’का समानार्थी है।
3. निबंध गद्य की सीमित रचना है।
4. निबंध में भाषा की रचनात्मकता का श्रेय कल्पना तत्व को ही जाता है।
5. शैली निबंधों के लिए प्राण है।
6. निबंध एक सुव्यवस्थित और सयंत गद्य रचना है।
7. निबंध में निबंधकार की स्वछंदता का विशेष महत्व रहता है।
8. प्रत्येक निबंधकार की निजी शैली होती है।
9. अनुभव को लेखक कल्पना द्वारा रचनात्मक रूप देता है।
10. निबंधकार स्वतंत्र विचार रख सकता है किंतु स्वछंदता नहीं कर नहीं सकता।
11. शैली निबंधों का प्राण होती है।

11 6.शब्द संपदा

1. अनुभूति = अनुभव/ एहसास
2. उत्त्पति = जन्म
3. उल्लेखनीय = उल्लेख करने योग्य

4. कसौटी = परख/जाँच

5. दार्शनिक =दर्शनशास्त्र से सम्बंधित

6. निश्छल =निष्कपट

7. परिपक्व =पका हुआ /पूर्ण

8. पारदर्शी = साफ़

9. यथार्थ = सत्य/कल्पना से परे

10. लक्ष्य = उद्देश्य

11. समष्टि = सामूहिक

12. सूत्रपात =कार्य का आरंभ

11 7.परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग5 00 शब्दों में दीजिए।

1. निबंध के बारे में आप क्या समझते हैं ?अपने शब्दों में लिखिए।

2. निबंध के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3. निबंध के तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ लघु श्रेणी के प्रश्न (
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 2 00शब्दों में दीजिए।

.1 निबंध को अंग्रेजी में क्या कहते हैं तथा यह किस भाषा का शब्द है ?

.2 किन्हीं दो भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई निबंध की परिभाषा लिखिए।

.3निबंध की कोई दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. निबंध किस काल की रचना है? ( )

(अ) मध्यकाल) आ (आधुनिककाल) इ (रीतिकाल

2. निबंध को गद्य की कसौटी कहा है -　　　　　　　　　　　　(　　　)

(अ) रामचंद्र शुक्ल　　　　)आ (हजारी प्रसाद द्वेदी　　　)इ (श्यामसुंदर दास

3. निबंध गद्य का शक्तिशाली रूप विधान है। यह किसने कहा ?　(　　　)

(अ) शिवदास सिंह चौहान　　　　)आ (गुलाबराय　　　) इ (श्यामसुंदरदास

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. निबंध विधा का जन्म .... काल में हुआ ।

2. संस्कृत में निबंध शब्द का अर्थ .... है ।

3. 'इग्जागियम '............. भाषा का शब्द है ।

4. निबंध में मैं स्वयं को चित्रित करता हूँ .... ने कहा ।

5. डॉ .गंगाप्रसाद गुप्त ने शैली को निबंधों का .... कहा है ।

6. निबंध की उत्पति .... में हुई ।

III. सुमेल कीजिए

1. निबंध का तत्व	)अ (निबंध
2. आलोचक	)आ (गद्य की कसौटी
3. कम्पोजीशन	)इ (शैली
4. निबंध	)ई (आचार्य शुक्ल

17.8पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ .नगेंद्र
2. गद्य के नए आयाम, कृष्ण गोपाल रस्तोगी
3. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां, डॉ .जयकिशन प्रसाद
4. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
5. हिंदी निबंधकार, जयनाथ नलिन
6. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, डॉ गणपति चंद्र गुप्त .